



# ज्ञान बिन्दु जी. एस. एकेडमी

For :

संघ लोक  
सेवा आयोग

राज्य लोक  
सेवा आयोग

कर्मचारी  
चयन आयोग

रेलवे  
भर्ती बोर्ड

जी.एस.  
आधारित सभी  
परीक्षाएँ हेतु

## MODERN HISTORY



**Director :**

**Raushan Anand**

**Address :**

Near Sai Mandir, Kishan Cold Storage, Musallahpur Hatt, Patna-6

**NEW CENTRE :** Rampur Nahar Road, Near Sai Chowk, Musallahpur, Patna-6

**Mob. : 8540063639, 9341492082, 9304006502**

GYAN BINDU G.S. ACADEMY  
GYAN BINDU G.S. ACADEMY, PATNA

telegram

## (विषय-सूची)

### विषय :

1. भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन
2. 18वीं शताब्दी में स्थापित नवीन स्वायत्त राज्य
3. बंगाल के गर्वनर, गर्वनर जनरल तथा भारत के गर्वनर जनरल और वायसराय
4. ब्रिटिशों की आर्थिक नीतियाँ
5. 1857 ई. का विद्रोह
6. अन्य प्रमुख विद्रोह
7. 19वीं - 20वीं सदी का सामाजिक, धार्मिक सुधार आंदोलन
8. भारत में प्रेस और शिक्षा का विकास
9. कांग्रेस से पूर्व स्थापित संगठन
10. कांग्रेस
11. राष्ट्रीय आंदोलन
12. भारत में क्रांतिकारी आंदोलन
13. सुभाष चन्द्रबोस और आजाद हिंद फौज
14. स्वतंत्रता के बाद का भारत





# ज्ञान विन्दु जी. एस. एकेझमी

**For :**

**संघ लोक  
सेवा आयोग**

**राज्य लोक  
सेवा आयोग**

**कर्मचारी  
चयन आयोग**

**रेलवे  
भर्ती बोर्ड**

**जी.एस.  
आधारित सभी  
परीक्षा केंद्र**

**Address : Kishan Cold Storage, Near Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna-6**

**Mob. : 8540063639, 9304006502**

## 1. भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन

- मुगलवंश की स्थापना से पूर्व एकमात्र यूरोपीय कंपनी भारत आई है उसका नाम पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कंपनी है। इस कंपनी का भारत आगमन 1498 ई. में हो गया था।
- भारत आने वाली प्रथम यूरोपीय कंपनी पुर्तगाली है तथा सबसे अंतिम में भारत से जाने वाली यूरोपीय कंपनी पुर्तगाली है। अर्थात् हम यह कह सकते हैं कि भारत में सबसे अधिक वर्षों तक रहने वाली यूरोपीय कंपनी पुर्तगाली है।
- 15वीं शताब्दी में यूरोप महादेश के दो देश स्पेन और पुर्तगाली ने भौगोलिक खोज में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाया।
- पुर्तगाली यात्री बार्थोलोम्यो डियाज 1487 ई. में Cafe of Good Hope अर्थात् आशा अंतरीप द्वीप की खोज की।
- स्पेनिश यात्री कोलम्बस 1492 ई. में अमेरिका की खोज किया तथा उसे नई दुनिया कहकर पुकारा और वहाँ के लोगों को रेड इंडियन कहा।
- पुर्तगाली यात्री वास्को डी गामा 1498 ई. में गुजराती पथ प्रदर्शक अब्दुल मुनीद की सहायता से भारत के लिए समुद्री मार्ग को खोजने में सफलता प्राप्त की। अर्थात् हम ये कह सकते हैं कि भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज वास्को-डी-गामा ने किया।
- वास्को डी गामा सर्वप्रथम केरल के मालाबार तट पर अर्थात् भारत के पश्चिमी तट पर पहुँचा।
- वास्को डी गामा का स्वागत केरल के राजा जैमोरिन ने किया। इसका विरोध अरबी मूल के व्यापारियों ने किया।
- भारत आने वाला द्वितीय पुर्तगाली यात्री अल्ब्रेज कैब्राल था। जो 1500 ई. में भारत आया था। इन्होंने ही ब्राजील की खोज की है।
- वास्को डी गामा 1498 ई. में भारत से लौटने के क्रम में कुछ मसाला भारत से खरीदा और वह उस मसाला को लेकर पुर्तगाल वापस गया। वास्को डी गामा पुर्तगाली बाजार में जब मसाला को बेचा तो उसे 60 गुणा अधिक मुनाफा प्राप्त हुआ जिस कारण पुर्तगालियों ने यह लक्ष्य बनाया कि भारत के साथ मसालों का व्यापार किया जाए।
- पुर्तगाली व्यापार पर नियंत्रण स्थापित करने को लेकर 1505 ई. में पुर्तगाली गर्वनर या वायसराय का पद लाया गया।
- प्रथम पुर्तगाली वायसराय 1505 ई. में फ्रांसिस्को-डी-अलमोड़ा बना जो 1509 ई. तक इस पद पर रहा।
- अलमोड़ा ने समुद्र पर कब्जा करने को लेकर एक नीति चलाया जिसे नीला जल की नीति कहा जाता है। इस नीति के तहत पुर्तगालियों ने समुद्र पर कब्जा कर लिया जिस कारण पुर्तगालियों को समुद्र का स्वामी कहा जाता है।
- नीला जल की नीति का अंत अल्बुकर्क ने कर दिया।

- पुर्तगालियों का मुगलों के साथ संबंध स्थापित अकबर के समय स्थापित हुआ।
- भारत में कार्टेज व्यवस्था की शुरूआत पुर्तगाली ने किया था।
- मुगल बादशाह अकबर ने पुर्तगालियों से अरब सागर में व्यापार करने को लेकर कार्टेज खरीदा था।
- चोल का युद्ध 1508 ई. में हुआ है।
- दूसरा पुर्तगाली गर्वनर बनकर 1509 ई. में अल्फांसो डी अल्बुकर्क आया जो 1515 ई. तक इस पद पर रहा।
- अल्बुकर्क को भारत में पुर्तगाली साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- अल्बुकर्क ने 1510 ई. में बीजापुर के सुलतान यूसुफ आदिलशाह से गोवा छीन लिया।
- अल्बुकर्क ने पुर्तगाली पुरुषों को प्रोत्साहित किया कि वे भारतीय स्त्री से विवाह करें।
- अल्बुकर्क को राजा राममोहन राय की पूर्वगामी कहा जाता है क्योंकि अल्बुकर्क ने पुर्तगालियों द्वारा शासित भारतीय क्षेत्रों में सती प्रथा का अंत कर दिया गया था।
- पुर्तगालियों ने गोवा, दमन व द्वीप, दादर एवं नागर हेवली का उपनिवेशीकरण किया।
- पुर्तगालियों ने मध्य अमेरिका से आलू, तंबाकू, मक्का भारत लाया अर्थात् हम ये कह सकते हैं कि पुर्तगालियों के भारत आगमन होने से ही भारत में उपरोक्त वस्तुओं का खेती होना प्रारंभ हुआ।
- पुर्तगालियों ने भारत में प्रीटिंग प्रेस और जहाज निर्माण कला का विकास किया।
- वास्को डी गामा तीन बार भारत आया।
  - 1. 1498 ई.              2. 1502 ई.              3. 1524 ई.
- पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर में, फारस की खाड़ी में हॉरमुज में अपनी अडडा बनाया।
- पुर्तगालियों को 1632 ई. में हुग्रली से खदेड़ने का श्रेय मुगल बादशाह शाहजहाँ को जाता है।
- आजादी के बाद भी पुर्तगाली इस्ट इंडिया कंपनी भारत में बनी रही।
- भारत की सेना ने 1961 ई. में ऑपरेशन विजय के तहत गोवा को पुर्तगालियों से मुक्त करवाया।
- 1961 के समय गोवा के पुर्तगाली गर्वनर एंटेनियो सिल्वा हुआ करते थे।
- 12वाँ संविधान संशोधन 1962 के तहत गोवा को केन्द्रशासित प्रदेश का दर्जा दिया गया लेकिन बाद के वर्षों में 56वाँ संविधान संशोधन 1987 के तहत गोवा को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया।
- गोवा वर्तमान समय में क्षेत्रफल के आधार पर भारत का सबसे छोटा राज्य है।
- पुर्तगाली इस्ट इंडिया कंपनी को “एस्टादो द इंडिया” कंपनी के नाम से जाना जाता है।

### डच ईस्ट इंडिया कंपनी

- नीदरलैंड या हॉलैंड के निवासी को डच कहा जाता है।
- इंडिया आने वाले प्रथम डच यात्री कानेलियन हॉउटमैन था जो 1596 ई. में भारत की यात्रा पर आया था।
- डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1602 ई. में हुई है। इस कंपनी को “वेरिंग दे ओस्टे इंडसे कंपनी” भी कहा जाता है।
- डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपना पहला व्यापारिक कारखाना 1605 ई. में आंध्र प्रदेश के मसूलीपट्टनम में खोला। आगे चलकर डचों ने अपना मुख्यालय नगर नागपट्टनम को बनाया।
- डचों ने भारत के तुलना में इंडोनेशिया के साथ व्यापार में ज्यादा रुचि लिया।
- डचों ने सिर्फ भारत के पूर्वी तट पर अपना व्यापारिक कारखाना खोला।

- सूती वस्त्र को निर्यात का वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है।
- भारत में डचों का पतन बेदरा के युद्ध से हुआ है। यह युद्ध 1759 ई. में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और डच ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच हुआ। इस युद्ध में डचों की हार हुई।

## ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी

- सन् 1600 ई. में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई। इस कंपनी की स्थापना Governor and Company of Merchant of London Trading to East Indies के नाम से हुई। कंपनी की स्थापना के समय ब्रिटिश महारानी एलिजावेथ-I थी। जिन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को मात्र 15 वर्षों के लिए व्यापार करने का एकाधिकार प्रदान किया। लेकिन 1609 ई. में ब्रिटिश के सम्राट जेम्स-I ने कंपनी को अनिश्चित काल के लिए व्यापार करने का एकाधिकार प्रदान किया।
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के समय मुगल बादशाह अकबर हुआ करते थे। वहीं कंपनी जहाँगीर के समय से भारत में व्यापार करना शुरू किया।
- ब्रिटिश कंपनी और मुगलों के बीच संघर्ष की शुरूआत मुगल बादशाह औरंगजेब के समय से हुई।
- भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी से पहले व्यापार करने का अधिकार लीवेंट कंपनी को प्राप्त हुआ। इस कंपनी को स्थल मार्ग से 1592-93 ई. में व्यापार करने का अधिकार प्रदान किया गया।
- सभी यूरोपीय कंपनियों में सबसे सफल यूरोपीय कंपनी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी हुई क्योंकि यह एक प्राइवेट कंपनी था। इस कंपनी में कुल 217 साझीदार थे। इस कंपनी का प्रथम गवर्नर टॉमस स्मिथ बने थे।
- भारत आने वाला प्रथम अंग्रेज रॉल्फ फिंच था।
- इंग्लैंड के सम्राट जेम्स-I का राजदूत बनकर Captain Hawkins मुगल बादशाह जहाँगीर के आगरा दरबार में 1609 ई. में उपस्थित हुआ।

Hawkins ने जहाँगीर से फारसी भाषा में बात की क्योंकि मुगलों की राजकीय भाषा फारसी हुआ करती थी। इससे जहाँगीर खुश हुआ और Captain Hawkins को इंग्लिश खान की उपाधि प्रदान किया।

लेकिन ध्यान रहे कि जहाँगीर Captain Hawkins को व्यापारिक छूट नहीं दिया।

- इंग्लैंड के राजा जेम्स-I के राजदूत बनकर 1615 ई. में Sir Tomas Rho (सर टॉमस रो) जहाँगीर के दरबार में आया जिसे जहाँगीर ने व्यापारिक छूट प्रदान किया।
- स्वाल्ली का युद्ध- यह युद्ध गुजरात के सूरत नामक शहर में 29, 30 नवंबर, 1612 को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी एवं पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कंपनी बीच हुआ। इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत हुई।

**Note:-** मुगलों का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र सूरत था।

- **मुंबई-** यह सालसेट द्वीप पर स्थित शहर है।

यह द्वीप सर्वाधिक आबादी वाला द्वीप है। इस शहर की स्थापना गैराल्ड अंगियार ने किया है।

1661 ई. में पुर्तगाली राजकुमारी कैथरिन का विवाह ब्रिटिश राजकुमार Charles-II के साथ हुआ।

▲ इस विवाह के उपरांत Charles-II को पुर्तगालियों से दहेज के रूप में मुंबई मिला जिसे Charles-II ने 1665 ई. में 10 पौंड वार्षिक किराया पर ब्रिटिश कंपनी को सौंप दिया।

- **कलकत्ता-** बंगाल के सूबेदार अजीम-उस-शान ने 1690 के दशक में मात्र 1200 रु. वार्षिक किराया पर तीन गांव
  1. सूतानती
  2. कालीकाटा
  3. गोविन्दपुर

अंग्रेजों को दिया। जॉब चारनाक नामक अंग्रेज ने इन तीनों गांवों को मिलकर कलकत्ता नामक शहर को स्थापित किया। यह शहर अंग्रेजों का प्रथम प्रेसिडेंसी नगर बना। ब्रिटिश काल में 1774 ई. से लेकर 1911 ई. तक भारत की राजधानी कलकत्ता बनी रही।

1911 में तृतीय दिल्ली दरबार का आयोजन हुआ जिसमें यह घोषणा किया गया कि भारत की राजधानी कलकत्ता के जगह दिल्ली को बनाया जाएगा।

इस घोषणा के तहत ही 1 अप्रैल, 1912 ई. को भारत की राजधानी दिल्ली बनी। तब से लेकर आज तक भारत की राजधानी दिल्ली ही बनी रही है।

- प्रथम दिल्ली दरबार का आयोजन 1877 ई. में तथा द्वितीय दिल्ली दरबार का आयोजन 1903 ई. में हुआ है।
- 18वीं सदी में बंगाल इतना समृद्ध था कि उसे भारत का स्वर्ग कहा जाने लगा था।
- **मद्रास-** इस शहर को आज चेन्नई के नाम से जाना जाता है। इस शहर के संस्थापक फ्रांसिस डे ने चंद्रगिरी के राजा से 1639 ई. में मद्रास को किराया पर लिया और फिर व्यापार करना शुरू किया। अंग्रेजों ने मद्रास में जो किला स्थापित किया उसे Fort Sant George (फोर्ट सेंट जॉर्ज) कहा गया।

### **व्यापारिक छूट और व्यापारिक कारखाना**

- अंग्रेजों के लिए 1632 ई. में गोलकुण्डा के सुल्तान ने (अब्दुल्ला कुतुबशाह) सुनहला फरमान (Golden Farmaan) जारी किया। इस फरमान के तहत अंग्रेजों को दक्षिण भारत में व्यापक स्तर पर व्यापार करने का छूट प्राप्त हुआ।
- मुगल बादशाह फरूखशियर ने 1717 ई. में व्यापक स्तर पर अंग्रेजों को व्यापारिक छूट प्रदान किया जिसे Magna Carta कहा जाता है।
- Magna Carta एक फ्रांसिस शब्द है। इसका प्रयोग पहली बार इंग्लैंड में हुआ था।
- जॉन सुरमन नामक ब्रिटिश अधिकारी के नेतृत्व में एक अंग्रेजी शिष्टमंडल, व्यापारिक छूट लेने को लेकर मुगल बादशाह फरूखशियर के दरबार में उपस्थित हुआ था।
- अंग्रेजों ने अपना पहला व्यापारिक कारखाना 1608 ई. में गुजरात के सूरत में खोला जिसे मुगलों ने मान्यता देने से इंकार कर दिया।
- अंग्रेजों ने अपना दूसरा कारखाना आंध्र प्रदेश के मसूलीपट्टनम में 1611 ई. में खोली जिसे कर्नाटक के सरकार ने शीघ्र मान्यता प्रदान कर दिया।
- यह अंग्रेजों द्वारा स्थापित प्रथम मान्यता प्राप्त फैक्ट्री है।
- अंग्रेजों ने भारत के पूर्वी तट पर ओडिशा के बालासोर में 1633 ई. में अपना पहला कारखाना खोला।
- अंग्रेजों ने बंगाल में अपना पहला कारखाना 1651 ई. में हुगली में खोला।
- अंग्रेजों ने सर्वप्रथम 1620 ई. में बिहार के पटना के आलमगंज में व्यापारिक कोठी खोलने का प्रयास किया।
- अंग्रेजों ने मुगल बादशाह शाहजहाँ के समय पटना में व्यापारिक कोठी खोली।

### **फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी**

- यह एक पूर्णतः सरकारी कंपनी थी। इस कंपनी पर पूर्णतः फ्रांसीसी सरकार का नियंत्रण था। फ्रांस के समाट Louis XIV (लुई चौदहवाँ) के समय उसके मंत्री कोल्बर्ट के प्रयास से 1664 ई. में फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई थी।

- फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपना पहला व्यापारिक कारखाना 1668 में सूरत में खोला 1669 ई. में दूसरा व्यापारिक कारखाना मसूलीपट्टनम में खोला।
- फ्रांसिसियों ने अपना मुख्यालय नगर Pondicherry / Puducherry को बनाया। इस शहर की नींव फ्रांसिस मार्टिन ने रखा था।
- फ्रांसीसी गवर्नर Dupley को भारत में सहायक संधि का जन्मदाता माना जाता है। उन्होंने ही सर्वप्रथम भारतीय राजाओं के भू क्षेत्र में हस्तक्षेप करना शुरू किया था।
- फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच जो युद्ध हुआ है उसे इतिहास में कर्नाटक का युद्ध कहा जाता है।
- प्रथम कर्नाटक का युद्ध- यह युद्ध 1746 से 1748 ई. के बीच हुआ है।  
यह युद्ध आस्ट्रिया के उत्तराधिकारी युद्ध से प्रभावित है आस्ट्रिया के उत्तराधिकारी युद्ध की समाप्ति एलाशापल के संधि के तहत हुआ है।  
इस संधि के तहत ही प्रथम कर्नाटक युद्ध की भी समाप्ति हुई है।
- अंग्रेज गवर्नर बर्नौट ने फ्रांसीस जहाज पर कब्जा कर लिया। यही घटना प्रथम कर्नाटक युद्ध का तत्कालिक कारण बना।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध को सेंट थोमे के युद्ध के नाम से भी जाना जाता है। (1748)
- द्वितीय कर्नाटक युद्ध:- यह युद्ध 1749-1754 ई. के बीच में होने वाला युद्ध था। इस युद्ध का संबंध हैदराबाद और कर्नाटक के उत्तराधिकारी युद्ध से रहा है।
- इस युद्ध की समाप्ति 1754 ई. में हुए Pondicherry के संधि के तहत हुआ है।
- द्वितीय कर्नाटक युद्ध के दौरान 1749 ई. में अम्बूर का युद्ध हुआ था।
- तृतीय कर्नाटक युद्ध- यह युद्ध 1756-1763 ई. के बीच हुआ है। यह युद्ध यूरोप महादेश में होने वाले सप्तवर्षीय युद्ध से प्रभावित था।  
सप्तवर्षीय युद्ध ब्रिटिश और फ्रांस के बीच 1756-1763 ई. के बीच हुआ था।  
इस सप्तवर्षीय युद्ध की समाप्ति 1763 ई. में हुए पेरिस के संधि के तहत हुआ है।  
इसी पेरिस के संधि के तहत तृतीय कर्नाटक युद्ध की भी समाप्ति हुई है।
- वांडीवाश का युद्ध- यह युद्ध 22 जनवरी 1760 ई. को यह युद्ध BEIC और FEIC के बीच हुआ है।  
इस युद्ध में ब्रिटिश के तरफ से नेतृत्व सर आयरकूट ने किया था तो वही फ्रांसीसियों के तरफ से नेतृत्व काउण्ट लाली ने किया था।  
इस युद्ध में Britishers की जीत हुई। इस युद्ध से ही भारत में फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी का पतन हुआ माना जाता है।



## 2. 18वीं सदी में मुगलों से स्वतंत्र हुए क्षेत्रीय राज्य

- 1707 ई. में मुगल बादशाह औरंगजेब के निधन होने के बाद बंगाल, अवध, हैदराबाद जैसे क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। ये राज्य पहले मुगलों के अधीन हुआ करता था।

### Bengal ( बंगाल )

- मुगलों के द्वारा नियुक्त बंगाल का अंतिम गर्वनर मुर्शिद कुली खाँ था। मुगल बादशाह औरंगजेब ने 1700 ई. में बंगाल का दीवान मुर्शिद कुली खाँ को नियुक्त किया। बाद के वर्षों में औरंगजेब के निधन होने के बाद मुर्शिद कुली खाँ ने बंगाल में स्वतंत्र शासन की स्थापना कर ली।
- मुर्शिद कुली खाँ ने 1722 ई. में मुर्शिदाबाद नामक नगर को बसाया तथा उसे अपनी राजधानी बनाया। बंगाल जब मुगलों के अधीन था तो उसकी राजधानी ढाका हुआ करती थी। लेकिन जब बंगाल मुगलों से स्वतंत्र हो गया तो बंगाल की राजधानी ढाका से स्थानांतरित कर मुर्शिदाबाद को बना दिया गया।
- मुगल बादशाह फर्रुखशियर ने उड़ीसा की सूबेदारी भी मुर्शिद कुली खाँ को दे दिया।
- मुर्शिद कुली खाँ ने तकाबी ऋण किसानों को देना प्रारंभ किया तथा कर की वसूली करने को लेकर इजारेदारी प्रथा की शुरूआत की।
- मुर्शिद कुली खाँ ने जब बंगाल में स्वतंत्र शासन की स्थापना किया। इसके खिलाफ सीता राम राय, सूजात खाँ, निजात खाँ इत्यादि के नेतृत्व में विप्रोह हुआ जिसे मुर्शिद कुली खाँ ने आसानी से दबा दिया।
- शासन प्रशासन करते हुए मुर्शिद कुली खाँ का निधन 1727 ई. में हो गया। उनका उत्तराधिकारी उनका दामाद शुजाउद्दीन बना जिन्होंने सिद्धांतिक तौर पर बिहार का विलय बंगाल प्रांत में किया तथा बिहार का उपसूबेदार अली वर्दी खाँ को बनाया।
- शुजाउद्दीन का 1739 ई. में निधन हो जाने के बाद बंगाल का अगला नबाब उनका बेटा सरफराज खाँ बना जो काफी अयोग्य और विलासी प्रवृत्ति का था।
- गिरिया का युद्ध- यह युद्ध 1740 ई. में सरफराज खाँ और अली वर्दी खाँ के बीच हुआ। इस युद्ध में अली वर्दी खाँ की जीत हुई।

### अली वर्दी खाँ (1740–1756)

- अली वर्दी खाँ ने बंगाल के नवाब बनने के बाद मुगलों को कर देना बंद कर दिया तथा उस कर की राशि से बगाल का विकास किया जिस कारण बंगाल काफी समृद्ध हो गया और इसलिए अलीवर्दी खाँ के शासनकाल के समय बंगाल को भारत का स्वर्ग कहा जाने लगा।
- अली वर्दी खाँ ने अंग्रेजों की तुलना मधुमक्खी से किया और कहा कि अगर मधुमक्खी को न छेड़ा जाए तो वह शहद देती है और अगर छेड़ दिया जाए तो वह काट काटकर खा जाती है।
- अलीवर्दी खाँ ने अंग्रेजों को कलकत्ता का किलाबंदी और फ्रांसिसियों को चंद्रनगर का किलाबंदी करने से रोक लगा दिया।
- अलीवर्दी खाँ के समय मराठों ने बंगाल पर आक्रमण किया जिसमें मराठों की जीत हुई तदपश्चात् अलीवर्दी खाँ ने मराठों के साथ समझौता किया। समझौता के तहत उड़ीसा का क्षेत्र मराठों को दे दिया तथा 6 लाख रुपया वार्षिक देना भी स्वीकार किया।
- अलीवर्दी खाँ का निधन 1756 ई. में हो गया। उसका उत्तराधिकारी उसका नाती सिराजुद्दीन बना।

## सिराजुद्दौला (1756–1757)

- सिराजुद्दौला के बंगाल के नबाव बनने का विरोध उसकी मौसी घसीटी बेगम (ढ़ाका की बेगम) और उसका मौसेरा भाई साकेत जंग (पूर्णियाँ का नबाव) ने किया।
- अंग्रेजों ने नबाव सिराजुद्दौला के समय कलकत्ता का किलाबंदी करना शुरू किया। जब इसकी जानकारी सिराजुद्दौला को हुई तो उन्होंने अपनी सेना के साथ कलकत्ता का अभियान किया। उस समय कलकत्ता का अंग्रेज प्रभारी रोजर ड्रेक और सेनापति मिनीचीन था जो सिराजुद्दौला के डर से भाग खड़ा हुआ तथा ये लोग फुल्टा नामक बंदरगाह पर जाकर छिप गया।
- **Black Hole की घटना-** नबाव सिराजुद्दौला अपने कलकत्ता अभियान के क्रम में 20 जून, 1756 को एक छोटे से काल कोठरी में 146 अंग्रेज को बंद कर दिया। जब अगली सुबह काल कोठरी खोला गया तो उसमें मात्र 23 अंग्रेज जीवित बचे। इसी घटना को इतिहास में ब्लैक हॉल की घटना कहा जाता है।

यही घटना Battle of Plassey का तत्कालिक कारण बना। इस घटना का विवरण हॉलबेल नामक अंग्रेज ने दिया। जब Black Hole की घटना का पता कंपनी के मद्रास स्थित मुख्यालय को लगा तो Watson and Robert Clive के नेतृत्व में एक बड़ी अंग्रेजी सेना कलकत्ता पहुंची और कलकत्ता के प्रभारी मानिकचंद से समझौता करके कलकत्ता पर अधिकार कर लिया।

### अलीनगर की संधि

- यह संधि 9 फरवरी, 1757 को बंगाल के नबाव सिराजुद्दौला और अंग्रेजी कंपनी के बीच हुआ। इस संधि के तहत नबाव सिराजुद्दौला ने अंग्रेजी कंपनी को कलकत्ता का किलाबंदी करने का अधिकार दिया।
- साथ ही साथ युद्ध क्षतीपूर्ति के रूप में मुगल बादशाह फरूखशियर के द्वारा दिए गए व्यापारिक अधिकार को बहाल करवाने की घोषणा की।

### प्लासी का युद्ध (Battle of Plassey)

प्लासी के युद्ध का मैदान West Bengal में भागीरथी नदी के तट पर स्थित है।

यह युद्ध कोई युद्ध नहीं था बल्कि एक घट्यन्त्र था।

यह युद्ध चंद घंटों में समाप्त हो गया।

यह युद्ध 23 जून, 1757 को बंगाल के नबाव सिराजुद्दौला और अंग्रेजी कंपनी के बीच हुआ।

इस युद्ध में अंग्रेजी कंपनी के तरफ से नेतृत्व Robert Clive ने किया था।

इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत हुई क्योंकि नबाव सिराजुद्दौला के सेनापति मीर जाफर ने सिराजुद्दौला को धोखा देते हुए अंग्रेजी कंपनी का साथ दिया। ध्यान रहे की इस युद्ध में मोहनलाल और मीर मदान के नेतृत्व में एक छोटी सैन्य टुकड़ी सिराजुद्दौला के लिए लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए।

- प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला के हार होने के बाद जब वे अपनी राजधानी वापस लौट रहा था तो मीर जाफर के पुत्र मीरन के इशारे पर सिराजुद्दौला की हत्या कर दी गई।
- सिराजुद्दौला के मारे जाने के बाद बंगाल का अगला नबाव मीर जाफर बना।
- मीर जाफर 1757 से 1760 ई. तक नबाव के पद पर रहे। मीर जाफर, Robert Clive के इशारे पर काम किया करता था, जिस कारण उन्हें Clive का गद्हा या गीदड़ कहा गया। मीर जाफर ने एक करोड़ 77 लाख रूपया अंग्रेजों को उपहार स्वरूप दिया तथा 24 परगना नामक जिला भी अंग्रेजों को प्रदान किया।

## मीर कासिम (1760-1763)

इन्होंने अपनी राजधानी मुरशीदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित किया तथा मुंगेर में गोला बारूद तोप खाने की कारखाना की शुरूआत की।

### बक्सर का युद्ध (Battle of Buxar)

यह युद्ध 22 अक्टूबर 1764 को ब्रिटिश कंपनी की सेना और भारत की संयुक्त सेना के बीच हुआ। भारत की संयुक्त सेना में बंगाल के अपदस्थ नवाब मीर कासिम की सेना, अवध के नवाब शुजाउद्दौला की सेना और मुगल बादशाह शाह आलम-II की सेना शामिल थी।

इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व हेक्टर मुनरो कर रहा था तो वहाँ भारत की संयुक्त सेना का नेतृत्व अवध के नवाब शुजाउद्दौला कर रहा था।

इस युद्ध में ब्रिटिश सेना की जीत हुई। भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना में यह सबसे निर्णायक युद्ध साबित हुआ। इस युद्ध का तात्कालिक कारण लाइसेंस का दुरुपयोग किया जाना था।

इस युद्ध की समाप्ति इलाहाबाद की संधि के तहत हुई है।

**Note :** इस युद्ध के समय बंगाल के गर्वनर बेंसी टार्ड थे।

### इलाहाबाद की संधि

इलाहाबाद की दो संधि हुई हैं। जिसमें प्रथम संधि 12 अगस्त 1765 और द्वितीय संधि 16 अगस्त, 1765 को हुई है।

इस संधि में अंग्रेजों के तरफ से भाग Robert Clive ने लिया।

William Pitt ने Robert Clive को स्वर्ग से उत्पन्न सेना नायक की उपाधि दी है।

- **इलाहाबाद की प्रथम संधि-** यह संधि Robert Clive और मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय के बीच हुआ है। इस संधि के प्रमुख प्रावधान निम्न हैं।

1. इस संधि के तहत अंग्रेजी कंपनी को मुगल बादशाह शाह आलम-II ने बिहार, बंगाल एवं उड़ीसा में कर वसूलने का अधिकार प्रदान किया। अर्थात् दीवानी अधिकार प्रदान किया।

**Note :** अंग्रेजी कंपनी को जब भारत में दीवानी अधिकार प्राप्त हुआ तो सबसे पहले खासी जनजाति के संपर्क में अंग्रेज कंपनी आया।

2. इस संधि के तहत मुगल बादशाह शाह आलम-II को 26 लाख रूपया वार्षिक पेंशन देना अंग्रेजों ने प्रारंभ किया। कालांतर में Warren Hastings ने Mughal बादशाह शाह आलम II को पेंशन देना बंद कर दिया।

3. इस संधि के तहत अवध के नवाब से कड़ा और इलाहाबाद का क्षेत्र लेकर मुगल बादशाह शाह आलम-II को सौंप दिया गया।

**Note :** अंग्रेजी कंपनी को जब भारत में दीवानी अधिकार प्राप्त हुआ तो सबसे पहले खासी जनजाति के संपर्क में अंग्रेज कंपनी आया।

- **इलाहाबाद की द्वितीय संधि-** यह संधि Robert Clive और अवध के नवाब शुजाउद्दौला के बीच हुआ। इस संधि के प्रमुख प्रावधान निम्न हैं।

1. इस संधि के तहत युद्ध हर्जाना के तौर पर अवध के नवाब ने 50 लाख रूपया अंग्रेजी कंपनी को देना स्वीकार किया।

2. इस संधि के तहत अवध के क्षेत्र में अंग्रेजी कंपनी को मुक्त व्यापार करने का अधिकार प्राप्त हुआ।
  3. कड़ा और इलाहाबाद के अलावे अवध के अन्य क्षेत्रों पर अवध के नबाव का शासन/अधिकार बना रहेगा।
- Note :** बंगाल के अंतिम नबाव मुबारकउद्दौला हुए।

## अवध (Awadh)

- अवध में स्वतंत्र शासन की स्थापना मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला के समय 1722 ई. में सआदत खाँ ने किया।
- मुहम्मद शाह रंगीला ने सआदत खाँ को बुरहान-उल-मुल्क की उपाधि प्रदान किया।
- सआदत खाँ ने अपनी राजधानी फैजाबाद को बनाकर अवध में शासन प्रशासन किया। 1739 ई. में नादिर शाह जब दिल्ली पर आक्रमण किया तो मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला ने सआदत खाँ को नादिर शाह के विरुद्ध लड़ने के लिए दिल्ली बुलाया लेकिन सआदत खाँ 1739 ई. में आत्महत्या कर लिया।
- सआदत खाँ का उत्तराधिकारी उसका दामाद सफदरजंग बना। इनका मूल नाम अबुल मंसूर खाँ था। इनके समय में ही मुगल बादशाह मुहम्मद शाह का 1748 में निधन हुआ। तदपश्चात् अगला मुगल बादशाह अहमद शाह बना। जिसने सफदरजंग को अपना वजीर बनाया। जिस कारण इतिहास सफदरजंग को नबाव वजीर के नाम से याद करता है।
- 1754 ई. में सफदरजंग का निधन हो गया। तदपश्चात् अवध का अगला नबाव शुजाउद्दौला बना।
- शुजाउद्दौला के समय पानीपत का तृतीय युद्ध हुआ जिसमें शुजाउद्दौला ने अफगानी मूल के शासक अहमद शाह अब्दाली का साथ दिया था।
- शुजाउद्दौला के समय ही बक्सर का युद्ध हुआ था। बक्सर के युद्ध में भारत की संयुक्त सेना का नेतृत्व अवध के नबाव शुजाउद्दौला ने ही किया था।
- इलाहाबाद की द्वितीय संधि Robert Clive और अवध के नबाव शुजाउद्दौला के बीच हुआ था। शुजाउद्दौला के बाद अवध का अगला नबाव आसफउद्दौला बना। जिन्होंने अवध की राजधानी फैजाबाद से स्थानांतरित कर लखनऊ को बनाया। आसफउद्दौला ने लखनऊ में बड़ा इमामबाड़ा का निर्माण करवाया वहीं लखनऊ में छोटे इमामबाड़ा का निर्माण मुहम्मद अली शाह ने करवाया। अवध के अंतिम नबाव वाजिद अली शाह हुए।
- Lord Dalhousie (डलहौजी) ने 1856 ई. में जेम्स आउट्रम के रिपोर्ट को आधार बनाते हुए अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर वाजीद अली शाह को गढ़ी से हटा दिया। जिसका विरोध वाजिद अली शाह की पत्नी बेगम हजरत महल ने की और 1857 के विद्रोह में अवध और लखनऊ के क्षेत्र में भाग ली।

## हैदराबाद (Hyderabad)

- मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला के समय 1724 ई. में हैदराबाद में स्वतंत्र शासन की स्थापना निजाम मुल मुल्क ने किया। उनका मूल नाम चिनकिलीज खाँ था। उनका संबंध आसफजाही वंश से था। मुहम्मद शाह रंगीला ने निजाम मुल मुल्क को आसफजाह की उपाधि प्रदान की।
- सुकर खेड़ा/शंकरखेड़ा का युद्ध  
यह युद्ध 11 अक्टूबर 1724 ई. को मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला के प्रतिनिधि मुबारिज खाँ और हैदराबाद के निजाम मुल मुल्क के बीच हुआ। इस युद्ध में निजाम मुल मुल्क की जीत हुई। तदपश्चात् मुहम्मद शाह रंगीला ने निजाम मुल मुल्क को दक्कन का वायसराय नियुक्त किया।

### ● पालखेड़ा का युद्ध

यह युद्ध 1728 ई. में हैदराबाद के निजाम और मराठा पेशवा बाजीराव-I के बीच हुआ। इस युद्ध में हैदराबाद के निजाम की हार हुई। इस युद्ध की समाप्ति मुंशी शिवगांव के संधि के तहत हुई।

इस संधि के तहत निजाम ने मराठों को चौथ और सरदेशमुखी देना स्वीकार किया।

### ● हैदराबाद के निजाम निजाम मुल मुल्क का निधन 1748 में हुआ।

### ● सहायक संधि को स्वीकार करने वाला प्रथम देशी रियासत हैदराबाद बना जिसने 1798 ई. में स्वीकार किया।

### ● आजादी के समय क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ा देशी रियासत हैदराबाद था।

### ● हैदराबाद को सैनिक कारवाई या पुलिसिया कार्रवाई के अंतर्गत Operation Caterpillar or Operation Polo के तहत भारत में मिलाया गया।

## मैसूर (Mysore)

### ● मैसूर, आज जिसे कर्नाटक कहा जाता है उसे पहले मैसूर कहा जाता था। साथ ही साथ कर्नाटक का रत्न मैसूर को कहा जाता है।

मध्यकाल में कर्नाटक में विजयनगर साम्राज्य के शासकों ने शासन किया।

### ● जब विजयनगर साम्राज्य के शासन का अंत हुआ तो उसके स्थान पर मैसूर में बोड्यार वंश के शासकों ने शासन किया। इस वंश के अंतिम शासक कृष्णराज हुए। जो नाम मात्र का शासक था। उसके समय नंजराज और देवराज शासन को देखा करता था। जिसमें नंजराज वित्त मंत्री के पद पर था और देवराज सेनापति के पद पर था।

### ● नंजराज की सेवा में हैदरअली शामिल हुआ। हैदरअली अपनी योग्यता और दूरदर्शिता के बल पर नंजराज को गद्दी से अपदस्थ कर दिया तथा अपने आप को मैसूर का शासक घोषित किया। अर्थात् हम यह कह सकते हैं कि मैसूर में स्वतंत्र शासन की स्थापना 18वीं सदी में हैदर अली ने किया।

### ● हैदरअली ने फ्रांसीसियों के मदद से तमिलनाडु के डिंडीगुल नामक शहर में 1755 ई. में आधुनिक शास्त्रागार की स्थापना किया।

### ● संभवतः हैदरअली अंग्रेजों को पराजित करने वाला प्रथम भारतीय शासक है। हैदरअली ने प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध के दौरान अंग्रेजों को पराजित किया। यह युद्ध 1767 से 1769 ई. के बीच हुआ है। इस युद्ध की समाप्ति 1769 ई. में हुए मद्रास के संधि के तहत हुआ है।

### ● मद्रास की संधि के उल्लंघन के कारण द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध हुआ। यह युद्ध 1780 ई. से 1784 ई. के दौरान हुआ। इस युद्ध के दौरान ही हैदर अली और अंग्रेज सेनापति आयरकूट के बीच 1781 ई. में पोर्टोनोवा का युद्ध हुआ। इस युद्ध में हैदरअली की हार हुई।

द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध के दौरान ही हैदर अली मारा गया। तदपश्चात् मैसूर का अगला शासक टीपू सुल्तान बना। जिन्होंने द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध को जारी रखा। इस युद्ध की समाप्ति 1784 ई. में हुए मंगलौर की संधि के तहत हुआ।

## टीपू सुल्तान

### ● इन्हें शेर-ए-मैसूर, नागरीक टीपू, सीधा-साधा दैत्य कहा जाता है।

### ● इनका मानना है कि भेड़ की तरह लंबी जिंदगी जीने से बेहतर है कि एक दिन ही जीए मगर शेर की तरह जीए।



- टीपू सुल्तान के शासनकाल के समय 1789 ई. में फ्रांसीसी क्रांति हुई। इस फ्रांसीसी क्रांति से टीपू सुल्तान काफी प्रभावित हुआ।  
फ्रांसीसी क्रांति के दौरान स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का नारा दिया गया।
- इससे प्रभावित होकर टीपू सुल्तान अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम् में स्वतंत्रता का वृक्ष लगवाया और वे Jaccobin Club के सदस्य बने।
- टीपू सुल्तान कई भाषा जैसे उर्दू, अरबी, फारसी, कन्नड़, हिन्दी इत्यादि के जानकार थे।
- टीपू सुल्तान ने अपनी सेना का गठन यूरोपीय ढंग से किया।
- टीपू सुल्तान अपनी आर्थिक शक्ति को सैन्य शक्ति की नींव मानता था।
- टीपू सुल्तान प्रथम भारतीय शासक हुए जिसने युद्ध में रॅकेट का प्रयोग किया।
- टीपू सुल्तान ने बादशाह की उपाधि धारण किया तथा अपने नाम से सिक्का जारी किया।
- टीपू सुल्तान भूराजस्व की वसूली हेतु जमींदारी व्यवस्था के स्थान पर रैयतवारी व्यवस्था को लागू किया ताकि किसानों का शोषण न हो।
- टीपू सुल्तान अपने पड़ोसी देशों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित करने को लेकर अपना दूत मंडल फ्रांस, ईरान, तुर्की, अरब, मारीशस, म्यानमार इत्यादि देशों में भेजा।
- 1791 ई. में मराठों ने, कर्नाटक के श्रृंगेरी में स्थित शारदा मंदिर को नुकसान पहुँचाया। तद्पश्चात् मंदिर के पुरोहित के आग्रह का मंदिर का पुर्निमाण करवाने को लेकर टीपू सुल्तान से आर्थिक सहायता की मांग किया।  
टीपू सुल्तान ने शारदा मंदिर के निर्माण को लेकर धन दिया।
- मैंगलोर की संधि से टीपू सुल्तान संतुष्ट नहीं था। जिस कारण टीपू सुल्तान ने फ्रांस से सहायता की मांग की। इसी बात को आधार बनाते हुए अंग्रेजों ने टीपू सुल्तान पर यह आरोप लगाया कि टीपू सुल्तान अंग्रेजों के विरुद्ध फ्रांसीसियों से गुप्त समझौता कर रहा है।

### तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध

- यह युद्ध 1790 ई. से 1972 ई. के दौरान हुआ है। इस युद्ध में एक तरफ टीपू सुल्तान की सेना थी तो वहीं दूसरी तरफ अंग्रेजों की सेना थी।
- इस युद्ध में अंग्रेजों की मदद मराठा पेशवा और हैदराबाद का निजाम कर रहा था।
- इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत हुई। इस युद्ध की समाप्ति 1792 ई. में हुए श्रीरंगपट्टनम् की संधि के तहत हुआ।
- इस समय बंगाल के गर्वनर जनरल लॉर्ड कॉर्नवालिस थे। कॉर्नवालिस ने तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध को जीतने के बाद कहा कि- “मैंने अपने मित्र को शक्तिशाली बनाए बगैर ही अपने शत्रु को पंग बना दिया।”

### चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध

- यह युद्ध 1799 ई. में टीपू सुल्तान और अंग्रेजों के बीच हुआ है।
- इस युद्ध के दौरान ही टीपू सुल्तान मारा गया।
- तद्पश्चात् अंग्रेजों ने वोड्यार वंश के अल्पायु शासक कृष्णराज द्वितीय को गद्दी पर बैठाकर 1799 ई. में सहायक संधि पर हस्ताक्षर करवा लिया।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि 1799 ई. में सहायक संधि के तहत मैसूर ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बन गया।

**Note:-** चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध के दौरान ही टीपू सुल्तान ने नेपालियन से सहायता की मांग किया।



## पंजाब में सिख धर्म और सिख राज्य

- सिख धर्म की स्थापना गुरु नानक ने किया। गुरु नानक का जन्म 1469 ई. में पाकिस्तान के ननकाना या तलबंडी में हुआ था।  
इनके पिता मेहता कालुराम, माता तृप्ता देवी, पत्नी सुलक्षणी थीं। इनका संबंध खत्री जाति से था।
- गुरु नानक को ज्ञान की प्राप्ति 1496 ई. में में कार्तिक पुर्णिमा के दिन हुआ। ज्ञान प्राप्ति के बाद गुरु नानक ने सिख धर्म के प्रचार प्रसार को लेकर पूरे भारत का भ्रमण किया। साथ ही साथ गुरु नानक ने संगत और पंगत व्यवस्था की शुरूआत की।
- संगत का अर्थ निःशुल्क धर्मशाला होता है तथा पंगत का अर्थ लंगर अर्थात् निःशुल्क भोजनालय होता है।  
सिख धर्म का प्रचार प्रसार करते हुए 1539 ई. में करतारपुर में गुरु नानक का निधन हो गया। गुरु नानक का उत्तराधिकारी उनका प्रिय शिष्य गुरु अंगद बना जो सिख धर्म के दूसरे गुरु हुए।
- गुरु अंगद का मूल नाम लहना था। गुरु अंगद ने गुरु मुखी लिपी का प्रचलन किया तथा लंगर व्यवस्था को स्थायी रूप प्रदान किया।
- गुरु अंगद का उत्तराधिकारी तथा सिख धर्म के तीसरे गुरु 'गुरु अमरदास' बने।
- गुरु अमरदास ने हिन्दुओं से अलग एक विवाह पद्धति लवन पद्धति का प्रचलन किया।
- गुरु अमरदास ने सिख धर्म के प्रचार प्रसार को लेकर भारत के अलग-अलग शहरों में 22 गद्वी की स्थापना किया तथा प्रत्येक गद्वी पर एक-एक महंत की नियुक्ति किया।
- अमरदास के समकालीन मुगल बादशाह अकबर थे। अकबर पंजाब के गोइन्दवाल जाकर अमरदास से मुलाकात की।
- अमरदास के आग्रह पर अकबर ने तीर्थ यात्रा कर को समाप्त किया। अकबर ने अमर दास की पुत्री बीबी भानी को 500 गाँव दान में दिया।
- अमरदास के पुत्र बाबा श्रीचंद ने अमरदास के खिलाफ विद्रोह कर दिया जिस कारण अमरदास ने अपना उत्तराधिकारी अपने प्रिय शिष्य और दामाद गुरु रामदास को बनाया।
- गुरु राम दास सिख धर्म के चौथे गुरु हुए जो 1574-1581 तक गुरु के पद पर रहे।  
इन्होंने 1577 ई. में अमृतसर नामक शहर को बसाया। अमृतसर का पूर्व नाम गुरु रामदासपुर है।  
गुरु रामदास भी मुगल बादशाह अकबर के समकालीन थे।
- गुरु रामदास ने अपना उत्तराधिकारी अपने तीसरे पुत्र गुरु अर्जुन देव को बनाया। अर्थात् हम यह कह सकते हैं कि गुरु रामदास ने गुरु के पद को पैत्रीक बनाया।
- सिख धर्म के पांचवें गुरु अर्जुन देव हुए जो 1581 ई. से 1606 ई. के बीच सजधज कर अपने दरबार में उपस्थित होते थे जिस कारण इन्हें सच्चा बादशाह भी कहा जाता था।
- इन्होंने 1589 ई. में अमृतसर में स्वर्ण मंदिर/हर मंदिर का निर्माण किया।  
इन्होंने 1604 ई. में सिखों के सबसे पवित्र ग्रंथ आदि ग्रंथ/गुरु ग्रंथ शाही की रचना किया।  
गुरु अर्जुन देव ने जहाँगीर के विद्रोही पुत्र खुसरो को आर्शिवाद दिया और धन से मदद किया। जिस कारण जहाँगीर ने अर्जुन देव की हत्या करवा दी।
- तदपश्चात् सिख धर्म के छठे गुरु हरगोविंद बने। जिनका शासनकाल 1606-1645 ई. तक रहा है। इन्होंने अमृतसर का किला बंदी करवाया तथा अकाल तख्त (पूजा स्थल) का निर्माण करवाया। गुरु हरगोविंद ने सिखों को सैन्य शक्ति के रूप में ढाला। गुरु हरगोविंद का उत्तराधिकारी गुरु हरराय जो 1645-1661 तक गुरु के पद पर रहे हैं।



- गुरु हरराय का शाहजहाँ के बड़े पुत्र दारा शिकोह के साथ अच्छा संबंध था। गुरु हरराय का उत्तराधिकारी गुरु हरकिशन बना जो 1661-1664 ई. तक गुरु के पद पर रहे। इन्होंने दिल्ली जाकर औरंगजेब को गुरु पद के विषय में बताया। अचानक चेचक नामक बीमारी के कारण हरकिशन का निधन हो गया।
  - गुरु हरकिशन का उत्तराधिकारी गुरु तेगबहादूर बने। यह सिख धर्म के नौंवे गुरु थे। इनका शासनकाल 1664-1675 ई. तक रहा है।  
इनका मूल नाम त्यागमल था। इन्हें बाकला-दा-बाबा के नाम से भी जाना जाता है।
  - ये मुगल बादशाह औरंगजेब के समकालिन थे। इन्होंने औरंगजेब की धार्मिक नीतियों का खुले तौर पर विरोध किया जिस कारण औरंगजेब ने गुरु तेगबहादूर को अपने दरबार में बुलाकर काफी प्रताड़ित किया तथा इसकी हत्या करवा दी। अर्थात् इनकी हत्या के लिए औरंगजेब जिम्मेदार था।
  - गुरु तेगबहादूर ने ही नारा दिया है कि “सर दाद सिर्झ ना दाद” अर्थात् मैंने अपना सर कटवा दिया लेकिन सिख धर्म का रहस्य नहीं बताया।
  - गुरु गोविन्द सिंह- सिख धर्म के 10वें एवं अंतिम गुरु गुरुगोविन्द सिंह हुए। गुरु गोविन्द सिंह का जन्म 1666 ई. पटना साहिब में हुआ। इनके पिता गुरु तेगबहादूर तथा माता गुजरी बाई थी।
  - गुरु गोविन्द सिंह ने पंचमकार की घोषणा करते हुए अपने अनुयायियों को केस, कंधा, कृपाण, कच्छा और कड़ा का अनुपालन करने को कहा।
  - गुरु गोविन्द सिंह ने सिख धर्म को मानने वाले पुरुष अनुयायियों को अपने नाम के अंत में सिंह लगाने का आदेश दिया।
  - सिंहों का सबसे पवित्र ग्रंथ आदि ग्रंथ को वर्तमान रूप ‘गुरु गोविन्द सिंह’ ने दिया।
  - गुरु गोविन्द सिंह ने अपनी आत्मकथा विचित्र नाटक नाम से लिखा है। इसके अलावे इन्होंने कृष्ण अवतार जैसे पुस्तकों की रचना की है।
  - गुरु गोविन्द सिंह ने पाहुल प्रणाली की शुरूआत की है। साथ ही साथ खालसा पंथ की स्थापना की है। खालसा का अर्थ शुद्ध होता है।
  - गुरु गोविन्द सिंह औरंगजेब की नीतियों से संतुष्ट नहीं था। जिस कारण उन्होंने औरंगजेब के खिलाफ अपना संघर्ष लगातार जारी रखा। इसी क्रम में गुरु गोविन्द सिंह और मुगल सेना के बीच कई युद्ध हुए जो निम्न हैं।
    1. **नादौन का युद्ध-** यह युद्ध 1690 ई. में गुरु गोविन्द सिंह और मुगल सेना के बीच हुआ। इसमें गुरु गोविन्द सिंह की जीत हुई।
    2. **आनंदपुर का प्रथम युद्ध-** यह युद्ध 1701 ई. में गुरु गोविन्द सिंह और मुगल सेना के बीच हुआ। इस युद्ध में गुरु गोविन्द सिंह की हार हुई।
    3. **आनंदपुर का द्वितीय युद्ध-** यह युद्ध 1704 ई. में गुरु गोविन्द सिंह और मुगल सेना के बीच हुआ। इस युद्ध में मुगल सेना की जीत हुई। इस युद्ध के दौरान ही गुरु गोविन्द सिंह के दो पुत्र फतह सिंह और जोराबर सिंह को दीवार में चिनवा दिया गया था।
    4. **चकमौर का युद्ध-** यह युद्ध 1705 ई. में गुरु गोविन्द सिंह और मुगल सेना के बीच हुआ। इस युद्ध में मुगल सेना की जीत हुई। इस युद्ध के दौरान ही गुरु गोविन्द सिंह के दो अन्य पुत्र अजीत सिंह और जुझारू सिंह की हत्या कर दी गई।
- गुरु गोविन्द सिंह के चार पुत्र थे जो मुगलों से लड़ते हुए शहीद हो गए इसलिए गुरु गोविन्द सिंह ने यह घोषणा किया कि उनके निधन के बाद गुरु का पद समाप्त हो जाएगा और गुरु के पद के स्थान पर नेता का पद आएगा।

5. खिदड़ाना का युद्ध- यह युद्ध 1705 ई. में गुरु गोविन्द सिंह और मुगल सेना के बीच हुआ। इस युद्ध में गुरु गोविन्द सिंह की जीत हुई।

### पंचप्यारे

गुरु गोविन्द सिंह के वैसे अनुयायी जो गुरु गोविन्द सिंह के लिए प्राण तक त्यागने के लिए तैयार हो गए थे। उसे ही पंचप्यारे कहा गया। इसके अंतर्गत निम्न अनुयायी आते हैं-

1. दिल्ली का जाट - धर्मदास
2. लाहौर का दयाराम खत्री
3. बीदर का नाई साहब चंद्र
4. द्वारका का दर्जी मोहकम चंद्र छीम्बा
5. जगन्नाथ का हिम्मत भीवर

### महत्वपूर्ण जानकारी

- मुगल बादशाह औरंगजेब की मृत्यु के समय सिख धर्मगुरु गोविन्द सिंह थे।
- गुरु गोविन्द सिंह की हत्या महाराष्ट्र के नारेड़ नामक स्थान पर गुल खाँ नामक पठान के द्वारा कर दिया गया। उस समय मुगल बादशाह बहादुर शाह प्रथम था।
- गुरु गोविन्द सिंह के निधन होने के बाद गुरु का पद समाप्त हो गया और नेता का पद अया। नेता के पद पर बंदा बहादुर उर्फ लक्ष्मण दास बैठे। बंदा बहादुर ने मुगलों के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दिया क्योंकि उसे लग रहा था कि मुगल बादशाह ने ही गुरु गोविन्द सिंह की हत्या करवाई है।
- बंदा बहादुर ने मुगलों के खिलाफ संघर्ष की घोषणा किया उसी संघर्ष के दौरान मुगल बादशाह बहादुर शाह प्रथम मारा गया।
- कालांतर में मुगल बादशाह फरूखशियर ने बंदा बहादुर की हत्या कर दी। तदपश्चात् सिख धर्म का उत्कर्ष रूक सा गया।
- जब दिल्ली पर विदेशी आक्रमण कारी नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली लगातार आक्रमण करने लगे तो मुगल बादशाह अपना पूरा ध्यान विदेशी आक्रमण कर लगाया। इसका लाभ सिखों ने उठाया और फिर से सिख धर्म का उत्कर्ष होने लगा। सिख धर्म का उत्कर्ष कपूर सिंह के नेतृत्व में हो रहा था। कपूर सिंह ने दल खालसा का निर्माण किया।
- दल खालसा सिखों को बाह्य आक्रमण से बचाने के लिए राखी प्रथा की शुरूआत किया जिसके अंतर्गत सिख धर्म के लोगों से उसके फसल उत्पादन का 1/5 भाग लिया जाता था।
- कपूर सिंह के बाद दल खालसा का नेतृत्व जस्सा सिंह अहलूवालिया ने संभाला। इन्हीं के समय सिख धर्म 12 मिसल में बैंट गया था।
- मिसल एक अरबी भाषा का शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ समान होता है।
- 12 मिसलों में सबसे प्रमुख मिसल बनकर सुकरचकिया मिसल उभरा। इस मिसल के संस्थापक चरत सिंह हुए। चरत सिंह के बाद इस मिसल का नेतृत्व महा सिंह ने किया। महासिंह के बाद इस मिसल का नेतृत्व रंजीत सिंह ने किया।
- रंजीत सिंह का जन्म 1780 ई. में सुकर चकिया मिसल के प्रमुख महासिंह के यहाँ हुआ। महासिंह का निधन 1792 ई. में हुआ। तदपश्चात् मात्र 12 वर्ष की अवस्था में रंजीत सिंह सुकर चकिया मिसल का प्रमुख बना।

## रंजीत सिंह

- रंजीत सिंह ने पंजाब में सिख राज्य की स्थापना किया तथा उन्होंने अपनी राजधानी लाहौर को बनाकर शासन प्रशासन करना शुरू किया।
- रंजीत सिंह ने अपने साम्राज्य को चार प्रांत में बांटा था। जो निम्न है-
  1. कश्मीर, 2. मुल्तान, 3. पेशावर, 4. लाहौर
- रंजीत सिंह का विदेश मंत्री फकीर अजीजउद्दीन तथा वित्त मंत्री दीनानाथ था।
- रंजीत सिंह की सेना उस समय एशिया महादेश की दूसरी सबसे बड़ी सेना थी। साथ ही साथ रंजीत सिंह की सेना यूरोपीय पद्धति पर प्रशिक्षित सेना थी।
- फ्रांसीसी यात्री विक्टर जाकमाँ ने रंजीत सिंह की तुलना नेपालियन से किया है।
- रंजीत सिंह को राजा की उपाधि अफगानिस्तान के शासक जमानशाह ने दिया है।
- अफगानिस्तान के शासक शाहशुजा ने रंजीत सिंह को कोहिनूर हीरा सौंपा है।
- रंजीत सिंह अपने राज्य के सुरक्षा के मध्यनजर अंग्रेजों के साथ 1809 ई. में अमृतसर की संधि किया। अमृतसर की संधि के तहत सतलुज नदी को रंजीत सिंह और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के राज्य का सीमा निर्धारित किया गया और कहा गया कि सतलुज नदी से पूरब रंजीत सिंह की सेना नहीं जाएगी और सतलुज नदी से पश्चिम ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना नहीं जाएगी। इस संधि में अंग्रेजों की तरफ से भाग चार्ल्स मेंटकॉफ ने लिया था।
- रंजीत सिंह ने कहा है कि ईश्वर ने उनका एक आँख इसलिए ले लिया ताकि वे एक ही निगाह से सभी धर्मों को समान रूप में देख सकें।
- रंजीत सिंह का निधन 1839 ई. में हो गया।
- रंजीत सिंह का उत्तराधिकारी उसका बेटा खड़ग सिंह बना। खड़ग सिंह का उत्तराधिकारी उसका बेटा नौनिहाल सिंह बना। नौनिहाल सिंह का उत्तराधिकारी शेर सिंह जो रंजीत सिंह का बेटा था। शेर सिंह का उत्तराधिकारी दिलीप सिंह बना। दिलीप सिंह भी रंजीत सिंह का ही बेटा था।
- पंजाब के सिख राज्य के अंतिम शासक दिलीप सिंह हुए।
- दिलीप सिंह के समय में ही प्रथम आंग्ल सिख युद्ध और द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध हुआ।
- प्रथम आंग्ल सिख युद्ध 1845-46 ई. में हुआ है। इस युद्ध के समय भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड हार्डिंग प्रथम था। इस युद्ध की समाप्ति 1846 ई. में हुए लाहौर के संधि के तहत हुआ है।
- 1846 ई. में भैरोवाल की संधि हुई जिसके तहत दिलीप सिंह के राज्य में ब्रिटिश सेना रखे जाने का प्रावधान किया गया।
- द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध 1848-49 ई. के दौरान हुआ है। इस युद्ध को तोपों की लड़ाई भी कही जाती है। इस युद्ध के दौरान रामनगर का युद्ध, चिलियावाला का युद्ध, गुजरात का युद्ध इत्यादि हुआ है।
- इस युद्ध में अंतिम तौर पर अंग्रेजों की जीत हुई। इस समय भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी थे।
- लॉर्ड डलहौजी ने 1849 ई. में पंजाब को जीतकर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।
- लॉर्ड डलहौजी दिलीप सिंह से कोहिनूर हीरा लेकर ब्रिटिश महारानी Victoria को भेज दिया।
- दिलीप सिंह को पेंशन देकर शिक्षा ग्रहण करने हेतु लंदन भेज दिया गया।
- दिलीप सिंह कुछ वर्षों के लिए इसाई धर्म को अपनाया था। उनका निधन भारत नहीं बल्कि पेरिस में हुआ।



### 3. बंगाल के गवर्नर, गवर्नर जनरल तथा भारत के गवर्नर जनरल और वायसराय

- भारत में ब्रिटिश प्रभुसत्ता की स्थापना 1757 ई. के पलासी के युद्ध से हुआ माना जाता है। ब्रिटिश प्रभुसत्ता की स्थापना के बाद ब्रिटिशों ने भारत में शासन प्रशासन चलाने को लेकर बंगाल के गवर्नर के पद का सृजन किया।
- First Governor of Bengal 'Robert Clive' बने वहीं Last Governor of Bengal 'Warren Hastings' बने।
- 1773 के Regulating Act के तहत बंगाल के गवर्नर के कार्य अधिकार शक्ति में इजाफा किया गया और उसका पदनाम बदलकर बंगाल का गवर्नर जनरल कर दिया गया।
- बंगाल का प्रथम गवर्नर जनरल 'Warren Hastings' बने वहीं बंगाल के अंतिम गवर्नर जनरल 'Lord William Bentick' बने।
- 1833 के चार्टर एक्ट के तहत बंगाल के गवर्नर जनरल का पदनाम बदलकर भारत का गवर्नर जनरल कर दिया गया।
- भारत का प्रथम गवर्नर जनरल 'Lord William Bentick' बने वहीं भारत के अंतिम 'Governor General Lord Canning' बने।
- 1858 के भारत परिषद् अधिनियम के तहत भारत के गवर्नर जनरल का पदनाम बदलकर भारत का वायसराय कर दिया गया।
- भारत का प्रथम वायसराय लॉर्ड कैनिंग बना तो वहीं भारत का अंतिम वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन बना।
- आजादी के बाद भारत के वायसराय का पदनाम बदलकर स्वतंत्र भारत का गवर्नर जनरल कर दिया गया।
- स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल लॉर्ड माउंटबेटन बना वहीं स्वतंत्र भारत के प्रथम एवं अंतिम भारतीय गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी बने।

### बंगाल का गवर्नर (1757-73)

#### ROBERT CLIVE (1757-60 & 1765-67)

- ये कंपनी के अधीन सेवा में क्लर्क के तौर पर शामिल हुए लेकिन अपनी योग्यता और दुरदर्शिता के बल पर इन्होंने कंपनी के अधीन सर्वोच्च पद को प्राप्त किया।
- इन्हें हीरो ऑफ अरकाट कहा जाता है। इन्होंने ही प्लासी के युद्ध में अंग्रेजी कंपनी का नेतृत्व किया और जीत दिलाया। इन्हें भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक माना जाता है।
- इंग्लैंड के PM William Pitt ने रॉबर्ट क्लार्क को स्वर्ग से उत्पन्न सेना नायक की उपाधि दिया।
- रॉबर्ट क्लार्क ने 1765 के इलाहाबाद के संधि के तहत अंग्रेजी कंपनी को बिहार, बंगाल उड़ीसा में कर वसूलने का अधिकार दिलवाया।
- क्लार्क ने कर की वसूली को लेकर बंगाल का उपदीवान मुहम्मद रजा खाँ, बिहार का उपदीवान राजा शिताब राय और उड़ीसा का उपदीवान राय दुर्लभ को बनाया।

**Note:-** बंगाल में द्वैध शासन रॉबर्ट क्लार्क ने लागू किया। बंगाल में 1765 ई. से 1772 ई. तक द्वैध शासन लागू रहा।

### वेन्सिटार्ड (1760-64)

- इनके समय 1764 ई. में बक्सर का युद्ध हुआ है।

### बरेलास्ट (1767-69)

- इनके समय 1767-1769 ई. के दौरान प्रथम आंग ऐसूर युद्ध हुए हैं।

## कर्टियर (1769-72)

- उनके समय 1770 ई. में बंगाल में प्रथम बड़ा आकाल पड़ा है।

## वारेन हैस्टिंग्स (1772-73)

- ये बंगाल के अंतिम गवर्नर बने। इन्होंने बंगाल में द्वैध शासन को समाप्त कर दिया।

## बंगाल के गवर्नर जनरल (1773-1833)

### ● वारेन हैस्टिंग्स (1772-1785)

- ❖ वारेन हैस्टिंग्स ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी में सर्वप्रथम एक कलर्क के तौर पर शामिल हुआ लेकिन अपनी योग्यता के बल पर वो कासिम बाजार का अध्यक्ष बना और बाद के बर्षों में बंगाल का गवर्नर और गवर्नर जनरल बना।
- ❖ वारेन हैस्टिंग्स के समय होनेवाले प्रमुख युद्ध निम्न हैं-
  - I. 1775-1782 ई. के दौरान प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध हुआ। इस युद्ध की समाप्ति 1782 ई. में हुए सालबाई के संधि के तहत हुआ।
  - II. 1780-1784 ई. के दौरान द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध हुआ इस युद्ध की समाप्ति 1784 ई. में हुए मैंगलोर की संधि के तहत हुआ।
  - III. 1781 ई. में पोर्टोनोवा का युद्ध हुआ।
- ❖ Carl Marx ने धर्म को अफीम कहा है।
- ❖ ब्रिटिश भारतीय धर्म ग्रंथों को समझना चाहता था इसलिए वारेन हैस्टिंग्स के समय भारतीय धर्म ग्रंथ का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद होना प्रारंभ हुआ।
- ❖ वारेन हैस्टिंग्स के समय निम्न धर्म ग्रंथों का अंग्रेजी में अनुवाद हुआ।
  - I. आधुनिक विधि के निर्माता मनु के द्वारा रचित मनु स्मृति का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद विलियम जॉन्स ने A code of Zantoo Laws नाम से किया।
  2. कालीदास की रचना अभिज्ञान शकुंतलम का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद विलियम जॉन्स ने किया।
  3. भागवत गीता का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद विलियम विल्कन्सन ने किया।
- ❖ Warren Hastings के समय ही जेम्स आगस्टस हिक्की के द्वारा भारत का प्रथम समाचार पत्र 'द बंगाल गजट' 1780 ई. में प्रकाशित किया गया।
- ❖ Warren Hastings के समय 1784 ई. में Wilian Johns ने कलकत्ता में The Asiatic Society of Bengal की स्थापना किया।
- ❖ Warren Hastings ने मुस्लिम शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 1781 ई. में कलकत्ता में प्रथम मदरसा की स्थापना किया।
- ❖ Warren Hastings ने ब्रिटिश सरकार की खजाना को मुर्शिदाबाद से स्थानांतरित कर कलकत्ता ले गया।
- ❖ Warren Hastings कर की वसूली को लेकर इजारेदारी प्रथा या Farming System या ठेकेदारी प्रथा को अपनाया।
- ❖ पड़ोसी राज्यों को लेकर Warren Hastings ने Ring of Fence या घेरे की नीति को अपनाया।
- ❖ Warren Hastings ने कर की वसूली करने को लेकर Board of Revenue (राजस्व बोर्ड) का गठन किया और पांच अलग-अलग शहरों में चुंगी घर (Tax Office) बनवाया।

1. ढाका, 2. पटना, 3. कलकत्ता, 4. हुगली, 5. मुर्शिदाबाद।

- ❖ Warren Hastings के समय में ही 1774 ई. में कलकत्ता में सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की गई।
- ❖ Warren Hastings ने नंद कुमार नामक निर्दोष ब्राह्मण को गलत आरोप में फँसाकर फांसी पर लटका दिया। इस हत्याकांड को न्यायिक हत्या की संज्ञा दी जाती है।
- ❖ Warren Hastings के समय में ही 1784 का Pitt's India Act पारित हुआ। इस एक्ट का विरोध करते हुए Warren Hastings ने पद से त्याग-पत्र दे दिया और लंदन वापस लौट गए। लंदन में एडमंड बर्क नामक संसद के द्वारा Warren Hastings पर महाभियोग चलाया गया लेकिन 1795 ई. में उन्हें सभी आरोपों से मुक्त घोषित कर दिया गया।

### ● सर जॉन मैंकफरसन (1785-86)

- ❖ इसे अस्थायी गवर्नर जनरल बनाकर भेजा गया था।

### ● लॉर्ड कार्नवालिस (1786-93)

- ❖ लॉर्ड कार्नवालिस अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में ब्रिटेन के तरफ से भाग लिया था। लेकिन उसमें ब्रिटिशों की हार हुई थी। तदपश्चात् लॉर्ड कार्नवालिस को बंगाल का गवर्नर जनरल बनाकर भारत भेजा गया।
- ❖ कार्नवालिस ने भारत में आक्रामक नीति अपनाई। इन्हीं के समय 1790-1792 ई. के दौरान तृतीय अंगूल मैसूर युद्ध हुआ जिसमें कार्नवालिस ने टीपू सुल्तान को पराजित किया और युद्ध जीतने के बाद कार्नवालिस ने कहा कि “मैंने अपने मित्र को शक्तिशाली बनाए बगैर ही अपने शत्रु को पंगु बना दिया।”
- ❖ कार्नवालिस ने भारत में शासन चलाने को लेकर कानूनों का एक संहिता तैयार किया जिसे कार्नवालिस संहिता कहा गया। यह संहिता शक्ति के पृथकरण के सिद्धांत पर आधारित था।

- ❖ कार्नवालिस ने कर की वसूली को लेकर 1793 ई. में अस्थायी बंदोबस्त लागू किया। इस बंदोबस्त के अंतर्गत कर की वसूली जमींदार किया करता था। जिस कारण इसे जमींदारी प्रथा भी कहा जाता है। साथ ही साथ इसे इस्तमरारी व्यवस्था या Permanent Settlement भी कहा जाता है।

सूर्योस्त कानून का संबंध स्थाई बंदोबस्त से ही है। सूर्योस्त कानून की चर्चा तारा शंकर बंधोपाध्याय ने अपनी रचना गणदेवता में किया है।

स्थायी बंदोबस्त के अंतर्गत किसान और कंपनी के राजकोष के बीच जमींदार जैसे बिचौलिया हुआ करता था। इस व्यवस्था में यह तय नहीं था कि जमींदार किसानों से कितना कर की वसूली करेगा। लेकिन जमींदार किसान से जितना कर की वसूली करता था उसका 90 प्रतिशत कंपनी के राजकोष में दे देता था तथा 10 प्रतिशत अपने पास रखता था।

स्थायी बंदोबस्त संपूर्ण ब्रिटिश शासित क्षेत्र के 19 प्रतिशत भू-भाग पर लागू था।

यह बंदोबस्त बिहार, बंगाल और उड़ीसा के क्षेत्र में लागू था।

- ❖ लॉर्ड कार्नवालिस ने जिला में थाना का गठन किया और थाना में दारोगा की नियुक्ति किया।
- ❖ लॉर्ड कार्नवालिस को भारत में नागरिक सेवा का जनक माना जाता है।

### ● सर जॉन शोर (1793-1798)

- ❖ इन्होंने अपने शासन काल के दौरान प्रशासनिक क्षेत्र में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई।

इनके समय इलाहाबाद को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया गया। इन्हीं के समय 1795 ई. में खुर्दा का युद्ध हैदराबाद के निजाम और मराठा पेशवा के बीच हुआ। इस युद्ध में मराठा पेशवा की जीत हुई।

- ❖ सर जॉन शोर ने ही स्थायी बंदोबस्त का प्रारूप तैयार किया था।

### ● लॉर्ड वेलेजली (1798-1805)

- ❖ यह अपने आप को बंगाल का शेर कहा करता था। इनके समय ही 1799 ई. में चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध हुआ। जिसमें टीपू सुल्तान मारा गया। तदपश्चात् मैसूर को जीतकर 1799 ई. में ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।
- ❖ इन्होंने ही 1800 ई. में कलकत्ता में फोर्ड विलियम कॉलेज की स्थापना की। इनके समय में ही 1803 ई. में दिल्ली पर आक्रमण कर दिल्ली को जीत लिया गया और उसे ब्रिटिश साम्राज्य में मिलालिया गया।
- ❖ लॉर्ड वेलेजली एक साम्राज्यवादी गर्वनर जनरल हुआ। इन्होंने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार को लेकर जो नीति अपनाई उसे सहायक संधि कहा गया। वेलेजली से पहले भारत में सहायक संधि का प्रयोग फ्रांसीसी गर्वनर डूप्ले ने किया था।
- ❖ वेलेजली द्वारा जारी किए गए सहायक संधि पर हस्ताक्षर करने वाला प्रथम राज्य हैदराबाद का निजाम बना जिसने 1798 ई. में सहायक संधि पर हस्ताक्षर किया। मैसूर और तंजौर ने 1799 ई. में, अवध 1801 ई. में, पेशवा 1802 ई. में, बरार और भोसले 1803 ई. में, सिंधिया 1804 ई. में सहायक संधि पर हस्ताक्षर किया।

**Note:-** Indore के होल्कर शासक ने सहायक संधि पर हस्ताक्षर नहीं किया।

- ❖ लॉर्ड वेलेजली के कार्यकाल की समाप्ति के बाद कॉर्नवालिस पुनः बंगाल का गर्वनर जनरल बन कर आया। लेकिन शीघ्र ही उनका निधन हो गया और फिर उन्हें उत्तरप्रदेश के गाजीपुर में दफना दिया गया।

### ● सर जॉर्ज वार्ले (1805-1807)

- ❖ इनके समय की सबसे बड़ी घटना 1806 ई. में होने वाला वेल्लोर का सिपाही विद्रोह है। यह विद्रोह वेल्लोर के सिपाहियों ने इसलिए किया क्योंकि अंग्रेजों ने सिपाहियों को माथा पर टीका लगाने और कान में बलिया पहनने पर प्रतिबंध लगा दिया।
- ❖ इस विद्रोह के समय मद्रास के गर्वनर लॉर्ड विलियम बैटिक थे जिन्होंने विद्रोह को दबा दिया।

### ● लार्ड मिण्टो-I (1807-1813)

- ❖ इनके समय की प्रमुख घटनाएँ 1809 ई. में हुए अमृतसर की संधि है। यह संधि रंजीत सिंह और चाल्स मेंटकॉफ के बीच हुआ था। इन्हीं के समय 1813 ई. का चार्टर एक्ट पारित हुआ था।

### ● लार्ड हेस्टिंग्स (1813-1823)

- ❖ यह एक साम्राज्यवादी गर्वनर जनरल था। इन्होंने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार को लेकर जो नीति अपनाई उसे Forward Policy या विस्तारवादी नीति कहा गया। इन्होंने मराठों के सबसे बड़े सहयोगी पिंडारियों का दमन किया। यही घटना तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध का तत्कालिक कारण बना। इन्हीं के समय 1816 ई. से 1819 ई. के दौरान तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध हुआ। इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत हुई। इन्होंने संपूर्ण मराठा शासित क्षेत्र को जीतकर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। इन्हीं के समय 1814-1816 ई. के दौरान आंग्ल नेपाल युद्ध हुआ। इस युद्ध की समाप्ति 1816 ई. में हुए सुंगोली की संधि के तहत हुई।

### ● लार्ड एमहर्स्ट (1823-28)

- ❖ लार्ड एमहर्स्ट के शासनकाल के दौरान ही 1824-1826 ई. के दौरान प्रथम आंग्ल वर्मा युद्ध हुआ। इस युद्ध की समाप्ति 1826 ई. में हुए थे। यान्दूब की संधि के तहत हुआ।  
इस युद्ध के शुरूआत के समय बंगाल के बैरकपुर के सिपाहियों ने वर्मा जाने के प्रश्न पर 1824 ई. में विद्रोह कर दिया जिसे बैकरपुर का सिपाही विद्रोह कहा जाता है।  
इस विद्रोह को अंग्रेजों ने आसानी से दबा दिया। उस समय समुद्र पार करना पाप माना जाता था। इसलिए समुद्र पार कर वर्मा जाने के प्रश्न पर सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया।

### ● लार्ड विलियम बैटिक (1828-1835)

- ❖ ये एक साम्राज्यवादी और सुधारवादी गवर्नर जनरल हुए। ये सबसे पहले मद्रास के गवर्नर बनाए गए बाद में बंगाल के गवर्नर जनरल बनाए गए और अंततः 1833 के चार्टर एक्ट के तहत भारत के प्रथम गवर्नर जनरल बने।
- ❖ इन्हें सुधारवादी गवर्नर जनरल इसलिए माना जाता है क्योंकि इन्होंने भारतीय समाज सुधारक राजा राममोहन राय के सहयोग से 1829 ई. में कानून बनाकर सती प्रथा को समाप्त कर दिया तथा कर्नल स्लीमैन की सहायता से 1830 ई. में ठगी प्रथा का अंत कर दिया। ठग लोग देवी काली की पूजा किया करते थे।
- ❖ इन्हें साम्राज्यवादी गवर्नर जनरल इसलिए माना जाता है क्योंकि इन्होंने मैसूर, कुर्ग कछार जैसे क्षेत्रों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया।
- ❖ इन्होंने ही कलकत्ता मेडिकल कॉलेज की नींव रखी। इन्हीं के समय मैकाले आयोग की सिफारिस पर 1835 ई. से भारत में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी को बनाया गया।
- ❖ ऐसा माना जाता है कि मैकाले के 1835 ई. के स्मरण पत्र से भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव पड़ी है।
- ❖ विलियम बैटिक के समय ही 1834 ई. में लॉर्ड मैकाले की अध्यक्षता में प्रथम विधि आयोग का गठन हुआ।

### ● चार्ल्स मेंटकॉफ (1835-36)

- ❖ इन्होंने भारतीय प्रेस पर लगे सभी प्रकार के प्रतिबंध को समाप्त कर दिया जिस कारण इन्हें भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता कहा जाता है।

### ● लार्ड ऑक्टलैण्ड (1836-42)

- ❖ इनके समय में ही मैंड ट्रंक रोड का मरम्मत करवाया गया।
- ❖ इन्हीं के शासनकाल के समय मेडिकल की तैयारी करने वाले भारतीय छात्रों को ब्रिटिश संसद ने विदेश जाने की अनुमति प्रदान की।
- ❖ इन्हीं के समय 1839 ई. से 1842 ई. के दौरान प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध हुआ जिसमें जगह-जगह ब्रिटिशों की हार हो रही थी। इसलिए लॉर्ड ऑक्टलैण्ड को वापस ब्रिटेन बुला लिया गया और उनके स्थान पर अगला गवर्नर जनरल बनाकर लॉर्ड एलनबरो को भेजा गया।

### ● लार्ड एलनबरो (1842-44)

- ❖ इन्हीं के नेतृत्व में प्रथम आंग्ल-अफगान में अंग्रेजों की जीत हुई।  
इन्होंने सिंध को जीतकर ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया। इन्हीं के समय 1843 ई. में दास प्रथा का अंत हुआ।
- ❖ इन्हीं के शासनकाल से रविवार को छूटदी देने के प्रथा की शुरूआत हुई।

### ● लार्ड हार्डिंग-I (1844-48)

- ❖ इनके समय की सबसे महत्वपूर्ण घटना प्रथम आंग्ल सिख युद्ध है। यह युद्ध 1845-46 में हुआ था।
- ❖ इस युद्ध की समाप्ति 1846 ई. में हुए लाहौर की संधि के तहत हुआ। इन्होंने ओडिशा में रहनेवाली खोंड जनजाति में प्रचलित नरबली प्रथा को समाप्त किया। नरबली प्रथा एक ऐसी प्रथा थी जिसके अंतर्गत खोंड जनजाति के लोग अपने देवी देवता को खुश करने के लिए सुंदर, स्वस्थ और विद्वान मानव की बली देता था।

### ● लार्ड डलहौजी (1848-56)

- ❖ डलहौजी एक साम्राज्यवादी और सुधारवादी गवर्नर जनरल हुआ करता था। इनका वास्तविक नाम James Andrew Brown Ramsay (जेम्स एंड्र्यू ब्राउन रैम्से) था।

इन्होंने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का सबसे ज्यादा विस्तार किया। इन्होंने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार को लेकर जो नीति अपनाई उसे गोद निषेध प्रथा/राज्य हड़प नीति/अपहरण की नीति/व्यपगत सिद्धांत/Doctrine of Lapse कहा जाता है।

वैसी नीति जिसके तहत देशी रियासत के राजा महाराज को पुत्र गोद नहीं लेने की घोषणा की गई। इसे ही गोद निषेध प्रथा कहा गया। इस नीति के तहत जिस राजा के अपने पुत्र नहीं होते थे उनके निधन होने के बाद उनके राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया जाता था।

राज्य हड़प नीति का पहला शिकार 1848 ई. में सतारा बना। 1849 ई. में जैतपुर और संबलपुर, 1850 ई. में बघाट, 1852 ई. में उदयपुर, 1853 ई. में झांसी, 1854 ई. में नागपुर को जीतकर गोद निषेध प्रथा के तहत ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया गया।

- ❖ 1855 ई. में गोद निषेध प्रथा के तहत राजस्थान के करौली को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया गया लेकिन Board of Controller ने स्वीकृति देने से इंकार कर दिया।
- ❖ James Outram (जेम्स आउट्रम) के रिपोर्ट को आधार बनाते हुए कुशासन का आरोप लगाकर लॉर्ड डलहौजी ने 1856 ई. में अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया।
- ❖ लार्ड डलहौजी के समय द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध 1848-1849 ई. के दौरान हुए। इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत हुई तथा डलहौजी ने 1849 ई. में सिख शासित क्षेत्र पंजाब को जीतकर ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया।
- ❖ डलहौजी के समय में ही 1851-52 ई. में द्वितीय आंग्ल-वर्मा युद्ध हुआ।
- ❖ डलहौजी के समय में ही पहली बार भारत के महाराष्ट्र राज्य में 16 अप्रैल 1853 को मुंबई से पुणे के बीच 34 किमी. में रेलगाड़ी चला। भारत में रेलवे का जनक/पिता कहा जाता है।
- ❖ डलहौजी के समय में ही 1854 ई. में पहली बार डाक घर अधिनियम पारित हुआ। डलहौजी के समय में ही 1854 ई. में शिक्षा के क्षेत्र में Wood Dispatch (वुड डिस्पैच) आया जिसे शिक्षा के क्षेत्र में मैग्नाकार्टा कहा जाता है।
- ❖ डलहौजी ने अपनी ग्रीष्मकालीन राजधानी शिमला को बनाया।
- ❖ डलहौजी ने मराठा पेशवा को पेंशन देना बंद कर दिया।
- ❖ डलहौजी के समय में ही 1855-56 ई. में संथाल विद्रोह हुआ।

### ● लार्ड कैनिंग (1856-62)

- ❖ लॉर्ड कैनिंग भारत के अंतिम गवर्नर जनरल तथा प्रथम वायसराय बना है।

- ❖ इनके समय में ही 1857 ई. का विद्रोह हुआ।
- ❖ इनके समय में ही Wood Dispatch के सिफारिश पर लंदन युनिवर्सिटी के तर्ज पर मुंबई, मद्रास और कलकत्ता में विश्वविद्यालय का गठन किया गया।
- ❖ इन्हीं के समय 1856 ई. में हिन्दू विधवा पुर्नविवाह अधिनियम पारित हुआ। इस अधिनियम के तहत हिन्दू धर्म की विधवा महिलाओं को विवाह करने का अधिकार दिया गया। इस अधिनियम को पारित करवाने में भारतीय समाज सुधारक ईश्वर चंद विद्यासागर का अहम योग्यदान रहा है।

## भारत का वायसराय

### ● लॉर्ड कैनिंग (1858-62)

- ❖ लॉर्ड कैनिंग के समय 1858 ई. का भारत परिषद् अधिनियम पारित हुआ। जिसके तहत भारत से ब्रिटिश कंपनी के शासन का अंत कर दिया गया तथा भारत में प्रत्यक्ष तौर पर ब्रिटिश ताज के शासन की स्थापना की गई।
- ❖ इन्हीं के समय 1860 ई. में भारतीय दंड संहिता अधिनियम पारित हुआ।
- ❖ इन्हीं के समय 1860 ई. में भारत में जेम्स विलसन के द्वारा बजट पहली बार पेश किया गया। साथ ही साथ भारत में आयकर लागू किया गया।
- ❖ इन्हीं के समय 1861 ई. का भारत परिषद् अधिनियम पारित हुआ। जिसके तहत भारत में पोर्ट फालियो प्रणाली की शुरूआत हुई।

### ● लॉर्ड एलिन (1862-64)

- ❖ इनके द्वारा किया गया सबसे प्रमुख काम बहावी आंदोलन का दमन किया जाना है।
- ❖ इन्हीं के समय 1862 ई. में मुंबई, मद्रास, और कलकत्ता में हाई कोर्ट का गठन हुआ।

### ● लॉर्ड जॉन लॉरेंस (1864-69)

- ❖ इनके समय 1865 ई. में भूटान युद्ध हुआ।
- ❖ इन्होंने अफगानिस्तान के साथ अहसतक्षेप की नीति अपनाई जिसे इतिहास में शानदार निष्क्रियता का सिद्धांत कहा जाता है।
- ❖ इन्हीं के समय 1866 ई. में उड़ीसा में भयंकर अकाल पड़ा था।
- ❖ इन्हीं के समय 1866 ई. में इलाहाबाद होर्ड्कोर्ट का गठन हुआ था।

### ● लॉर्ड मेयो (1869-72)

- ❖ इन्होंने भारतीय युवराजों को शिक्षा देने के उद्देश्य से राजस्थान के अजमेर में मेयो कॉलेज की स्थापना किया। इन्होंने कृषि विभाग का गठन किया।
- ❖ इन्हीं के समय में भारत में पहली बार 1872 ई. में जनगणना हुई।
- ❖ इन्होंने आर्थिक विकेन्द्रीकरण की नीति प्रारंभ की।
- ❖ ये एक ऐसे वायसराय हुए जिनका पद पर रहते हुए हत्या किया गया। इनकी हत्या 1872 ई. में पोर्ट ब्लेयर में शेर अलीर अफरीदी नामक एक अफगानी ने किया।

### ● लॉर्ड नॉर्थबुक (1872-76)

- ❖ इनके समय पंजाब में कूका आंदोलन हुआ था जिसे इन्होंने दबा दिया।
- ❖ इन्हीं के समय स्वेज कैनेल के खुलने के कारण भारत और यूरोप के बीच दूरी में कमी हुई जिस कारण इंडिया और यूरोप के बीच व्यापार में वृद्धि हुई।

- ❖ इन्हीं के समय 1872 ई. में विवाह के न्यूनतम उम्र को निर्धारित करने को लेकर नेटिव मैरिज एक्ट पारित हुआ जिसके तहत लड़का के विवाह कम से कम 18 वर्ष और लड़की के विवाह का कम से कम 14 वर्ष उम्र निर्धारित किया गया।
- ❖ इन्हीं के समय Baroda के मल्हारराव गायकवाड़ को कुशासन का आरोप लगाकर गद्दी से हटा दिया गया। इन्हीं के समय 1875 ई. में सर सैय्यद अहमद खाँ ने Mohamden Anglo Oriental College की स्थापना किया। यहाँ कॉलेज वर्तमान में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के नाम से जानी जाती है।

## ● लॉर्ड लिटन (1876-1880)

- ❖ ये एक कवि और साहित्यकार था। इन्हें साहित्य के क्षेत्र में योगदान देने को लेकर ओवन मेरीडिथका उपनाम दिया गया है।
- ❖ इन्होंने Civil Service Competitive Examination में शामिल होने के उम्र को 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दिया।
- ❖ इनके समय 1878 ई. में Vernacular Press Act पारित हुआ। जिसके तहत भारतीय भाषा में छपने वाले समाचार पत्र पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
- ❖ इन्हीं के समय 1878 ई. में भारतीय शास्त्र अधिनियम पारित हुए जिसके तहत भारतीय लोगों से शास्त्र रखने के अधिकार छीन लिए गए।
- ❖ इन्हीं के समय 1 जनवरी 1877 ई. को प्रथम दिल्ली दरबार का आयोजन हुआ। इसके तहत Queen Victoria को कैशर-ए-हिंद की उपाधि प्रदान की गई।

## ● लॉर्ड रिपन (1880-84)

- ❖ ये भारत के सबसे लोकप्रिय वायसराय रहे हैं। कांग्रेस ने 1909 के वार्षिक अधिवेशन में Ripon को भारत का सबसे लोकप्रिय वायसराय घोषित किया। इस अधिवेशन की अध्यक्षता मदन मोहन मालवीय ने किया।
- ❖ इन्होंने सिविल सेवा प्रतियोगिता परीक्षा में शामिल होने के उम्र को घटाकर 19 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष कर दिया।
- ❖ इनके समय से ही 1881 ई. से भारत में नियमित रूप से जनगणना की शुरूआत हुई।
- ❖ इन्हें भारत में स्थानीय स्वशासन का जनक माना जाता है।
- ❖ इनके समय 1882 ई में Vernacular Press Act रद्द कर दिया गया जिस कारण फिर से भारतीय भाषा में समाचार पत्र छपने लगे।
- ❖ Florence Nightingale ने Ripon को भारत के उद्घारक की संज्ञा दिया है।
- ❖ Ripon के समय में ही 1881 ई. में प्रथम कारखाना अधिनियम आया जिसके तहत 7 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को कारखाना में काम करने को लेकर प्रतिबंधित कर दिया गया तथा यह भी प्रावधान किया गया कि 7 वर्ष से 12 वर्ष तक के बच्चों को 9 घंटा से ज्यादा कारखानों में काम करने को लेकर प्रतिबंधित कर दिया गया। ध्यान रहे कि प्रथम कारखाना अधिनियम नील उद्योग, कॉफी उद्योग और चाय उद्योग के क्षेत्र में लागू नहीं था।
- ❖ Lord Ripon ने इल्बर्ट बिल के जरिए भारतीय मूल के न्यायाधीशों को यह अधिकार दिया कि वो भी यूरोपीय लोगों के मामलों की सुनवाई कर सकता था। लेकिन इसको लेकर अंग्रेजों ने विरोध किया।

### ● लॉर्ड डफरिन (1884–88)

- ❖ लॉर्ड डफरिन के समय में ही 28 दिसंबर 1885 को INC की स्थापना मुंबई में हुई।
- ❖ इन्हीं के समय तृतीय आंगंल वर्मा युद्ध हुए। इस युद्ध के जरिए अंग्रेजों ने वर्मा को जीतकर अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया।
- ❖ इन्होंने कांग्रेस के द्वितीय सम्मेलन (1886, कलकत्ता) में भाग लेने वाले कांग्रेसी सदस्यों को भोजन करवाया जिसे गार्डेन पार्टी कहा जाता है।
- ❖ इन्होंने यह कहकर कांग्रेस का मजाक उड़ाया कि- “कांग्रेस अल्प जनसंख्या या सूक्ष्मदर्शी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाला संगठन है।”

### ● लॉर्ड लैन्सडाउन (1888–94)

- ❖ इनके समय में 1891 ई. में दूसरा कारखाना अधिनियम पारित हुआ। इस अधिनियम में यह प्रावधान किया गया कि एक दिन में महिलाएँ कारखाना में 11 घंटे से ज्यादा काम नहीं करेगी।
- ❖ यह भी प्रावधान किया गया कि सप्ताह में एक दिन मजदूरों को छूट्टी दिया जाएगा।
- ❖ इन्हीं के समय 1891 में सम्मति आयु अधिनियम पारित हुआ जिसके तहत लड़की के विवाह का कम से कम 14 वर्ष से घटाकर 12 वर्ष कर दिया गया। इसलिए बाल गंगाधर तिलक ने इस अधिनियम का विरोध किया।  
यह अधिनियम बहराम जी मालाबारी के प्रयास से पारित हुआ था।
- ❖ इन्हीं के समय 1892 का भारत परिषद् अधिनियम पारित हुआ।
- ❖ इन्हीं के समय 1893–94 ई. में भारत और अफगानिस्तान के बीच Durand Line खींचा गया था।
- ❖ यह रेखा वर्तमान में पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच सीमा बनाती है।

### ● लॉर्ड एलिन-II (1894–98)

- ❖ इनके समय प्लेग अधिकारी रैंड और अयरस्ट की हत्या चापेकर बंधु के द्वारा कर दी गई। यह भारत में अंग्रेजों की होने वाली प्रथम राजनैतिक हत्या मानी जाती है।
- ❖ इन्होंने कहा है कि भारत को तलवार के बल पर जीता गया है और इसकी रक्षा तलवार के बल पर ही की जा सकती है।
- ❖ इन्होंने भारत को ब्रिटिश साम्राज्य का धूरी बतलाते हुए कहा है कि भारत को ब्रिटिश साम्राज्य किसी भी शर्त पर छोना नहीं चाहता है। क्योंकि अगर ब्रिटिश साम्राज्य भारत खो देता है तो ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्य अस्त हो जाएगा।

### ● लॉर्ड कर्जन (1899–1905)

- ❖ सबसे अलोकप्रिय वायसराय लॉर्ड कर्जन हुए। इनकी अलोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण इनके द्वारा 1905 ई. में किए गए बंगाल का विभाजन है। इस घटना ने भारत में उग्र राष्ट्रीयता को जन्म दिया।
- ❖ गोपाल कृष्ण गोखले ने लॉर्ड कर्जन के कार्यों की समीक्षा करते हुए उन्हें आधुनिक भारत का औरंगजेब कहा है।
- ❖ लॉर्ड कर्जन की बायोग्राफी रोनॉल्ड्स नामक विद्वान ने लिखा है।
- ❖ कांग्रेस की आलोचना करते हुए कर्जन ने कहा है कि- “कांग्रेस की महल भड़भड़ा कर गिरने वाली है हमारी इच्छा है कि मैं कांग्रेस की मृत्यु में कांग्रेस का साथ दे सकूँ।”

- ❖ कलकत्ता नगर निगम की आलोचना करते हुए कर्जन ने कहा है कि- “मेरी इच्छा यह है कि मैं भारत के वायसराय पद से त्यागपत्र दे दूँ और कलकत्ता नगर निगम का मेयर बन जाऊँ।”
- ❖ भारतीय शिक्षा व्यवस्था की आलोचना करते हुए कर्जन ने कहा है कि पूरब के देशों के विश्वविद्यालय में छात्रों को डीग्रियाँ नहीं मिलती हैं।
- ❖ लॉर्ड कर्जन के समय टॉमस रैले की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग, एण्ड्रयू फ्रेजर की अध्यक्षता में पुलिस आयोग, मॉनक्रीफ की अध्यक्षता में सिंचाई आयोग, मैक डोनाल्ड की अध्यक्षता में अकाल आयोग का गठन किया।
- ❖ कर्जन के समय ही 1904 ई. में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित हुए।
- ❖ कर्जन 1903 ई. में फारस गए, फारस और अफगानिस्तान के बीच मामला सुलझाने को लेकर मैकमोहन को नियुक्त किया।
- ❖ केन्द्रीय गुप्तचर संस्था, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का गठन लॉर्ड कर्जन के समय ही हुआ था।
- ❖ लॉर्ड कर्जन सत्ता के केन्द्रीकरण और निरंकुश शासन के पक्षधर थे।
- ❖ बंगाल विभाजन के कारण लॉर्ड कर्जन और उस समय के ब्रिटिश सेनापति किचनर के बीच विवाद हो गया। जिस कारण अगस्त 1905 में लॉर्ड कर्जन अपने पद से त्यागपत्र देकर वापस लंदन चले गए।

### ● लॉर्ड मिण्टो-II (1905–1910)

- ❖ इनके समय की प्रमुख घटनाएँ निम्न हैं-
  - (i) बंगाल विभाजन के खिलाफ स्वदेशी या बंग-भंग आंदोलन हुआ।
  - (ii) मिण्टो-II की प्रेरणा से ही 1906 ई. ढाका में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई।
  - (iii) इन्हीं के समय 1907 में कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन सूरत में आयोजित हुए थे। इस अधिनियम के क्रम में कांग्रेस में पहली बार फूट पड़ी जिसे सूरत फूट कहा जाता है। कांग्रेस दो भाग गरम दल और नरम दल में बंट गया था।
  - (iv) इन्हीं के समय 1908 ई. में खुदीराम बोस को फांसी दी गई।
  - (v) इन्हीं के समय 1909 ई. का भारत शासन अधिनियम पारित हुआ। इस अधिनियम के तहत मुस्लिमों को पृथक निर्वाचन का अधिकार दिया गया।
  - (vi) लॉर्ड मिण्टो को भारत में संप्रदायिक निर्वाचन का जनक माना जाता है।

### ● लॉर्ड हार्डिंग-II (1910–1916)

- ❖ इनके समय की प्रमुख घटनाएँ निम्न हैं-
  - (i) तृतीय दिल्ली दरबार का आयोजन हुआ। (12 दिसंबर 1911)
  - (ii) बंगाल विभाजन रद्द हुआ।
  - (iii) बंगाल की पुर्नविभाजन हुआ और एक अलग प्रांत बिहार का गठन 22 मार्च 1912 को हुआ।
  - (iv) भारत की राजधानी कलकत्ता से स्थानांतरित कर दिल्ली को बनाया गया।
  - (v) जब हार्डिंग-II कलकत्ता से दिल्ली में प्रवेश कर रहे थे तो उनपर बम फेंका गया लेकिन वे बच गए।
  - (vi) इन्हीं के समय वर्ष 1914 ई. में प्रथम विश्व युद्ध की शुरूआत हुई।
  - (vii) इन्हीं के समय महात्मा गांधी का 9 जनवरी 1915 को दक्षिण अफ्रीका से भारत आगमन हुआ था।

### ● लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916–1921)

- ❖ इनके समय की प्रमुख घटनाएँ निम्न हैं-
  - (i) बाल गंगाधर तिलक और श्रीमती एनी बेसेंट के नेतृत्व में होम रूल लीग आंदोलन हुए।
  - (ii) वर्ष 1917 में गांधीजी के नेतृत्व में चंपारण सत्याग्रह हुए।
  - (iii) वर्ष 1918 में गांधीजी के नेतृत्व में अहमदाबाद मील मजदूर हड़ताल और खेडा सत्याग्रह का आयोजन हुआ।
  - (iv) वर्ष 1918 में प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति हुई।
  - (v) 13 अप्रैल 1919 को जलियावाला बाग हत्या कांड हुआ।
  - (vi) 1 अगस्त, 1920 को असहयोग आंदोलन की शुरूआत हुई।
  - (vii) 1919 का भारत शासन अधिनियम पारित हुआ।

### ● लॉर्ड रीडिंग (1921–26)

- ❖ यह एकमात्र यहूदी वायसराय था।
- ❖ इनके समय घटित होने वाली प्रमुख घटनाएँ निम्न हैं-
  - (i) इनके समय चौरी-चौरा कांड हुआ जिस कारण महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया। असहयोग आंदोलन के स्थगन का विरोध करते हुए मोतीलाल नेहरू और चीतरंजन दास ने वर्ष 1923 में स्वराज पार्टी का गठन किया।
  - (ii) असहयोग आंदोलन के स्थगन की वजह से ही क्रांतिकारियों का उदय हुआ। जैसे क्रांतिकारी ने 1924 ई. में हिंदुस्तान रिपब्लिक एसोशियसन नामक क्रांतिकारी संगठन का गठन किया गया।
  - (iii) इसी क्रांतिकारी संगठन के सदस्यों ने 9 अगस्त 1925 को काकोरी कांड को अंजाम दिया।

### ● लॉर्ड ईरविन (1926–31)

- ❖ लॉर्ड ईरविन के समय 8 नवंबर 1927 को लंदन में साइमन कमीशन आयोग का गठन किया गया।
- ❖ ईरविन ने यह सुझाव दिया कि साइमन कमीशन आयोग में एक भी भारतीय सदस्य को शामिल नहीं किया जाए।
- ❖ लॉर्ड ईरविन के समय में ही 3 फरवरी 1928 ई. को साइमन कमीशन आयोग का भारत में आगमन हुआ। यह आयोग काम करने के बाद अपना रिपोर्ट 1930 ई. में दिया।
- लॉर्ड ईरविन के समय में ही गुजरात में बारदोली सत्याग्रह सरदार पटेल के नेतृत्व में हुआ।
- ❖ इन्हीं के समय कांग्रेस ने वर्ष 1929 ई. के लाहौर अधिवेशन में अपना लक्ष्य पूर्ण स्वराज को घोषित किया।
- ❖ इन्हीं के समय महात्मा गांधी ने अंग्रेजी सरकार से 11 सूत्री मांग की जिसे स्वीकार नहीं किया गया। जिस कारण महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत की।
- ❖ इन्हीं के समय वर्ष 1930 ई. में प्रथम गोल मेज सम्मेलन हुए।
- ❖ लॉर्ड ईरविन और महात्मा गांधी के बीच 5 मार्च, 1931 ई. को एक समझौता हुआ जिसे गांधी-ईरविन समझौता कहा जाता है। इस समझौते के तहत कुछ समय के लिए सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित हुए।

### ● लॉर्ड वेलिंगटन (1931–36)

- ❖ इन्होंने कांग्रेस के 1915 के मुंबई अधिवेशन में भाग लिया।
- ❖ इनके समय वर्ष 1931 में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन और वर्ष 1932 में तृतीय गोलमेज सम्मेलन हुए।

- ❖ इनके समय जनवरी 1932 ई. में द्वितीय चरण के सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत हुई।
- ❖ इन्हीं के समय वर्ष 1934 ई. में सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित हुए।
- ❖ इन्हीं के समय बिहार में सबसे भयंकर भूकंप 1934 ई. में आया था।
- ❖ इन्हीं के समय 1935 का भारत शासन अधिनियम पारित हुआ।

### ● लॉर्ड लिनलियगो (1936–43)

- ❖ इनके समय प्रमुख होनेवाली घटना निम्न हैं-
  - (i) पहली बार प्रांतीय विधानसभा के चुनाव वर्ष 1937 में हुए।
  - (ii) 1939 ई. द्वितीय विश्व युद्ध की शुरूआत हुई।
  - (iii) इन्होंने अगस्त 1940 ई. में भारतीयों के समक्ष एक प्रस्ताव रखा जिसे अगस्त प्रस्ताव कहा गया।
  - (iv) इनके समय में ही महात्मा गांधी ने 17 अक्टूबर 1940 ई. में महाराष्ट्र के पवनार आश्रम से व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन की शुरूआत की।
  - (v) इन्हीं के समय मार्च 1942 ई. में क्रिप्स मिशन योजना का भारत आगमन हुआ था।
  - (vi) इन्हीं के समय 9 अगस्त, 1942 ई. में से भारत छोड़े आंदोलन की शुरूआत हुई।

### ● लॉर्ड वेवेल (1944–47)

- ❖ इनके समय की प्रमुख घटनाएँ निम्न हैं-
  - (i) इनके समय 1945 ई. में द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति हुई।
  - (ii) इन्हीं के समय फरवरी 1946 ई. में नौसैनिक विद्रोह हुए।
  - (iii) इन्हीं के समय मार्च 1946 ई. में कैबिनेट मिशन योजना का भारत आगमन हुआ।
  - (iv) इन्हीं के समय संविधान सभा का गठन हुआ।
  - (v) इन्हीं के समय 16 अगस्त, 1946 ई. में भारत में दंगा की शुरूआत हुई। दंगा लॉर्ड वेवेल से नहीं संभल रहा था जिस कारण उन्होंने ब्रिटेन के पी. एम. क्लीमेंट एटली के नाम खत लिखा और कहा कि हमलोगों के लिए बेहतर यही होगा कि भारत का भविष्य भारत के लोगों के भाग्य पर छोड़ कर वापस लंदन लौट आए।
  - (vi) इस घटना को ही इतिहास में ब्रेकडाइन पॉलिसी कहा जाता है।

### ● लॉर्ड माउंटबेटन (Feb. 1947–June 1948)

- (i) इन्हीं के समय 15 अगस्त, 1947 को भारत को आजादी मिली।
- (ii) इन्हीं के समय 14 अगस्त, 1947 को भारत का विभाजन हुआ। और पाकिस्तान का निर्माण हुआ।
- (iii) इन्हीं के समय 17 अगस्त, 1947 को भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा खींचा गया जिसे रेडक्लीफ कहा जाता है।
- (iv) इन्हीं के समय 30 जनवरी 1948 को नाथुराम गोडसे ने गोली मारकर महात्मा गांधी की हत्या कर दी।
- (v) लॉर्ड माउंटबेटन जब लंदन वापस चले गए तो गवर्नर जनरल के पद पर चक्रवर्ती राजगोलाचारी बैठे जो प्रथम एवं अंतिम भारतीय गवर्नर जनरल हुए।

❖ \* ❖ \*

## 4. ब्रिटिशों की आर्थिक नीति

### ● रैयतवाड़ी व्यवस्था

- ❖ रैयत का अर्थ किसान होता है।  
भू-राजस्व की वैसी व्यवस्था जिसमें किसान सीधे तौर पर कंपनी के राजकोष में जाकर भू-राजस्व जमा किया करता था। उसे ही रैयतवाड़ी व्यवस्था कहा गया।  
इस व्यवस्था में किसान और अंग्रेजी कंपनी के बीच कोई बिचौलिया नहीं हुआ करता था।
- ❖ भारत में रैयतवाड़ी व्यवस्था का जनक Tomas Mundo और Caption Reed को माना जाता है।
- ❖ रैयतवाड़ी व्यवस्था को सर्वप्रथम प्रायोगिक तौर पर 1792 ई. में मद्रास के बड़ा महल में लागू किया गया था।
- ❖ संपूर्ण ब्रिटिश शासित क्षेत्र के सबसे अधिक भू-भाग पर रैयतवाड़ी व्यवस्था ही लागू था। यह व्यवस्था लगभग 51 प्रतिशत भू-भाग पर लागू था।  
यह व्यवस्था दक्षिण भारत के अंतर्गत मुंबई, मद्रास प्रेसिडेंसी जैसे क्षेत्रों में लागू था।
- ❖ रैयतवाड़ी व्यवस्था 1820 ई. में संपूर्ण मद्रास के क्षेत्र में लागू किया गया था। मद्रास में इस व्यवस्था को सफल बनाने के उद्देश्य से Tomas Mundo को मद्रास का गवर्नर जनरल बनाया गया।
- ❖ Tomas Mundo इस पद पर 1820 ई. - 1827 ई. तक रहे हैं।
- ❖ रैयतवारी व्यवस्था 30 वर्षों के लिए लागू की गई थी। इस व्यवस्था में भू-राजस्व की दर उत्पादन का 1/3 भाग हुआ करता था।
- ❖ इस व्यवस्था में किसान तब तक भूमि का मालिक माना जाता था जब तक कि वो समय पर अंग्रेजों को भू-राजस्व जमा किया करता था।
- ❖ रैयतवाड़ी व्यवस्था ने अंग्रेजों को ही जर्मांदार बना दिया।

### ● महालबाड़ी व्यवस्था

- ❖ महाल का अर्थ गांव होता है।  
यह भू-राजस्व वसूली की एक ऐसी व्यवस्था थी जिसमें गांव के मुखिया किसानों से भू-राजस्व की वसूली करता था। और भू-राजस्व अंग्रेजी कंपनी के राजकोष में जमा कर दिया करता था।
- ❖ इस व्यवस्था का जनक हॉल्ट मैकेन्जी को माना जाता है।
- ❖ यह व्यवस्था विशेष तौर पर उत्तर भारतीय राज्य जैसे- पंजाब, उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में लागू था।
- ❖ यह व्यवस्था संपूर्ण ब्रिटिश शासित क्षेत्र के लगभग 30 प्रतिशत भू-भाग पर लागू था।

### ● इजारेदारी प्रथा (Farming System)

- ❖ यह व्यवस्था 1772 ई. में Warren Hastings के द्वारा भू-राजस्व की वसूली को लेकर अपनाया गया था।
- ❖ इस व्यवस्था के अंतर्गत कर की वसूली का अधिकार जर्मांदारों को न देकर ठेकेदारों को दिया गया और उन ठेकेदारों को कर वसूली का अधिकार दिया गया जो निलामी में सबसे अधिक बोली लगाया करता था।
- ❖ यह व्यवस्था शुरूआती दिनों में पांच वर्षों के लिए लागू की गई थी जिस कारण इस व्यवस्था को पंचवर्षीय व्यवस्था भी कहा गया है।

### ● स्थायी बंदोबस्ती

- ❖ राजा राममोहन राय और आर. सी. दत्त जैसे भारतीयों ने स्थायी बंदोबस्त का समर्थन किया। आर. सी. दत्त ने स्थायी बंदोबस्त को पूरे भारत वर्ष में लागू करने की सिफारिश की थी।

### ● तीनकठिया प्रथा

- ❖ यह प्रथा बिहार के चंपारण के क्षेत्र में नील की खेती करने वाले कृषकों को लेकर लागू किया गया था। इस प्रथा के अंतर्गत अंग्रेज जमांदार किसानों को 20 कट्ठा भूमि में से 3 कट्ठा भूमि पर नील की खेती करने को लेकर विवश किया करता था। इसे ही तीनकठिया प्रथा कहा गया।
- ❖ किसान नील की खेती नहीं करना चाहता था क्योंकि नील की खेती करने से खेत की उर्वरा शक्ति (Fertility) समाप्त हो जाती थी।  
और दूसरी बात यह थी कि जर्मनी में आर्टिफीसियल नील की खोज हो चुकी थी जिस कारण अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय नील की मांग कम पड़ गई थी।
- ❖ इस तीन कठिया प्रथा को समाप्त करवाने को लेकर ही महात्मा गांधी अप्रैल 1917 ई. में चंपारण आये और सत्याग्रह का आयोजन किए जिसे चंपारण सत्याग्रह कहा जाता है।  
चंपारण सत्याग्रह के दौरान लॉर्ड ईरविन ने महात्मा गांधी को खाना पर बुलाया था। ईरविन का खाना बनाने वाला बतख मियां था।  
ईरविन ने बतख मियां को गांधीजी के दूध में जहर मिलाने को कहा लेकिन बतख मियाँ गांधीजी के दूध में जहर नहीं मिलाया अर्थात् चंपारण सत्याग्रह के दौरान बतख मियां ने गांधीजी की जान बचाई।
- ❖ चंपारण सत्याग्रह के कारण ही तीनकठिया प्रथा का अंत हुआ।
- ❖ यह गांधीजी के द्वारा भारत में किया गया प्रथम सत्याग्रह है जो सफल रहा। इस सत्याग्रह की सफलता पर ही रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गांधीजी को महात्मा की उपाधि प्रदान की और गांधीजी ने रवीन्द्र नाथ टैगोर को गुरुदेव की उपाधि प्रदान की।

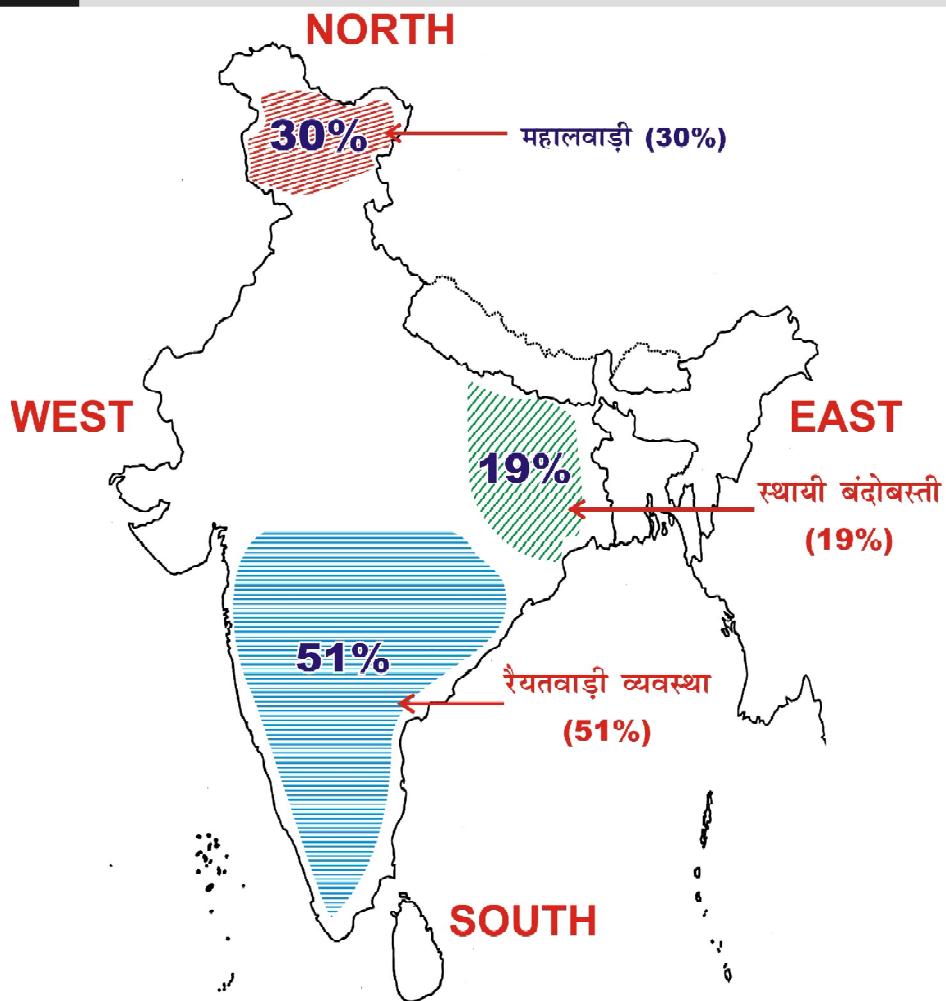
### ● ददनी प्रथा

- ❖ वैसी प्रथा जिसके अंतर्गत अंग्रेज भारतीय किसान, व्यापारी को अग्रिम राशि देकर करारनामा करा लेता था कि भारतीय किसान या व्यापारी उस वस्तु के अंग्रेजों के हाथ ही बेचेंगे।

### ● दुबला-हाली प्रथा

- ❖ यह प्रथा मुख्यतः पश्चिमी भारत में सूरत के क्षेत्र में लागू था। इस प्रथा का संबंध बंधुआ मजदूरी से रहा है। इस प्रथा के अंतर्गत कृषक, दास या गुलाम अपना और अपनी संपत्ति का मालिक अपने मालिक को ही मानता था।

**Note:-** भारत की संसद ने 1976 ई. में अधिनियम पारित कर बंधुआ मजदूरी को समाप्त कर दिया।



- ❖ अंग्रेजों ने भारत में शासन करते हुए रेलवे का विकास, उद्योगों का विकास, शिक्षा का विकास, प्रेस का विकास किया। लेकिन ध्यान रहे कि अंग्रेज अपने मनमुताबिक भारत में विभिन्न क्षेत्रों में विकास किया।
- ❖ भारत में रेलवे के विकास को लेकर विभिन्न विद्वानों की निम्न टिप्पणियाँ हैं।

**1. अर्नाल्ड़:-** इन्होंने कहा कि भारतीय रेलवे ने वह कर दिखाया जो काम अकबर और टीपू जैसे निरंकुश शासक नहीं कर पाए। भारतीय रेलवे ने भारत को एकीकृत किया।

**2. कार्ल मार्क्स:-** इनका मानना था कि अगर किसी देश में लोहा और कोयला मौजूद है और उस देश में तकनीक पहुँचा दिया जाए तो उस देश को आधुनिकीकरण करने से कोई नहीं रोक सकता है।

**3. बाल गंगाधर तिलक:-** अंग्रेजों द्वारा भारत में किया जाने वाला रेलवे का विकास उसी समान है जैसे दूसरों के पल्ली के अलंकार को देखकर खुश होना।

- ❖ भारत प्राचीन काल से सूती वस्त्रों का उत्पादन करने वाला देश रहा है। लेकिन अंग्रेज भारत से कच्चा माल ब्रिटेन को निर्यात कर देता था और ब्रिटेन में बने वस्त्रों को भारत लाकर उसका व्यापार करता था। इसी पर कुछ विद्वानों ने टिप्पणी की है जो निम्न है-

**1. Carl Marx:-** सूती वस्त्रों के घर को (भारत) विदेशी कपड़ों से भर दिया गया है।

**2. Lord William Bentick:-** बुनकरों की हड्डियों से भारत की भूमि सफेद हो गई है।

1757 ई. के प्लासी युद्ध से अंग्रेजों ने भारत में अपनी प्रभुसत्ता स्थापित किया तथा भारत को अपना उपनिवेशीवाद बनाया।

उपनिवेशवाद एक ऐसी विचारधारा है जिसमें एक देश अपने मातृ देश को लाभ पहुँचाने के लिए दूसरे देश पर अपना नियंत्रण स्थापित कर उस देश का आर्थिक शोषण और उत्पीड़न करता है।

- ❖ ब्रिटेन उपनिवेशवाद के कुल तीन चरण हैं जिसमें उपनिवेशवाद का प्रथम चरण वाणिज्यिक पूँजीवाद कहलाता है। 1757-1813 ई. के कालखंड को उपनिवेशवाद का प्रथम चरण कहाजाता है।
- उपनिवेशवाद का द्वितीय चरण औद्योगिक पूँजीवाद कहलाता है। 1813-1858 ई. का कालखंड उपनिवेशवाद का द्वितीय चरण कहलाता है।
- उपनिवेशवाद का तृतीय चरण वित्तीय पूँजीवाद कहलाता है। 1858-1947 ई. के कालखंड को उपनिवेशवाद का तृतीय चरण कहा जाता है।
- ❖ अंग्रेजों ने भारत में कृषि का वाणिज्यिकरण किया। कृषि का वाणिज्यिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके तहत किसान खाद्यान फसलों के उत्पादन को छोड़कर वैसे वस्तुओं के उत्पादन करने लगे जिसकी मांग बाजार में हुआ करती थी।  
जैसे- तंबाकू, कपास, चाय, कॉफी, नील इत्यादि
- ❖ अंग्रेजों ने भारतीयों का आर्थिक शोषण किया इस ओर सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी ने भारतीयों का ध्यान आकृष्ट करवाया।  
दादा भाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक Poverty and Unbritish Rule in India में धन के निष्कासन का सिद्धांत अर्थात् Drain of Wealth दिया जिसके तहत दादा भाई नौरोजी ने बतलाया कि भारत का धन भारत से बाहर जा रहा है। लेकिन उस से भारतीयों को कोई लाभ नहीं हो रहा है। 1896 ई. के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस ने धन के निष्कासन के सिद्धांत को स्वीकार किया।



सभी प्रतियोगिता परीक्षाओं में सर्वाधिक **RESULT** देनेवाला पट्टना का एकमात्र संस्थान

**Director :**  
**Raushan Anand**

# शान बिन्दु जी. एस. एकेडमी (पट्टना)

## शान बिन्दु का मतलब सरकारी नौकरी

**मध्यनिषेद QUALIFIED (दारोगा)**

Excuse 6 post qualified

**अन्य छात्र एवं छात्राओं**

Excuse 64 post qualified

**BPSC TEACHER QUALIFIED**

**मध्यनिषेद QUALIFIED (पुलिस)**

Excuse 12 post qualified

**BIHAR DAROGA (2446) अंतिम रूप से चयनित छात्र**

Excuse 6 post qualified

**एवं छात्राओं**

**BIHAR DAROGA 2213 अंतिम रूप से चयनित छात्र**

Excuse 6 post qualified

**एवं छात्राओं**

**आप सभी छात्र एवं छात्राओं को सफलतम जीवन की हार्दिक शुभकामनाएँ ।**

## 5. 1857 ई. का विद्रोह

- इस विद्रोह के समय मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर थे।
- इस विद्रोह के समय भारत के गवर्नर जनरल Lord Caning थे।
- इस विद्रोह के समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री लॉर्ड पार्मस्टन और विरोधी दल का नेता डिजरैली था।
- इस विद्रोह के शुरू होने के समय ब्रिटिश सेनापति जॉर्ज एनिसन थे। लेकिन बाद के दिनों में कैंपबेल ब्रिटिश सेनापति बनकर आए।
- इस विद्रोह का सबसे मजबूत पक्ष हिन्दु-मुस्लिम एकता था।
- इस विद्रोह का प्रतीक चिन्ह Chappati और Lotus था।
- Lord Caning ने 1857 ई. के विद्रोह के दौरान अपना आपातकालीन मुख्यालय इलाहाबाद को बनाया।

### स्वरूप/प्रकृति (Nature)

- 1857 ई. के विद्रोह के स्वरूप या प्रकृति को लेकर विद्वानों के बीच मतभेद है। भारतीय विद्वानों की अलग राय है तो वहीं ब्रिटिश विद्वानों की भी अलग राय है।  
**प्रमुख भारतीय विद्वान के राय निम्न हैं-**

1. 1857 के विद्रोह के सरकारी इतिहासकार एस. एन. सेन हुए, इन्होंने 1857 नामक पुस्तक की रचना की है। इनका मानना था कि 1857 का विद्रोह धर्म को लेकर शुरू हुआ लेकिन इसका अंत स्वतंत्रता आंदोलन के तौर पर हुआ।
2. वी. डी. साबरकर का मानना था कि 1857 ई. का विद्रोह सुनियोजित ढंग से किया गया प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था।
3. आर. सी. मजुमदार का मानना था कि 1857 ई. का विद्रोह न तो राष्ट्रीय, न प्रथम और न स्वतंत्रता आंदोलन था।
4. राम विलास शर्मा का मानना था कि यह एक जनक्रांति थी।
5. अशोक मेहता का यह मानना था कि इस विद्रोह का स्वरूप राष्ट्रीय था।
6. जवाहरलाल नेहरू का यह मानना था कि यह राष्ट्रीय विद्रोह नहीं था क्योंकि इस समय तक भारत में राष्ट्रवाद का विकास नहीं हुआ था।

### अंग्रेज विद्वानों का मत

- डिजरैली का यह मानना था कि यह एक राष्ट्रीय विद्रोह था।
- T. R. Homes का मानना था कि यह सभ्यता एवं बर्बरता के बीच का युद्ध था।
- James Outrum और W. Telor का यह मानना था कि यह हिन्दु और मुस्लमानों का अंग्रेजों के खिलाफ एक षडयंत्र था।
- L. E. R. Reej (रीज) का मानना था कि यह धर्मान्धों का इसाइयों के विरुद्ध युद्ध था।
- John सीले, मार्लेसन, ट्रेवेलियन जैसे विद्वानों का मानना था कि यह एक सिपाही विद्रोह है।  
उपर्युक्त लिखे विवरण से यह स्पष्ट होता है कि 1857 ई. के विद्रोह को अलग-अलग विद्वानों ने अलग-अलग रूपों में परिभाषित किया है। 1857 के विद्रोह को 1857 की क्रांति कहना ज्यादा उचित है क्योंकि इस विद्रोह ने भारत में

आमूलचूल परिवर्तन अर्थात् बड़ा परिवर्तन किया। ऐसा इसलिए कह सकते हैं क्योंकि इस विद्रोह ने भारत से अंग्रेजी कंपनी के शासन को समाप्त कर दिया और भारत में प्रत्यक्ष तौर पर British Crown या ताज के शासन की स्थापना की।

## कारण (Cause)

### तत्कालिक कारण

- 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण चर्चायुक्त कारतूस वाले एनफील्ड राइफल का शामिल किया जाना था। एनफील्ड राइफल ब्राउन बेस राइफल के स्थान पर दिसंबर 1856 में शामिल किया गया था।
- एनफील्ड राइफल को चलाने हेतु प्रशिक्षण बंगाल के दमदम, पंजाब के अंबाला और पाकिस्तान के सियाल कोर्ट में दिया जाता था। एनफील्ड राइफल में भरे जाने वाले कारतूस के ऊपरी खोल को लेकर यह पता चला कि उसमें गाय और सूअर की चर्बी मिली हुई थी। आधुनिक अनुसंधान यह बतलाता है कि कारतूस के ऊपरी खोल में गाय और सूअर की चर्बी मिली हुई थी। यह बात सत्य है। ऐसा अंग्रेज इसलिए किया क्योंकि अंग्रेज भारत के हिन्दू और मुस्लिमों का धर्म नष्ट करके उसे इसाई बनाना चाहता था।
- कारतूस के ऊपरी खोल में गाय और सूअर की चर्बी मिली हुई है इस बात की जानकारी जब मंगल पांडे को लगी तो उन्होंने एनफील्ड राइफल को प्रयोग में लाने से इंकार कर दिया। मंगल पांडे बंगाल के बैरकपूर के 34th N.I. के सिपाही थे। जेनरल हयूरसन और जेनरल बाग ने मंगल पांडे पर दबाव बनाया कि वो एनफील्ड राइफल को प्रयोग में लाए लेकिन मंगल पांडे ने एनफील्ड राइफल को प्रयोग में लाने से इंकार करते हुए 29 मार्च 1857 को जेनरल हयूरसन और जेनरल बाग की गोली मारकर हत्या कर दी। जिस कारण मंगल पांडे को पकड़कर 8 अप्रैल 1857 को फांसी पर लटका दिया गया।

**Note:-** मंगल पांडे 1857 के विद्रोह के एक ऐसे नेता हैं जो विद्रोह शुरू होने से पहले ही शहीद हो गए।

### राजनैतिक कारण

1. Robert Clive के द्वारा द्वैध शासन लागू करना।
2. Warren Hastings और Lord Cornwallis का आक्रामक नीति।
3. लॉर्ड बेलेजली के द्वारा लागू किया गया सहायक संधि।
4. Lord Hastings के द्वारा लागू किया गया Forward Policy
5. Lord Dalhousie के द्वारा लागू किया गया राज हड्डप नीति (Doctrine of lapse)

### आर्थिक कारण

- अंग्रेजों द्वारा भू-राजस्व की वसूली को लेकर रैयतवाड़ी प्रथा, महालवाड़ी प्रथा और स्थाई बंदोबस्त के जरिए भारतीयों का आर्थिक तौर पर शोषण किया गया।

### सैन्य कारण

- ब्रिटिश सेना में भारतीय और यूरोपीय दोनों मूल के लोग रहा करते थे। भारतीयों की संख्या ज्यादा थी। ब्रिटिश सेना

में भारतीय सेना पर यूरोपीय सेना का अनुपात 5 : 1 था। लेकिन फिर भी भारतीय मूल के सैनिकों के साथ बूरा बर्ताव किया जाता था, कम वेतन दिया जाता था, निम्न पद दिया जाता था। इन्हीं सब कारणों से भारतीय मूल के सैनिकों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया।

## धार्मिक और सामाजिक कारण

1. Lord Willian Bentick द्वारा सत्ती प्रथा का अंत किया जाना।
2. Lord Caning द्वारा हिन्दु विधवा पुर्ण विवाह अधिनियम पारित किया जाना।
3. Lord Dalhoussie ने 1849 ई. में यह घोषणा किया कि बहादुरशाह जफर के बाद मुगल बादशाह लाल किला के बजाय कुतुबमीनार जैसे छोटे स्थान पर रहेंगे।
4. 1856 ई. में Lord Caning ने यह घोषणा किया कि बहादुरशाह जफर के बाद मुगल शासक बादशाह नहीं बल्कि राजा या शहजादा कहलाएंगे।
5. 1850 ई. में धार्मिक अयोग्यता अधिनियम पारित होना।
6. 1856 ई. में सैनिक अधिनियम पारित होना।

## विस्तार और नेतृत्वकर्ता

- 1857 के विद्रोह से मध्य भारत, उत्तरी भारत, पूर्वी भारत और थोड़ा बहुत पश्चिमी भारत प्रभावित था। लेकिन ध्यान रहे कि दक्षिण भारत 1857 के विद्रोह से प्रभावित नहीं था।
- 1857 के विद्रोह की शुरूआत 10 मई, 1857 से उत्तर प्रदेश के मेरठ से हुई मानी जाती है। इसकी शुरूआत 20th N.I (Native Infantry) Part of the organisation of east India Company Bengal army before 1857 के सिपाहियों ने किया।

## दिल्ली

- दिल्ली में 1857 का विद्रोह की शुरूआत 12 मई 1857 ई. से हुई है। इस विद्रोह का नेतृत्व मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर ने किया। वही सैन्य नेतृत्व बख्त खाँ ने किया था। दिल्ली के क्षेत्र में विद्रोह को दबाने के लिए अंग्रेजों ने निकलसन और हडसन जैसे अधिकारियों को भेजकर दमनात्मक कार्यवाही की। इस समय उर्दू शायर मिर्जा गालिब दिल्ली में थे। उन्होंने इस विद्रोह को अपनी आँखों से देखा। विद्रोह को दबाते हुए निकलसन मारा गया लेकिन हडसन ने सितंबर 1857 आते आते विद्रोह को दबा दिया। 1857 का विद्रोह सर्वप्रथम दिल्ली के क्षेत्र में दबाया गया था। विद्रोह दबाए जाने के क्रम में मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर हुमायूँ के मकबरा में जाकर छिप गया था। जीनत महल की सूचना पर बहादुर शाह जरफर को गिरफ्तार कर लिया गया और निर्वासित जीवन जीने हेतु रंगून भेज दिया गया। जहाँ रहते हुए उनकी निधन 1862 में हो गया। बहादुरशाह जफर का मकबरा रंगून में है।

## कानपुर

- 1857 के विद्रोह का एक प्रमुख केन्द्र कानपुर बना। कानपुर से विद्रोह की शुरूआत जून 1857 ई. से हुई मानी जाती है। कानपुर से विद्रोह का नेतृत्व नाना साहेब ने किया। नाना साहेब का मूल नाम धोदूं पंत था।

- अंतिम मराठा पेशवा बाजीराव-II के निधन होने के बाद उसके दत्तक पुत्र नाना साहेब को अंग्रेजी सरकार ने पेंशन देना बंद कर दिया।

नाना साहेब के नीजी सलाहकार अजीमुल्ला थे जो नाना साहेब के पेंशन को बहाल करवाने के उद्देश्य से लंदन गए। लेकिन फिर भी नाना साहेब का पेंशन बहाल नहीं हो पाया जिस कारण नाना साहेब 1857 के विद्रोह में कानपुर से कूद पड़े।

- कानपुर से सैन्य नेतृत्व तात्या टोपे ने किया। तात्या टोपे का मूल नाम रामचन्द्र पांडुरंग था।
- 1857 के विद्रोह के तात्या टोपे एक ऐसे नेता हुए जो अपने मित्र मानसिंह के धोखाधड़ी के कारण मारे गए। कानपुर में विद्रोह को दबाने का श्रेय कैंपबेल को जाता है।

**Note:**— सती चौरा कांड का संबंध कानपुर से 1857 के विद्रोह से है।

### अवध एवं लखनऊ

- यहाँ से विद्रोह का नेतृत्व बेगम हजरत महल और उसके पुत्र बिरजिस कादिर ने किया। बेगम हजरत महल को इतिहास में महकपरी के उपनाम से भी जाना जाता है। अवध के क्षेत्र में विद्रोह काफी शक्तिशाली रूप में देखने को मिला। इसका कारण यह था कि आम जनता ने 1857 के विद्रोह में अवध के क्षेत्र से भाग लिया था। सबसे ज्यादा सैनिक भी 1857 के विद्रोह में अवध के क्षेत्र से ही भाग लिया था। लखनऊ के क्षेत्र में विद्रोह को दबाते हुए Henry Lawrence नामक अंग्रेज अधिकारी मारा गया वहीं कैंपबेल नामक अंग्रेज अधिकारी लखनऊ के क्षेत्र में 1857 के विद्रोह को दबा दिया।

**Note:**— विद्रोह के अंतिम दौर में बेगम हजरत महल और नाना साहेब भागकर नेपाल चले गए।

### फैजाबाद ( अयोध्या )

- इस क्षेत्र में विद्रोह का नेतृत्व मौलवी अहमदुल्ला कर रहे थे। ये दक्षिण भारत के रहने वाले थे। 1857 के विद्रोह में अंग्रेजी सरकार का सबसे कट्टर दुश्मन मौलवी अहमदुल्ला था। मौलवी अहमदुल्ला 50,000 का इनामी था। अंग्रेजों ने मौलवी अहमदुल्ला को अदम्य साहसी, निर्भीक और निडर बतलाया। मौलवी अहमदुल्ला ने 1857 के विद्रोह के दौरान जिहाद का नारा दिया। बाद के दिनों में इस विद्रोह को दबाने हेतु फैजाबाद के क्षेत्र में कैंपबेल को भेजा गया। कैंपबेल ने विद्रोह को दबा दिया।

### झांसी ( उत्तर प्रदेश ) एवं ग्वालियर ( मध्य प्रदेश )

- इस क्षेत्र में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व रानी लक्ष्मी बाई ने किया। इनका जन्म 19 नवंबर 1828 ई. को उत्तर प्रदेश के बनारस के गोलघर में हुआ था। इनके बचपन का नाम मनु या मर्णिकर्णिका था। इनका विवाह झांसी के महाराज गंगाधर राव के साथ हुआ। गंगाधर राव के निधन होने के बाद रानी लक्ष्मीबाई ने अपने गोद लिए हुए पुत्र दामोदर राव को झांसी का महाराज घोषित की। लेकिन Lord Dalhousie इस बात को नहीं माना तथा 1853 में राज्य हड्ड प्रीति के तहत झांसी को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। तदूपश्चात् रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से गुहार लगाई कि उन्हें झांसी का क्षेत्र वापस दे दिया जाए लेकिन अंग्रेजों ने ऐसा नहीं किया जिस कारण रानी लक्ष्मीबाई 1857 के विद्रोह में झांसी और ग्वालियर के क्षेत्र से कूद पड़ी। झांसी के क्षेत्र में विद्रोह दबाने के लिए जेनरल ह्यूरोज को भेजा गया। जेनरल ह्यूरोज से लड़ती हुई रानी लक्ष्मी बाई 17 जून 1858 को सिर पर तलवार लग जाने के कारण वीरगति को प्राप्त हुई।

रानी लक्ष्मी बाई का मकबरा गवालियर में है। 1857 के विद्रोह में शहीद होनेवाली दूसरी वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई हुई। वहीं इस विद्रोह में शहीद होने वाली प्रथम वीरांगना अवन्ति बाई लोदी हुई। जो 20 मार्च 1858 को वीरगति को प्राप्त हुई थी।

- ज्ञांसी और गवालियर के क्षेत्र में विद्रोह को जेनरल हयूरोज ने दबाया। जेनरल हयूरोज ने रानी लक्ष्मीबाई को 1857 के विद्रोह में एक अकेला मर्द होने की संज्ञा प्रदान किया।

### इलाहाबाद बनारस

- इस क्षेत्र में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व लियाकत अली ने किया वहीं इस क्षेत्र में विद्रोह को दबाने का काम कर्नल नील ने किया।

### बरेली

- यहाँ से 1857 के विद्रोह को नेतृत्व प्रदान खान बहादुर खाँ ने किया। इस क्षेत्र में विद्रोह को दबाने का श्रेय हडसन को जाता है।

### फतेहपुर

- यहाँ से विद्रोह का नेतृत्व अजीमुल्ला ने किया। इस क्षेत्र में विद्रोह को दबाने का श्रेय जेनरल रेनर्ड को जाता है।

### मथुरा

- यहाँ से विद्रोह का नेतृत्व देवी सिंह ने किया।

### मेरठ

- यहाँ से विद्रोह का नेतृत्व कदम सिंह ने किया।

### बिहार

- उस समय के बिहार के देवघर के रोहिणी गांव से 1857 के विद्रोह की शुरूआत 12 जून 1857 से हुई मानी जाती है। बाद के दिनों में यह विद्रोह पटना पहुँचा। पटना में विद्रोह की शुरूआत 3 जुलाई 1857 से हुआ है। यहाँ विद्रोह का नेतृत्व पीर अली ने किया जो एक पुस्तक विक्रेता था। पटना के बाद यह विद्रोह दानापुर होते हुए आरा पहुँचा।

1857 के विद्रोह का एक प्रमुख केन्द्र आरा का जगदीशपुर बना। यहाँ से विद्रोह का नेतृत्व वीर कुंवर सिंह ने किया। वीर कुंवर सिंह का जन्म जगदीशपुर में 13 नवंबर 1777 को हुआ। इन्हें बिहार का शेर कहा जाता है।

वीर कुंवर सिंह एक जमींदार हुआ करता था। इन्होंने आरा के जगदीशपुर के क्षेत्र से अंग्रेजों को बाहर कर दिया। वीर कुंवर सिंह बिहार से बाहर निकलकर उत्तर प्रदेश पहुँचे और रानी लक्ष्मी बाई, नाना साहेब और बेगम हजरत महल के साथ मिलकर अंग्रेजों को कड़ी चुनौती दिया। वीर कुंवर सिंह ने ही 1857 के विद्रोह को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया।

23 April 1858 को वीर कुंवर सिंह का संघर्ष अंग्रेज अधिकारी ली ग्रांड के साथ हुआ। इस संघर्ष में वीर कुंवर सिंह की जीत हुई। इसी कारण प्रत्येक वर्ष 23 April को विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है।

ली ग्रांड के साथ ही लड़ते हुए वीर कुंवर सिंह बुरी तरह घायल हुए। 26 April 1858 को वीरगति को प्राप्त हुए। वीर कुंवर सिंह के निधन होने के बाद उसके भाई अमर सिंह ने विद्रोह के नेतृत्व को संभाला लेकिन कुछ ही दिनों बाद अंग्रेज अधिकारी William Telor and Vincent Ayer ने बिहार में होनेवाले 1857 की क्रांति को दबा दिया।

## असम

- यहाँ से 1857 की क्रांति का नेतृत्व मनीराम दत्त ने किया।

## ओडिशा

- ओडिशा के संबलपुर से 1857 के विद्रोह का नेतृत्व सुरेन्द्र साई ने किया तो वहाँ ओडिशा के गंजाम क्षेत्र से नेतृत्व राधाकृष्ण दंड सेना ने किया।

## मध्य प्रदेश

- मध्य प्रदेश के जबलपुर से 1857 की क्रांति का नेतृत्व रघुनाथ शाह ने और मंदसौरा से फिरोजशाह ने नेतृत्व किया।

## महाराष्ट्र

- यहाँ से 1857 की क्रांति का नेतृत्व रंगो जी बापू ने किया।

## राजस्थान

- राजस्थान के कोटा से 1857 के विद्रोह का नेतृत्व हरदयाल सिंह और जयदयाल सिंह नामक दो भाई ने किया।

## पंजाब

- यहाँ से 1857 की क्रांति का नेतृत्व वजीर खाँ ने किया।

## हिमाचल प्रदेश

- हिमाचल प्रदेश के कुल्लू से 1857 के विद्रोह का नेतृत्व राजा प्रताप सिंह ने किया।

## असफलता के कारण

1. इस विद्रोह का राष्ट्रीय स्तर पर कोई नेतृत्वकर्ता नहीं था।
2. स्पष्ट लक्ष्य की कमी।
3. शिक्षित और मध्यम वर्गीय लोगों का इस विद्रोह से अपने आप को तटस्थ रखना।
4. सिपाहियों में आपसी एकता की कमी। अवध के सिपाही, बिहार के सिपाही और बंगाल के सिपाही जहाँ अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर रहे थे। वहाँ दूसरी तरफ गोरखा, पठान और सिख सिपाही अंग्रेजों का साथ दे रहा था।
5. देशी रियासत के राजा महाराजाओं में आपसी एकता की कमी। जहाँ एक तरफ अवध की रानी, झांसी की रानी, कानपुर के नवाब अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर रहे थे तो वहाँ दूसरी तरफ हैदराबाद के निजाम, बिहार के दरभंगा महाराज, कश्मीर के राजा, भोपाल के महाराज, ग्वालियर के सिंधिया इत्यादि ने अंग्रेजों का साथ दिया।

**Note:-** 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों का सबसे ज्यादा साथ ग्वालियर के सिंधिया ने दिया।

## परिणाम

- भारत से ब्रिटिश कंपनी के शासन का अंत हुआ।
- भारत में प्रत्यक्ष तौर पर ब्रिटिश क्रॉडन या ब्रिटिश ताज के शासन की स्थापना हुई।
- भारत से मुगल सत्ता का अंत हुआ।

- सेना का पुर्नगठन किया गया। सेना के पुर्नगठन को लेकर पील कमीशन आयोग का गठन हुआ। इस आयोग ने यूरोपीय सेना में यूरोपियों की संख्या में वृद्धि की और भारतीयों की संख्या में कमी की। वैसे सैनिक जो विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों का साथ दिया उसे लड़ाकू घोषित किया गया।  
गोरखा, सिख और पठान सैनिकों को लड़ाकू घोषित किया गया।  
वैसे सैनिक जो विद्रोह कर रहा था उसे गैर लड़ाकू घोषित किया गया।  
जैसे- अवध, बिहार एवं बंगाल के सैनिकों को गैर लड़ाकू घोषित किया गया।
- भारत में राष्ट्रवाद का विकास हुआ।

**Note:-** 1857 के विद्रोह के कारणों पर भारतीय भाषा में लिखने वाला प्रथम विद्वान सर सैयद अहमद खान हुए।

### BOOK

1857

Our Crisis

Our Indian Mulsim

First War of Independence

Durgesh Nandini

The cause of Revolt of 1857

Revellion, 1857

History of Indian Mutiny

The Sepoy mutiny and the revolt of 1857

### WRITER

S. N. Sen

W. Taylor

W. W. Hantour

B. D. Savarkar

Bankim Chandra Chattarjee

Sir Syed Ahmed Khan

P. C. Joshi

T. R. Holmes

R. C. Majumdar



## 6. प्रमुख भारतीय विद्रोह

- **सन्यासी विद्रोहः**- ब्रिटिशों के खिलाफ होने वाला यह प्रथम विद्रोह सन्यासी विद्रोह है यह विद्रोह मुख्यतः बंगाल के क्षेत्र में 1770-1820 के बीच चला था। इस विद्रोह के नेतृत्वकर्ता मंजू शाह और देवी चौधरानी थी इस विद्रोह के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी हमें आनंदमठ नामक ग्रंथ से प्राप्त होती है।
- **अहोम विद्रोहः**- यह विद्रोह असम के क्षेत्र गोमधर कुंवर के नेतृत्व में 1828-1833 के बीच चला था।
- **कितूर चेन्मा विद्रोहः**- यह विद्रोह कर्नाटक के क्षेत्र में 1824-1829 तक रानी चेन्मा और रायन्ना के नेतृत्व में हुआ।
- **पाइक विद्रोहः**- यह विद्रोह ओडिशा के क्षेत्र में 1817-1825 के दौरान बक्शीजगबंधु विद्याधर के नेतृत्व में हुआ।
- **फराजयी विद्रोहः**- यह विद्रोह बंगाल के क्षेत्र में हाजी शरीयतुल्ला तथा दादू मिया के नेतृत्व में हुआ इस विद्रोह का उद्देश्य इस्लाम धर्म में सुधार लाना तथा अंग्रेजों को बंगाल से बाहर करना था।
- **नील विद्रोहः**- यह बंगाल के क्षेत्र में चलने वाला एक किसान विद्रोह था यह विद्रोह 1859-60 में दिगंबर विश्वास और विष्णु विश्वास के नेतृत्व में हुआ था। इस विद्रोह का कारण यह था कि बंगाल के किसान चावल की खेती करना चाहते थे परंतु जर्बदस्ती उनसे नील की खेती करवाई जाती थी। नील की खेती करने वाले किसानों की दूरदशा तथा नील विद्रोह के विषय में जानकारी हमें नील दर्पण नामक ग्रंथ से मिलती है। जिसकी रचना दीनबंधु मित्र ने की है। इस विद्रोह को समर्थन हिन्दू पैट्रियॉट नामक समाचार पत्र ने दिया है। यह किसानों द्वारा किया गया सफल विद्रोह है।
- **पाबना विद्रोह-** यह विद्रोह बंगाल के क्षेत्र में किसानों द्वारा जमीनदारी के खिलाफ किया गया था यह विद्रोह 1873-1876 के बीच ईशानचन्द्र राय केशवचन्द्र तथा शंभुपाल के नेतृत्व में हुआ था। इस विद्रोह के दौरान भारतीय किसानों ने यह नारा दिया- “हम महरानी और सिर्फ महरानी के रैयत बनकर रहना चाहते हैं।”
- **हूल/संथाल विद्रोहः**- यह विद्रोह 1857 के विद्रोह के ठीक पूर्व संध्या 1855-56 में सिन्धू और कान्हू के नेतृत्व में हुआ था।
- **खोंड व सवार विद्रोहः**- यह ओडिशा तथा बंगाल के क्षेत्र होनेवाले विद्रोह है यह विद्रोह 1820 दशक में हुआ है। खोंड विद्रोह चक्र विशोई के नेतृत्व में तो वही सवार विद्रोह राधाकृष्णण दण्ड सेना के नेतृत्व में हुआ।
- **पागलपंथी विद्रोहः**- यह विद्रोह बंगाल के क्षेत्र में करमशाह और टिपूशाह के नेतृत्व में हुआ है।
- **गडकरी विद्रोहः**- गडकरी विद्रोह महाराष्ट्र के कोल्हापुर के क्षेत्र में 1844 में दाजीकृष्ण पंडित के नेतृत्व में हुआ है। गडकरी मराठों का वंशानुगत सैनिक थे।
- **मुंडा विद्रोह (उलगुलान/महानहलचल):-** यह विद्रोह झारखंड के क्षेत्र में बिरसा मुंडा के द्वारा 1899-1900 के दौरान किया गया है। बिरसा मुंडा को जगत पिता भी कहा जाता है बिरसा मुंडा का कार्य क्षेत्र झारखंड का रांची है। इस विद्रोह में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा ली यह विद्रोह तब दबा दिया गया जब जेल प्रवास के दौरान ही जून 1900 में बिरसा मुंडा का निधन हो गया।
- कारणः**- मुंडा जनजाति में सामूहिक खेती (खूटकही प्रथा) का प्रचलन था लेकिन अंग्रेजों ने इस प्रथा को समाप्त कर व्यक्तिगत खेती की व्यवस्था पर जोड़ दिया यही मुंडा विद्रोह का सबसे अहम कारण है।
- Note:-** 1857 के विद्रोह के ठीक पूर्व होने वाला प्रभावी विद्रोह संथाल विद्रोह है तो वही 1857 के विद्रोह के ठीक बाद प्रमुख प्रभावी विद्रोह बंगाल के नील विद्रोह है।
- **असहयोग आंदोलन के दौरान मोपला विद्रोह तथा एका आंदोलन हुआ।**
- **मोपला विद्रोहः**- यह मालावार तट पर (केरल) 1922 में अली मुसलियार के नेतृत्व में हुआ यह अंग्रेज हिन्दु और



जर्मींदार विरोधी विद्रोह था खिलाफत आंदोलन तथा महात्मा गांधी ने इस विद्रोह का समर्थन किया।

- **एका आंदोलनः**- अवध के क्षेत्र 1921-22 के दौरान मदारी पासी के नेतृत्व में यह विद्रोह हुआ था।
- **रंपा विद्रोहः**- यह विद्रोह आंध्र प्रदेश के तटवर्ती इलाका में रंपा समुदाय के जनजातियों के द्वारा सिताराम राजू के नेतृत्व में 1879-1922 तक छिट-फूट तरीका से चलता रहा।
- **तानाभगत आंदोलनः**- यह एक आदिवासी विद्रोह था जो बिहार और झारखण्ड के क्षेत्र में 1914-1919 तक जतरा भगत के नेतृत्व में चला जतराभगत को बिड़सा मुंडा का परछाया बताया जाता है।
- **तेभागा आंदोलनः**- आजादी से ठीक पूर्व 1946 में कंपाराम सिंह और भवनसिंह के नेतृत्व में भूराजस्व को लेकर यह आंदोलन हुआ था।
- पंजाब के क्षेत्र कूका आंदोलन हुआ था जिसकी नेतृत्व भगत जवाहरमल ने किया।
- बिहार के भागलपुर के क्षेत्र में पहाड़िया विद्रोह हुआ जो तिलका मांझी के नेतृत्व में हुआ था।
- महाराष्ट्र के क्षेत्र में दक्कन विद्रोह हुआ जिसका नेतृत्व वासुदेव बलवंत फड़के ने किया।
- पश्चिमी घाट में भील विद्रोह सेवाराम सिंह के नेतृत्व में तो वही रामोशी विद्रोह चित्तर सिंह के नेतृत्व में हुआ।
- केरल के ट्रावणकोर के क्षेत्र में वेलाट्रम्पी विद्रोह मेलूथम्पी के नेतृत्व में हुआ है।
- तमिलनाडु के क्षेत्र में पॉलीगरी का विद्रोह वीर पी. कट्टावामन के नेतृत्व में हुआ था।

❖\*❖\*



## 7. सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन

- 19वीं - 20वीं सदी में सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन की शुरूआत Bengal Presidency से हुई मानी जाती है। इसकी शुरूआत करने का श्रेय Raja Ram Mohan Rai को जाता है। यही कारण है कि राजाराम मोहन राय को नव जागरण का अग्रदूत, नवप्रभात का तारा, सुधार आंदोलन का पिता इत्यादि उपनाम से पुकारा जाता है। 19वीं सदी का सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन नारी केन्द्रित था तो वहीं 20वीं सदी का सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन निम्न जाति केन्द्रित था।

### राजाराम मोहन राय

- राजाराम मोहन राय का जन्म 1772 ई. में Bengal Presidency के राधा नगर में हुआ था। इनके पिता रामाकांत राय और माता तारिणी देवी थी।
- राम मोहन राय मुगल बादशाह अकबर-II के समकालीन थे। अकबर-II ने ही इन्हें राजा की उपाधि प्रदान की। अकबर-II के पेंशन की पैरवी को लेकर ही राजाराम मोहन राय इंगलैंड (लंदन) गए हुए थे।
- राजाराम मोहन राय ब्रिटिश कंपनी के अधीन सेवा दिए थे। वे जॉन डिग्बी के दिवान के तौर पर काम किए हैं।
- राजाराम मोहन राय ने मूर्ति पूजा का विरोध किया।
- राजाराम मोहन राय बहुदेववाद के विरोधी थे। उन्होंने एकेश्वरवाद के उपर बल दिया।
- राजाराम मोहन राय ने 1815 ई. में आत्मीय सभा, 1817 ई. हिन्दू कॉलेज, 1825 में Vedant College तथा 1828 ई. में ब्रह्म समाज की स्थापना किया। ब्रह्म समाज का पूर्व नाम ब्रह्म सभा हुआ करता था।
- राजाराम मोहन राय के सहयोग से ही British Governor General Lord William Bentick ने कानून बनाकर सती प्रथा का अंत किया।
- राजाराम मोहन राय ने जो सती प्रथा का अंत किया। उसका विरोध राधाकांत देव ने किया।
- राजाराम मोहन राय का निधन इंगलैंड के ब्रिस्टल नामक शहर में 1833 ई. में हुआ था। उनके निधन होने के बाद रामचंद्र विद्या वागीश ने ब्रह्म समाज के नेतृत्व को संभाला था। तदपश्चात् देवेन्द्रनाथ टैगोर ने ब्रह्म समाज के नेतृत्व को संभाला। इन्होंने 1839 ई. में तत्त्वबोधिनी सभा नामक संगठन की स्थापना किया। इस संगठन को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से तत्त्वबोधिनी नामक पत्रिका देवेन्द्रनाथ टैगोर ने निकाला।
- देवेन्द्रनाथ टैगोर ने ही केशव चंद्र सेन को ब्रह्म समाज में शामिल किया तथा उसे आचार्य की उपाधि प्रदान किया। देवेन्द्रनाथ टैगोर यह चाहते थे कि ब्रह्म समाज की विचारधारा सिर्फ भारत तक सीमित रहे। लेकिन केशव चंद्र सेन यह चाहते थे कि ब्रह्म समाज की विचारधारा विदेशों में भी फैलाया जाए। इसी बात को लेकर दोनों के बीच मतभेद हो गया और फिर 1866 ई. में ब्रह्म समाज में पहली बार विभाजन हुआ और दो ब्रह्म समाज बनें। एक भारतीय ब्रह्म समाज और दूसरा आदि ब्रह्म समाज।
- भारतीय ब्रह्म समाज का नेतृत्वकर्ता केशव चंद्र सेन हुए वहीं आदि ब्रह्म समाज के नेतृत्वकर्ता देवेन्द्रनाथ टैगोर हुए। आचार्य केशव चंद्र सेन के सहयोग से 1872 ई. में Native Marriage Act पारित हुआ जिसके तहत लड़का और लड़की के विवाह का न्यूनतम उम्र निर्धारित किया गया। लड़की के विवाह का न्यूनतम उम्र 14 वर्ष तथा लड़का के विवाह का न्यूनतम उम्र 18 वर्ष निर्धारित किया गया।

इस एक्ट का उल्लंघन आचार्य केशव चंद्र सेन ने किया। उन्होंने अपने 12 वर्ष पुत्री का विवाह कूच बिहार के राजकमार से करवाया। जिस कारण 1878 ई. में भारतीय ब्रह्म समाज विभाजित हुआ और साधारण ब्रह्म समाज अस्तित्व में आया।

साधारण ब्रह्म समाज के संस्थापक आनंद मोहन बोस को माना जाता है।

- संवाद कौमुदी, मिरा-उल-अखबार, तोहफात-उल-मुहावर्यिनी (ऐकेश्वरवादियों को उपहार) की रचना राजाराम मोहन राय ने किया।

## आर्य समाज

- आर्य समाज की स्थापना 1875 ई. में मुंबई में स्वामी दयानंद सरस्वती ने किया। इनका जन्म 1824 ई. में गुजरात में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके बचपन का नाम मूल शंकर था। मूल शंकर 21 वर्ष की अवस्था में ज्ञान प्राप्ति को लेकर गृह का त्याग किया। स्वामी पूर्णानंद ने मूल शंकर को स्वामी दयानंद सरस्वती नाम दिया। स्वामी दयानंद सरस्वती के गुरु स्वामी बिरजानंद थे।
- स्वामी दयानंद सरस्वती ने ही पहली बार महिला और दलित को वेद पढ़ने की अनुमति देकर समाज पर गहरा प्रभाव छोड़ा।
- स्वामी दयानंद सरस्वती ने ही पहली बार स्वराज शब्द का प्रयोग किया और हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने की मांग की।
- स्वामी दयानंद सरस्वती को हिन्दु लूथर कहा जाता है।
- भारत भारतीयों के लिए नारा आर्य समाज (स्वामी दयानंद सरस्वती) ने दिया। इनका मानना था कि अच्छा से अच्छा विदेशी शासन बुरा से बुरा देशी शासन से बेहतर नहीं है। अर्थात् स्वामी दयानंद सरस्वती आर्य समाज के जरिए स्वशासन पर बल दे रहे थे। जिस कारण वेलेन्टाइन शिरोल ने आर्य समाज को भारतीय अशांति का जन्मदाता कहा है।
- वेदों की ओर लौटो नारा स्वामी दयानंद सरस्वती ने दिया है।
- स्वामी दयानंद सरस्वती ने शुद्धि आंदोलन और गौरक्षा आंदोलन चलाया। शुद्धि आंदोलन के अंतर्गत वैसे हिन्दु जो किसी कारणवस अगर किसी दूसरे धर्म को अपना लिया था तथा वे फिर से हिन्दु बनना चाहते थे तो शुद्धि आंदोलन के जरिए अपने धर्म में पुनः वापस लौट सकते थे।
- स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपनी विचारधारा को प्रचारित व प्रसारित करने को लेकर 1874 ई. में सत्यार्थ प्रकाश नामक पुस्तक की रचना किया। इसके अलावे उन्होंने वेद भास्य और वेद भास्य भूमिका जैसे पुस्तकों की भी रचना किया।
- स्वामी दयानंद सरस्वती का निधन 1883 ई. में राजस्थान के अजमेर में हुआ था।
- स्वामी दयानंद सरस्वती के सहयोगियों में से एक लाल हंसराज ने 1886 ई. में लाहौर में दयानंद एलो वेदिक कॉलेज की स्थापना किया। कालांतर में जाकर स्वामी दयानंद सरस्वती के ही सहयोगी स्वामी श्रद्धानंद ने उत्तराखण्ड के हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का गठन 1902 ई. में किया।
- **Theosophical Society:**— इसकी स्थापना 1875 ई. में अमेरिका के न्यूयॉर्क में हुई। इसका मुख्यालय 1882 ई. में मद्रास के अडियार को बनाया गया।

इस संगठन की स्थापना रूसी महिला मैडम ब्लाटवस्की और अमेरिकी नागरिक कर्नल ऑल्काट के द्वारा किया गया।

1889 ई. में इंग्लैंड में Smt. Annie Besant Theosophical Society की सदस्य बनी और वो 1893 ई. में भारत पहुँची। भारत में Theosophical Society को लोकप्रिय बनाने का श्रेय Smt. Annie Besant को जाता है। Smt. Annie Besant ने 1898 ई. में सेन्ट्रल हिंदु कॉलेज की स्थापना की। यही कॉलेज 1916 ई. में बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय (BHU) के नाम से जाना गया।

बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय की स्थापना 1916 ई. में मदन मोहन मालवीय के द्वारा किया गया है।

- **प्रार्थना समाजः**- पश्चिमी भारत या महाराष्ट्र के क्षेत्र में ब्रह्म समाज की नीतियों को आगे बढ़ाने का काम प्रार्थना समाज ने किया है। इसकी स्थापना आचार्य केशव चंद्र सेन की प्रेरणा से 1867 ई. में मुंबई में आत्मा राम पांडुरांग के द्वारा किया गया। इस संगठन को लोकप्रिय बनाने का काम महादेव गोविन्द राणा डे ने किया।  
महादेव गोविन्द राणा डे को महाराष्ट्र का सुकरात कहा जाता है।

## स्वामी विवेकानन्द

- स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 को Bengal Presidency में हुआ। इनके जन्म दिवस 12 जनवरी को National Youth Day के रूप में मनाया जाता है।
- इनके बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। राजस्थान के खेतरी महाराज अजीत सिंह ने नरेन्द्रनाथ दत्त को स्वामी विवेकानन्द नाम दिया।
- स्वामी विवेकानन्द के पिता विश्वनाथ दत्त और माता भुवनेश्वरी देवी थी। इनके गुरु रामकृष्ण परमहंस थे। रामकृष्ण परमहंश का मूल नाम गदाधर चट्टोपाध्याय था। रामकृष्ण परमहंस की पत्नी शारदामणि थी। रामकृष्ण परमहंश कलकत्ता के दक्षिणेश्वर काली मंदिर के पुजारी थे और वे मानवतावादी से ओत-प्रोत थे।  
रामकृष्ण परमहंस की बजह से ही स्वामी विवेकानन्द पर मानवतावादी विचारधारा का प्रभाव पड़ा।
- स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है।
- वर्ष 1893 ई. में अमेरिका के शिकागो शहर में प्रथम विश्वधर्म सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसमें भारत की तरफ से भाग स्वामी विवेकानन्द ने लिया।
- स्वामी विवेकानन्द 1893 ई. में अपने द्वारा दिए गए ऐतिहासिक भाषण से लोकप्रिय हुए। उन्होंने अपने भाषण की शुरूआत अमेरिका के भाईयों एवं बहनों शब्दों से किया। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि अगर पश्चिमी जगत के भौतिकवाद और पूर्वी जगत के आध्यात्मवाद को मिला दिया जाए तो यह मानव के कल्याण का सर्वोत्तम मार्ग होगा। उन्होंने कहा कि मुझे गर्व है कि मैं उस देश से हूँ जिस देश ने विश्व के सभी सताए लोगों को शरण दिया है।
- स्वामी विवेकानन्द ने अपनी विचारधारा को प्रचारित और प्रसारित करने हेतु 1897 ई. में कोलकाता में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।
- द्वितीय विश्वधर्म सम्मेलन 1900 ई. में पेरिस में हुआ था। इसमें भी भारत का नेतृत्व स्वामी विवेकानन्द ने ही किया था।
- स्वामी विवेकानन्द ने ज्ञानयोग, कर्मयोग, राजयोग, वर्तमान भारत, प्रबुद्ध भारत, वेदांत फिलॉस्फी जैसे पुस्तकों की रचना की है।
- स्वामी विवेकानन्द का निधन 4 जुलाई 1902 ई. को हुआ।
- प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द का भाषण 11 सितंबर 1893 ई. को हुआ था।
- स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि आज हिन्दु धर्म मत छुओवाद बन गया है। हमारे धर्म रसोईघर में है। हमारे ईश्वर

खाना बनाने के बर्तनों में है।

- स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि धर्म ना पुस्तकों में है, ना तर्क में है और ना सिद्धांत में है बल्कि धर्म आत्मज्ञान में है।
- स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि जब तक करोड़ों लोग भूखे और अज्ञानी हैं तबतक मैं हर उस व्यक्ति को देश द्रोही मानता हूँ जो भूखे और अज्ञानी व्यक्ति के विषय में नहीं सोचता है।
- सुभाषचंद्र बोस ने स्वामी विवेकानन्द को भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता कहा है।

## ईश्वरचंद्र विद्यासागर

- ये बंगाल प्रेसिडेंसी के समाज सुधारक थे। इनका जन्म बंगाल प्रेसिडेंसी में 1820 ई. में हुआ था। ये नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। इन्होंने पाखंडी ब्राह्मणों को चुनौती दिया। इन्हीं के प्रयास से Lord Canning ने 1856 ई. में कानून पारित कर हिन्दू धर्म की विधवा महिलाओं को पुनः विवाह करने का अधिकार दिया।
- ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अपने पुत्र का विवाह एक विधवा महिला के साथ करवाया। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने बाल विवाह को लेकर भी आवाज बुलायी।
- ईश्वर चंद्र विद्यासागर की प्रमुख पत्रिका सोमप्रकश है। इनका निधन 1891 ई. में हो गया।

## यंग बंगाल आंदोलन

- यंग बंगाल आंदोलन की शुरूआत हेनरी लुईस विवियन डेरेजियो के द्वारा किया गया है-  
इस आंदोलन की प्रमुख मांगें निम्न हैं-
  1. प्रेस को स्वतंत्रता प्रदान किया जाए।
  2. किसानों को जर्मांदारों के शोषण से बचाया जाए।
  3. भारतीयों को भी ब्रिटिश सेवा के अंतर्गत उच्च पदों पर शामिल किया जाए।
- विवियन डेरेजियो को आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि माना जाता है।
- विवियन डेरेजियो फ्रांसीसी क्रांति से सर्वाधिक प्रभावित था।
- सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने विवियन डेरेजियो को हमारी सभ्यता का अग्रदूत और पिता कहा है।

## धर्मसभा

- राधाकांत देव ने सती प्रथा का समर्थन करने हेतु 1830 ई. में धर्म सभा नामक संगठन की स्थापना किया।

## देव समाज

- देव समाज की स्थापना लाहौर में फरवरी 1887 ई. में शिव नारायण अग्निहोत्री के द्वारा किया गया।

## राधास्वामी सत्संग आंदोलन

- इस आंदोलन की शुरूआत 1861 ई. में उत्तर प्रदेश के आगरा के क्षेत्र में शिवदयाल साहब के द्वारा किया गया है।

## सत्यशोधक समाज

- इसकी स्थापना 1873 ई. में ज्योतिबा फूले के द्वारा किया गया। उन्होंने दलित समुदाय के लोगों को पाखंडी ब्राह्मणों

से बचकर रहने को लेकर जागरूक किया। उन्होंने अपने विचारधारा को प्रचारित और प्रसारित करने हेतु गुलामगिरी नामक पुस्तक की रचना की है।

## आत्मसम्मान आंदोलन

- दलितों को जागरूक करने के उद्देश्य से श्री रामास्वामी नायकर या पेरियार के द्वारा आत्मसम्मान आंदोलन चलाया गया। इन्होंने तमिल भाषा में रामायण की रचना की है जिसे सच्ची रामायण कहा जाता है।

## वायकोम सत्याग्रह

- 1920 के दशक में यह सत्याग्रह श्री नारायण गुरु के द्वारा चलाया गया है। यह गांधीजी के सत्याग्रह के जैसा सत्याग्रह था। इस सत्याग्रह का उद्देश्य दलित जाति के लोगों को मंदिर में प्रवेश दिलाना था।

## अलीगढ़ आंदोलन

- इस्लाम धर्म में फैली बुराइयों को दूर करने हेतु सर सैय्यद अहमद खान के द्वारा अलीगढ़ आंदोलन चलाया गया। इस्लाम धर्म में सुधारवादी आंदोलन चलाने वाला प्रथम सुधारक सर सैय्यद अहमद खान हुए जिस कारण उन्हें इस्लाम धर्म का राजाराम मोहन राय कहा जाता है। सर सैय्यद अहमद खान हिंदू मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। वे हिन्दू और मुस्लमानों को भारत की दो आंखें बतलाया है।
- सर सैय्यद अहमद खान ने 1864 ई. में Scientific Society नामक संगठन की स्थापना किया।
- सर सैय्यद अहमद खान ने 1875 ई. में 'Mohammeden Anglo Oriental College' की स्थापना की। यही कॉलेज वर्तमान में Aligarh Muslim University के नाम से जाना जाता है।
- सर सैय्यद अहमद खान ने तहजीब-उल-अखलाक नामक पुस्तक की रचना किया। इसी को सभ्यता और नैतिकता पुस्तक भी कहा जाता है।
- 1857 ई. के विद्रोह के कारणों पर भारतीय भाषा में लिखने वाला प्रथम विद्वान् सर सैय्यद अहमद खान हुए।
- सर सैय्यद अहमद खान का भी कांग्रेस कोई संबंध नहीं रहा है। उन्होंने कांग्रेस का विरोध करते हुए Indian Patriotic Association नामक संगठन की स्थापना किया।
- सर सैय्यद अहमद खान अंग्रेजी शिक्षा के समर्थक थे।

## देवबंद आंदोलन

- यह अलीगढ़ आंदोलन का ठीक विपरित विचारधारा वाला आंदोलन था। यह आंदोलन मुहम्मद कासिम ननौतवी और सैय्यद अहमद गंगोही के द्वारा चलाया गया है। इस आंदोलन से जुड़े लोगों ने कांग्रेस की स्थापना का समर्थन किया तथा इसके पाश्चात्य शिक्षा का भी समर्थन किया।

## अहमदिया आंदोलन/कादियिनी आंदोलन

- यह आंदोलन पंजाब के कादियिनी नामक स्थान से प्रारंभ हुआ है। यह आंदोलन मिरजा गुलाम अहमद के द्वारा चलाया गया है।
- मिर्जा गुलाम अहमद अपने आप को दूसरा पैगम्बर और कृष्ण का अवतार कहता था।

## बहावी आंदोलन

- यह आंदोलन सैयद अहमद राय बरेलवी के द्वारा चलाया गया। यह एक साम्प्रदायिक आंदोलन था। इस आंदोलन का लक्ष्य भारत का इस्लामीकरण करना था। इस आंदोलन का प्रमुख केन्द्र बिहार का पटना बना था। इसका दमन एलिग्न-Ι ने किया।

## रहनुमाई माजदायन सभा

- पारसी धर्म और समाज में फैली बुराइयों को दूर करने हेतु दादा भाई नौरोजी, एस. एस. बंगाली, नौरोजी फरदोनजी इत्यादि के द्वारा मिलकर 1851 ई. में रहनुमाई माजदायन सभा की स्थापना की गई। इस संगठन को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से दादाभाई नौरोजी ने रास्ट गोफ्तार नामक पत्रिका निकाला।

❖\*❖\*



## 8. कांग्रेस से पूर्व स्थापित संगठन

- भारत के लोगों को उनका हक और अधिकार दिलवाने हेतु कांग्रेस की स्थापना से पहले कई सारे राजनीतिक संगठन की स्थापना बंगाल, मुंबई और मद्रास के क्षेत्र में हुई हैं जो निम्न हैं-

### बंगाल

- भारत की प्रथम राजनीतिक संगठन Land Holder Society अर्थात् जर्मींदारी संघ है। यह संगठन Bengal Society के जर्मींदारों को उनका हक और अधिकार दिलाने हेतु 1838 ई. में द्वारकानाथ टैगोर के द्वारा स्थापित किया गया है।
- 1843 ई. में George Thomson ने बंगाल के जर्मींदारों को उनका हक और अधिकार दिलवाने के उद्देश्य से Bengal British India Society का गठन किया।
- बंगाल के जर्मींदार राधाकांत देव ने Land Holder Society और Bengal British India Society को मिलाकर 1851 ई. में एक राजनैतिक संगठन की स्थापना किया जिसे British Indian Association कहा गया। यह संगठन भी बंगाल के जर्मींदारों को उनका हक और अधिकार दिलाने हेतु स्थापित हुआ था।
- 1875 ई. में शिशिर कुमार घोष ने Indian League नामक राजनैतिक संगठन की स्थापना किया।
- 1875 ई. में आनंद मोहन बोस ने Kolkata Student Association की स्थापना किया।
- इंडियन लीग की स्थान पर 1876 ई. में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने Indian Association नामक राजनैतिक संगठन की स्थापना किया। इस संगठन का उद्देश्य भारत में राष्ट्रवाद का विकास करना था। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को ही राष्ट्र गुरु के उपनाम से जाना जाता है। उन्होंने अपनी पत्रिका बंगाली में कोलकाता हाई कोर्ट के न्यायाधीश जे. एफ. नॉरिस के खिलाफ लिखा जिसको लेकर उनपर मुकदमा चलाया गया और उन्हें 2 माह की सजा सुनाई गई।
- इंडियन नेशनल कॉन्फ्रेंस- इसकी स्थापना 1883 ई. में आनंद मोहन बोस और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के द्वारा किया गया।
- 1886 ई. में इसका विलय कांग्रेस में कर दिया गया।

### बंबई प्रेसिडेंसी में स्थापित राजनैतिक संगठन

- 1852 ई. में दादा भाई नौरोजी के द्वारा बंबई एसोसिएशन नामक राजनैतिक संगठन की स्थापना की गई।
- 1867 ई. में एम. जी. राणा डे के द्वारा पूना सार्वजनिक सभा नामक राजनैतिक संगठन की स्थापना की गई।
- फिरोजशाह मेहता, के. टी. तैलांग, तैय्यब जी के द्वारा 1885 ई. में बंबई प्रेसिडेंसी एसोसिएशन नामक संगठन की स्थापना की गई।
- फिरोजशाह मेहता, के. टी. तैलांग, तैय्यब जी को बंबई त्रिमूर्ति के नाम से जाना जाता है।

### मद्रास में स्थापित राजनैतिक संगठन

- 1852 ई. में गजुलू चेट्टी ने Madras Native Association नामक राजनैतिक संगठन की स्थापना किया।
- 1884 ई. में वीर राघवाचारी, आनंद चार्ल्स जैसे नेताओं ने मिलकर मद्रास महाजन सभा नामक राजनैतिक संगठन की स्थापना किया।

### लंदन में स्थापित संस्था

- 1865 ई. में दादा भाई नौरोजी ने लंदन में London India Society नामक राजनैतिक संगठन की स्थापना किया।
- 1866 ई. में दादा भाई नौरोजी ने लंदन में East India Association नामक राजनैतिक संगठन की स्थापना किया।



## 9. कांग्रेस

- कांग्रेस एक अमेरिकी भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ “लोगों का समूह” होता है।
- भारत में सर्वप्रथम कांग्रेस शब्द का प्रयोग दादाभाई नौरोजी के द्वारा किया गया।
- कांग्रेस की स्थापना स्कॉटलैंड निवासी A. O. Hume थे। वहाँ कांग्रेस के द्वितीय संस्थापक एस. एन. बनर्जी को माना जाता है।
- कांग्रेस की स्थापना के समय भारतीय वायसराय लॉर्ड डफरिन थे।
- कांग्रेस के प्रथम महासचिव A. O. Hume बने थे। A. O. Hume का जीवनीकार विलियम बेडर्वर्न था।

### प्रमुख अधिवेशन

- **प्रथम अधिवेशन-** कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन 1885 ई. में मुंबई में आयोजित हुआ था।
  - इस अधिवेशन की अध्यक्षता व्योमेश चन्द्र बनर्जी ने किया था।
  - इस अधिवेशन में कुल 72 सदस्य ने भाग लिया था जिसमें वकील, डॉक्टर, प्रोफेसर, इंजीनियर शामिल थे। सर्वाधिक 39 वकील थे।
  - अधिवेशन में कुल 9 प्रस्ताव पारित हुए। British House of Common के चुनाव लड़ने वाले प्रथम भारतीय व्योमेश चन्द्र बनर्जी हुए जो चुनाव हार गए थे।
- Note :** एस. एन. बनर्जी एक ऐसे राजनेता हुए जिनका कांग्रेस की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लेकिन वे कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में शामिल नहीं हुए।
- **द्वितीय अधिवेशन-** कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन वर्ष 1886 ई. में कलकत्ता में हुआ।
  - इस अधिवेशन की अध्यक्षता दादाभाई नौरोजी ने किया। ये पारसी समाज से संबंधित थे।
  - ये कांग्रेस के प्रथम पारसी अध्यक्ष बने।
  - इस सम्मेलन के दौरान भारतीय वायसराय लॉर्ड डफरिन ने कांग्रेस के सम्मेलन में भाग लेने वाले सदस्यों को भोजन करवाया जिसे Garden Party कहा जाता है। ध्यान रहे कि इस गदर पार्टी में एस. एन. बनर्जी भाग नहीं लिए थे।
- **तीसरा अधिवेशन-** कांग्रेस का तीसरा अधिवेशन वर्ष 1887 में मद्रास में हुआ।
  - इस अधिवेशन की अध्यक्षता बद्रुद्दीन तैयब जी ने किया। ये कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष हुए। इन्होंने ‘कांग्रेसी बनो’ का नारा दिया।
- **चौथा अधिवेशन-** यह अधिवेशन 1888 ई. में इलाहाबाद में आयोजित हुआ।
 

इस समय इलाहाबाद के गवर्नर जनरल आकलैण्ड कॉलविन थे जिसने यह प्रयास किया कि इलाहाबाद में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन नहीं हो लेकिन बिहार के दरभंगा महाराज ने लोंथर कैपस खरीदकर कांग्रेस को दिया।

  - इस अधिवेशन की अध्यक्षता जॉर्ज यूले ने किया जो प्रथम ब्रिटिश अध्यक्ष हुए।
  - अध्यक्षता करते हुए जॉर्ज यूले ने यह कहा कि ‘कांग्रेसी जन पहले भारतीय हैं बाद में वे हिन्दु, मुस्लिम, सिख, इसाई हैं।’
  - कांग्रेस को तोड़ने के लिए अंग्रेजों ने सर सैयद अहमद खान और राजा शिव प्रसाद को तैयार किया।
- **पाँचवा अधिवेशन-** कांग्रेस का यह भारतीय अधिवेशन 1889 ई. में मुंबई में हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता विलियम बेडर्वर्न ने किया।
  - सर्वप्रथम कांग्रेस के इसी अधिवेशन में महिलाओं ने भाग लिया।

■ छठा अधिवेशन- कांग्रेस का छठा अधिवेशन वर्ष 1890 में कलकत्ता में हुआ था।

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता फिरोजशाह मेहता ने किया था।
- इस अधिवेशन में स्नातक का डिग्री प्राप्त करने वाली प्रथम महिला कादम्बिनी गांगुली भाग ली थी। इन्होंने कांग्रेस के मंच से कांग्रेस को संबोधित की।

### **1891 का वार्षिक अधिवेशन**

● कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन महाराष्ट्र के नागपुर में आयोजित हुआ था।

इस अधिवेशन की अध्यक्षता पी. आनंद चार्लू ने किया। इस अधिवेशन में राष्ट्रीयता का मतलब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को बतलाया गया।

### **1892 का वार्षिक अधिवेशन**

● कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन लंदन में होना था। लेकिन आम चुनाव होने के कारण यह अधिवेशन लंदन में नहीं हो सका। जिस कारण यह अधिवेशन इलाहाबाद में आयोजित हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता व्योमेश चन्द्र बनर्जी ने किया।

### **1893 का वार्षिक अधिवेशन**

● कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन लाहौर में आयोजित हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता दादाभाई नौरोजी ने किया। इस अधिवेशन के दौरान ही यह मांग किया गया कि सिविल सेवकों की नियुक्ति हेतु प्रतियोगिता परीक्षा का आयोजन लंदन के साथ-साथ भारत में भी होना चाहिए।

### **1894 का वार्षिक अधिवेशन**

● कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन मद्रास में आयोजित हुआ। इसकी अध्यक्षता अल्फर्ड बेब ने किया है।

### **1895 का वार्षिक अधिवेशन**

● कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन महाराष्ट्र के पूणे में आयोजित हुआ था।  
● इस अधिवेशन की अध्यक्षता सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने किया।

### **1896 का वार्षिक अधिवेशन**

● यह वार्षिक अधिवेशन कलकत्ता में हुआ था। इसकी अध्यक्षता रहीम तुल्ला सयानी ने किया।  
● इस अधिवेशन के दौरान भारत का राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् पहली बार गाया गया।  
यह गीत बंकित चन्द्र चटर्जी की रचना आनंद मठ से लिया गया है। अर्थात् हम यह कह सकते हैं कि वंदे मातरम् गीत का रचयिता बंकिम चंद्र चटर्जी हैं।  
● कांग्रेस के इसी वार्षिक अधिवेशन के दौरान दादाभाई नौरोजी के द्वारा दिए गए धन के निष्कासन के सिद्धांत को स्वीकर किया गया।

### **1897 का वार्षिक अधिवेशन**

● यह वार्षिक अधिवेशन आंध्र प्रदेश के अमरावती में हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता शंकरन नायर ने किया।

## 1898 का वार्षिक अधिवेशन

- यह वार्षिक अधिवेशन मद्रास में आयोजित हुआ था। इसकी अध्यक्षता आनंद मोहन बोस ने किया था।

## 1899 का वार्षिक अधिवेशन

- यह वार्षिक अधिवेशन लखनऊ में आयोजित हुआ था। इसकी अध्यक्षता आर. सी. दत्त ने किया था।

## 1900 का वार्षिक अधिवेशन

- यह वार्षिक अधिवेशन लाहौर में आयोजित हुआ था। इसकी अध्यक्षता एन. जी. चंद्रावरकर ने किया था।

## 1901 का वार्षिक अधिवेशन

- यह वार्षिक अधिवेशन कलकत्ता में हुआ था। इसकी अध्यक्षता दिनशा वाचा ने किया। इस अधिवेशन में महात्मा गांधी पहली बार भाग लिए।

## 1902 का वार्षिक अधिवेशन

- यह वार्षिक अधिवेशन अहमदाबाद में हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने किया।

## 1903 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन मद्रास में आयोजित हुआ। इसकी अध्यक्षता लाल मोहन घोष ने किया।

## 1904 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन मुंबई में आयोजित हुआ। इसकी अध्यक्षता Sir Henry Cotton ने किया। इस अधिवेशन में मोहम्मद अली जिना पहली बार भाग लिया था।

## 1905 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन बनारस में आयोजित हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता गोपाल कृष्ण गोखले ने किया। ब्रिटिश काल में गोपाल कृष्ण गोखले को विपक्ष के नेता का दर्जा दिया गया था।

## 1906 का वार्षिक अधिवेशन

- यह वार्षिक अधिवेशन कलकत्ता में आयोजित हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता दादा भाई नौरोजी ने किया। इस अधिवेशन के दौरान ही दादा भाई नौरोजी ने पहली बार कांग्रेस के मंच से स्वराज शब्द का प्रयोग किया।
- दादा भाई नौरोजी ने कांग्रेस अधिवोशन की अध्यक्षता तीन बार किया।

## 1907 का वार्षिक अधिवेशन

- यह वार्षिक अधिवेशन सूरत में आयोजित हुआ है। इस अधिवेशन में कांग्रेस पहली बार स्पष्ट तौर पर दो भाग गरम दल और नरम दल में बँट गया। इस फूट को इतिहास में सूरत फूट के नाम से जाना जाता है। अंततः इस अधिवेशन की अध्यक्षता रास बिहारी घोष ने की है। कांग्रेस के उग्रवादी विचारधारा के नेता 1907 के सूरत अधिवेशन का अध्यक्ष बाल गंगाधर तिलक या लाला लाजपत राय को बनाना चाहता था।

## 1908 का वार्षिक अधिवेशन

- यह वार्षिक अधिवेशन मद्रास में हुआ था। इसकी अध्यक्षता रास बिहारी घोष ने किया। कांग्रेस के इसी अधिवेशन के दौरान कांग्रेस के लिए संविधान का निर्माण किया गया।

## 1909 का वार्षिक अधिवेशन

- यह वार्षिक अधिवेशन लाहौर में आयोजित हुआ। इसकी अध्यक्षता पंडित मदन मोहन मालवीय ने किया। इसी अधिवेशन के दौरान मदन मोहन मालवीय ने भारत का सबसे लोकप्रिय वायसराय Lord Ripon को घोषित किया।

## 1910 का वार्षिक अधिवेशन

- यह वार्षिक अधिवेशन इलाहाबाद में हुआ था। इसकी अध्यक्षता William बेडरवर्न ने की।

## 1911 का वार्षिक अधिवेशन

- यह वार्षिक अधिवेशन कलकत्ता में हुआ। इसकी अध्यक्षता पंडित विश्व नारायण धर ने किया। कांग्रेस के इसी वार्षिक अधिवेशन के दौरान पहली बार भारत का राष्ट्रगान जन-गण-मन गाया गया। इसकी रचना Ravindra Nath Tagore ने की है।

## 1912 का वार्षिक अधिवेशन

- यह वार्षिक अधिवेशन पटना के बाकीपुर में आयोजित हुआ था। इसकी अध्यक्षता आर. एन. माधोलकर ने किया था। इस अधिवेशन के दौरान ही कांग्रेस का जनक या पिता A. O. Hume को घोषित किया गया।

## 1913 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन कराँची में आयोजित हुआ था। इसकी अध्यक्षता नवाब सैय्यद मोहम्मद बहादुर ने किया था।

## 1914 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन मद्रास में आयोजित हुआ था। इसकी अध्यक्षता भूपेन्द्रनाथ बसु ने किया था।

## 1915 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन मुंबई में आयोजित हुआ था। इसकी अध्यक्षता सत्येन्द्र प्रसाद सिन्हा ने किया। इस अधिवेशन के दौरान भारतीय वायसराय Lord Wellington ने भाग लिया था।

## 1916 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन लखनऊ में हुआ। 1916 में मुस्लिम लीग का भी वार्षिक अधिवेशन लखनऊ में ही आयोजित हुआ।

**इस अधिवेशन की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं-**

1. इस अधिवेशन की अध्यक्षता अंबिका चरण मजुमदार ने किया।
2. दक्षिण अफ्रीका से वापस लौटने के बाद महात्मा गांधी सर्वप्रथम कांग्रेस के 1916 के अधिवेशन में भाग लिए थे।
3. इसी अधिवेशन के दौरान महात्मा गांधी की मुलाकात बिहार के चंपारण के भीतिहरबा गांव के किसान नेता राजकुमार शुक्ला के साथ हुई।

4. इसी अधिवेशन के दौरान बाल गंगाधर तिलक ने यह नारा दिया था कि स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।
5. इसी अधिवेशन के दौरान बाल गंगाधर तिलक और Smt. Annie Besant के प्रयास से कांग्रेस के गरम दल और नरम दल दोनों एक हो गए।
6. इसी अधिवेशन के दौरान कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौता हुआ जिसे लखनऊ समझौता कहा गया। इस समझौता के तहत कांग्रेस ने मुस्लिमों को दिए जाने वाले पृथक निर्वाचन के अधिकार को स्वीकार किया। बदले में मुस्लिम लीग ने कांग्रेस को भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग देने का आश्वासन दिया।
7. कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच होने वाले लखनऊ समझौता का विरोध मदन मोहन मालवीय ने किया।

## 1917 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन कलकत्ता में आयोजित हुआ था। इसकी अध्यक्षता Smt. Annie Besant ने की। ये कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष बनी है।

- **विशेष अधिवेशन:-** पहली बार कांग्रेस का विशेष अधिवेशन मुंबई में वर्ष 1918 में माण्टेग्यू घोषणा पर विचार विमर्श करने को लेकर हुआ था।

इस अधिवेशन की अध्यक्षता हसन इमाम ने किया था। कांग्रेस के उदारवादी नेताओं ने माण्टेग्यू घोषणा का समर्थन करते हुए उसे भारत के लिए Magna Carta कहा तो वही कांग्रेस के उग्रवादी नेताओं ने माण्टेग्यू घोषणा का विरोध किया।

- Note:-**
1. बाल गंगाधर तिलक ने माण्टेग्यू घोषणा को सूर्यविहिन उषाकाल की संज्ञा दी।
  2. वर्ष 1918 के मुंबई के विशेष अधिवेशन के दौरान माण्टेग्यू घोषणा को लेकर कांग्रेस में दूसरी बार फूट पड़ी।

## 1918 का वार्षिक अधिवेशन

- यह वार्षिक अधिवेशन दिल्ली में आयोजित हुआ। इसके अध्यक्ष बाल गंगाधर तिलक को बनाया गया था। लेकिन वे वेलेन्टाइन शिरोल मुकदमा की फैरवी हेतु लंदन चले गए जिस कारण 1918 के कांग्रेस के दिल्ली के वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता मदन मोहन मालवीय ने किया।

## 1919 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन अमृतसर में हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता मोतीलाल नेहरू ने किया। इस अधिवेशन के दौरान जलियावाला बाग हत्याकांड की आलोचना की गई। इस अधिवेशन में बाल गंगाधर तिलक अंतिम बार भाग लिए थे।

## 1920 का विशेष अधिवेशन

- यह अधिवेशन कलकत्ता में हुआ था। इसकी अध्यक्षता लाला लाजपत राय ने किया। ध्यान करें कि लाल, बाल एवं पाल में से एकमात्र लाल ने अर्थात् लाला लाजपत राय ने कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता किया।
- बाल यानि बालगंगाधर तिलक और पाल यानि वीपीन चन्द्र पाल ने किसी भी कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता नहीं किया।

## 1920 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन महाराष्ट्र के नागपुर में आयोजित किया। इसकी अध्यक्षता विजय राघवाचार्य ने किया। कांग्रेस के इस वार्षिक अधिवेशन के दौरान सर्वसहमति से असहयोग आंदोलन चलाए जाने का प्रस्ताव पारित किया गया।

## 1921 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन अहमदाबाद में हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता हकीम अजमल खाँ ने किया।

## 1922 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह अधिवेशन बिहार के गया में आयोजित हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता चित्तरंजन दास (C. R. Das) ने किया। इस समय वे जेल में बंद थे।

## 1923 का विशेष अधिवेशन

- कांग्रेस का यह अधिवेशन दिल्ली में आयोजित हुआ था। इसकी अध्यक्षता मौलाना अबुल कलाम आजाद ने किया। ये कांग्रेस के सबसे युवा अध्यक्ष बने हैं। जब ये कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता कर रहे थे उस समय इनका उम्र 35 वर्ष हुआ करता था। इनका जन्म वर्ष 1888 में सऊदी अरब में हुआ था।

## 1923 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह अधिवेशन काकीनाडा (आंध्र प्रदेश) में हुआ था। उस अधिवेशन की अध्यक्षता मौलाना मुहम्मद अली ने किया।

## 1924 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन कर्नाटक के बेलगाँव में हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता महात्मा गांधी ने किया। महात्मा गांधी एकमात्र बार कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता किए हैं।

## 1925 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन कानपुर में हुआ था। इसकी अध्यक्षता सरोजनी नायडू ने की। सरोजनी नायडू कांग्रेस की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष बनी। कांग्रेस के इसी अधिवेशन में हसरत मौहानी ने सर्वप्रथम स्वराज का प्रस्ताव रखा था। जिसे कांग्रेस पारित नहीं कर सका।

## 1926 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह अधिवेशन असम के गुवाहाटी में हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता श्री निवास आयगार ने किया।

## 1927 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन मद्रास में हुआ था। इसकी अध्यक्षता डॉ. एम. ए. अंसारी ने की। इस अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित किया गया कि साइमन कमीशन आयोग के भारत आगमन का बहिष्कार किया जाएगा।

## 1928 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन कलकत्ता में हुआ था। इसकी अध्यक्षता मोतीलाल नेहरू ने की था। इसी अधिवेशन के दौरान कांग्रेस के लिए एक अलग विदेश विभाग का गठन किया गया।

## 1929 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह अधिवेशन लाहौर में हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया। इस अधिवेशन के दौरान कांग्रेस ने निम्न प्रस्ताव पारित किया।

1. कांग्रेस के पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित किया।
2. कांग्रेस ने यह प्रस्ताव पारित किया कि जब तक देश को आजादी नहीं मिल जाती है तब तक प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाया जाएगा।
3. पूरे भारतवर्ष में पहली बार 26 जनवरी 1930 को स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाया गया।
4. कांग्रेस के इसी वार्षिक अधिवेशन में यह भी प्रस्ताव पारित किया गया कि महात्मा गांधी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया जाएगा।

**Note:**— वर्ष 1930 में कांग्रेस का कोई वार्षिक अधिवेशन नहीं हुआ।

### 1931 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन करांची में हुआ था। इसकी अध्यक्षता सरदार बल्लभभाई पटेल ने की। इस अधिवेशन की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं—
  1. इस अधिवेशन में गांधी इरविन समझौता को स्वीकृति प्रदान की गई।
  2. इस अधिवेशन में ही महात्मा गांधी जब भाग लेने के लिए पंजाब के रास्ते करांची जा रहे थे तो उन्हें काला झंडा दिखा गया था। काला झंडा विरोध का प्रतीक होता है।
  3. इस अधिवेशन के दौरान महात्मा गांधी ने कहा था कि— “गांधी मर सकता है परंतु गांधीवाद नहीं”
  4. इस अधिवेशन के दौरान ही कांग्रेस ने ब्रिटिश सरकार से मौलिक अधिकार की मांग की।

### 1932 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह अधिवेशन दिल्ली में हुआ था। इसके अध्यक्ष पंडित मदन मोहन मालवीय को बनाया गया था लेकिन वे जेल में बंद थे जिस कारण इस अधिवेशन की अध्यक्षता अमृतलाल रणछोड़दास सेठ ने किया।

### 1933 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन कलकत्ता में हुआ था। इसके अध्यक्ष मदन मोहन मालवीय को बनाया गया था। लेकिन वे जेल में बंद थे। जिस कारण इस अधिवेशन की अध्यक्षता श्रीमती नलिनी सेन गुप्ता ने की है।
- कुल तीन महिलाओं ने कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की है—
  1. Smt. Annie Besant
  2. Smt. Sarojini Naidu
  3. Smt. Nalini sen Gupta

### 1934 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन मुंबई में हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता राजेन्द्र प्रसाद ने किया।
- Note:**— वर्ष 1935 कांग्रेस का कोई वार्षिक अधिवेशन नहीं हुआ।

### 1936 का वार्षिक अधिवेशन

- कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन लखनऊ में हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया। इस दौरान ही Congress Parliamentary Board का गठन हुआ था।
- इस अधिवेशन के समय जवाहरलाल नेहरू ने यह कहा था कि मैं समाजवादी हूँ और भारत में समाजवादी राज्य की स्थापना करना चाहता हूँ।
- कांग्रेस के इस वार्षिक अधिवेशन के दौरान ही अखिल भारतीय किसान संघ की स्थापना हुई थी।

## 1937 का फैजपुर अधिवेशन

- यह गाँव में आयोजित प्रथम अधिवेशन है। इसकी अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया। इन्होंने तीन बार कांग्रेस की अध्यक्षता की है।  
इस अधिवेशन के दौरान कांग्रेस ग्राम सभा का गठन हुआ। इस अधिवेशन के दौरान 13 अस्थाई कृषि विधेयक पारित हुए।

## 1938 का हरिपुरा अधिवेशन

- यह गाँव में आयोजित दूसरा वार्षिक अधिवेशन था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता सुभाषचंद्र बोस ने किया। इस अधिवेशन के दौरान ही राष्ट्रीय नियोजन समिति का गठन हुआ। इस समिति के प्रथम अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू को बनाया गया था।

## 1939 का त्रिपुरी अधिवेशन

- इस अधिवेशन का अध्यक्ष महात्मा गांधी पट्टाभिसीता रमेया को बनाना चाहते थे लेकिन अध्यक्ष बनने को लेकर होनेवाले चुनाव में सुभाषचंद्र बोस ने पट्टाभिसीता रमेया को 203 मतों से पराजित किया और अंतः इस अधिवेशन की अध्यक्षता सुभाषचंद्र बोस ने की। कुछ दिनों के पश्चात् सुभाषचंद्र बोस कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिए। तदपश्चात् कांग्रेस का अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को बनाया गया।

## 1940 का रामगढ़ अधिवेशन

- कांग्रेस के इस वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता मौलाना अबूल कलाम आजाद ने किया।
- 1940-1946 के बीच में द्वितीय विश्व युद्ध चलने के कारण कांग्रेस का कोई भी वार्षिक अधिवेशन नहीं हुआ। अतः लगातार 6 वर्षों तक मौलाना अबूल कलाम आजाद ही अध्यक्ष पद पर बने रहे।  
इस अवधि के दौरान क्रिप्स मिशन योजना का भारत आगमन हुआ जिसके साथ वार्ता मौलाना अबूल कलाम आजाद ने किया।  
वेवेल प्रस्ताव को लेकर होने वाले शिमला सम्मेलन में भी भाग मौलाना अबूल कलाम आजाद ने ही लिया।
- फैजपुर महाराष्ट्र में हरिपुरा गुजरात में, त्रिपुरी मध्यप्रदेश में और रामगढ़ झारखण्ड राज्य में स्थित है।

## 1946 का मेरठ अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता आचार्य जे. बी. कृपलानी ने किया।
- आजादी के समय और भारत विभाजन के समय कांग्रेस के अध्यक्ष आचार्य जे. बी. कृपलानी ही थे।
- आजादी के बाद दिसंबर 1947 ई. में दिल्ली में कांग्रेस का जो विशेष अधिवेशन हुआ उसकी अध्यक्षता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने की।

## 1948 का जयपुर अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता पट्टाभिसीता रमेया ने किया। इन्होंने कांग्रेस का इतिहास नामक पुस्तक लिखा है।

## 1950 का नासिक अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता पुरुषोत्तम दास टंडन ने किया।
- कांग्रेस के वर्तमान में अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे हैं।
- आजादी के बाद महात्मा गांधी ने यह विचार प्रकट किया कि कांग्रेस को समाप्त कर दिया जाए।

## कांग्रेस से संबंधित विशेष जानकारियाँ

- (i) कांग्रेस के एक वर्ष में एक बार होनेवाले वार्षिक सम्मेलन की आलोचना करते हुए बालगंगाधर तिलक ने कहा कि “एक वर्ष में एक बार मेंढ़क की तरह टरटराने से कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है।”
- (ii) कांग्रेस का वार्षिक सम्मेलन जो तीन दिनों तक चलता था उसकी आलोचना करते हुए अशवनी कुमार दत्ता ने कहा कि “कांग्रेस का सम्मेलन तीन दिनों का तमाशा है।”
- (iii) शुरूआती वर्षों में सिर्फ शिक्षित लोग ही कांग्रेस के सदस्य बन सकते थे इसी की आलोचना करते हुए लाला लाजपत राय ने यह कहा कि “कांग्रेस का वार्षिक सम्मेलन शिक्षित भारतीयों के मेले के समान है।”
- (iv) लाला लाजपत राय ने कांग्रेस को लेकर सेफटी बल्व सिद्धांत दिया और कहा कि “कांग्रेस लॉर्ड डफरिन के दिमाग का उपज है।”
- (v) बंकिम चंद्र चटर्जी ने कहा है कि कांग्रेस के लोग पदों के भूखे राजनीतिज्ञ हैं।
- (vi) अरविंद घोष ने कहा है कि कांग्रेस क्षय रोग से मरने की वाली है।
- (vii) बिपिन चंद्रपाल ने कांग्रेस को याचना संस्था की संज्ञा दी है।
- (viii) लॉर्ड डफरिन ने यह कहकर कांग्रेस का मजाक उड़ाया कि कांग्रेस अल्प जनसंख्या अर्थात् सुक्ष्मदर्शी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाला संगठन है।
- (xi) Lord Curzon ने कहा कि कांग्रेस की महल भड़भड़ा कर गिरने वाली है। हमारी इच्छा है कि कांग्रेस की मृत्यु में उसका साथ दे सकें।



## 10. कांग्रेस के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन

### उदारवादी युग

- इसे स्वतंत्रता आंदोलन का प्रथम चरण या आर्थिक राष्ट्रवादी युग भी कहा जाता है।
- 1885-1905 का कालखंड उदारवादी युग कहलाता है। कांग्रेस के भीतर प्रमुख उदारवादी नेता के रूप में Firoz Shah Mehta, Dada Bhai Naroji, Woymesh Chandra Banerjee, Gopal Krishna Gokhale, Surendra Nath Banerjee, Baddrudin Tayeb इत्यादि का विवरण मिलता है।  
उदारवादी नेता अनुनय-विनय, प्रार्थना पत्र, स्मरण पत्र इत्यादि के माध्यम से अपनी माँग अंग्रेजों के समक्ष रखते थे।
- वर्ष 1887 में Dada Bhai Naroji और वर्ष 1888 में Surenda Nath Banerjee लंदन गए। दोनों ने मिलकर 1889 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ब्रिटिश समिति का गठन किया।  
इस समिति को लोकप्रिय बनाने के लिए इंडिया नामक पत्रिका भी निकाला गया।  
इस समिति को समर्थन मिले इसको लेकर बेडरवर्न को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ब्रिटिश समिति का अध्यक्ष बनाया गया।
- दादा भाई नौरोजी ने यह घोषणा किया कि वर्ष 1892 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन लंदन में आयोजित होगा लेकिन इस वर्ष लंदन में आम चुनाव होने थे इसलिए कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन लंदन में आयोजित नहीं हो सका। 1892 में होने वाले चुनाव में दादा भाई नौरोजी लिबरल या उदारवादी पार्टी के टिकट पर फिसंवरी से चुनाव लड़े और वे चुनाव जीते भी। दादा भाई नौरोजी British House of Commons का सदस्य बनने वाले प्रथम भारतीय हुए।  
दादा भाई नौरोजी 1892-1895 तक British House of Commons के सदस्य बने रहे।
- **उदारवादियों की देन**
  - (i) उदारवादियों ने भारत की आम जनता को आर्थिक तौर पर जागरूक किया।
  - (ii) आर. सी. दत्त ने भारत का आर्थिक इतिहास और दादा भाई नौरोजी ने Poverty and Unbritish Rule in India नामक पुस्तक की रचना कर, इन पुस्तकों के जरिए लोगों को जागरूक किया।
  - (iii) दादा भाई नौरोजी ने पहली बार भारत के लोगों के आय की गणना 1867-68 में किया और यह बतलाया कि भारत के लोगों का वार्षिक आय Rs. 20 है।
  - (iv) उदारवादियों के प्रभाव में आकर ही अंग्रेजी सरकार ने 1892 को भारत परिषद् अधिनियम पारित किया।
  - (v) उदारवादियों के प्रभाव में आकर ही भारत में होने वाले अंग्रेजी व्यय की जांच हेतु बेलवी आयोग का गठन किया।

### उग्रवादी युग (1905-1919)

- कांग्रेस के भीतर उदारवादियों से अलग एक अलग वर्ग का उदय हुआ जिसे उग्रवादी कहा गया।  
उग्रवादी नेता अपनी माँग धरणा प्रदर्शन, जुलूस, हड़ताल इत्यादि के जरिए किया करते थे।
- कांग्रेस के उग्रवादी नेता के रूप में लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चन्द्र पाल, अरविंद घोष आदि का विवरण देखने को मिलता है।

### बाल गंगाधर तिलक

- इनका जन्म महाराष्ट्र के रत्नगिरी जनपद में 23 जुलाई 1856 को हुआ था। इनका मूल नाम केशव गंगाधर तिलक था। इन्हें लोकमान्य के उपनाम से भी जाना जाता है।
- वेलेन्टाइन शिरोल ने इन्हें भारतीय अशांति का जनक कहा है।
- इन्होंने भारत के लोगों को जागरूक करने हेतु पूरे भारतवर्ष का भ्रमण किया तथा वर्ष 1893 में गणपति महोत्सव और 1896 में शिवाजी महोत्सव आरंभ किया। उन्होंने अंग्रेजी भाषा में मराठा नामक समाचार पत्र और मराठी भाषाम् के सरी नामक समाचार पत्र निकाला।

- बाल गंगाधर तिलक ने अपनी पत्रिका केसरी के माध्यम से प्लेग अधिकारी रैंड और अयर्स्ट के हत्या का समर्थन किया। इस हत्या की तुलना तिलक ने शिवाजी द्वारा किए गए अफजल खाँ की हत्या से किया है।
- रैंड और अयर्स्ट की हत्या का समर्थन करने को लेकर तिलक पर मुकदमा चलाया गया। पत्रकारिता का निर्वहन करते हुए बाल गंगाधर तिलक को जेल भी जाना पड़ा है। राजद्रोह के आरोप में तिलक को 1908 में मांडले जेल (वर्मा) भेज दिया गया। जेल प्रवास के दौरान तिलक ने गीता रहस्य नामक पुस्तक की रचना किया। तिलक ने ही The Arctic Home सिद्धांत दिया।
- तिलक ने कांग्रेस के गरम दल और नरम दल दोनों को एक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया।
- तिलक ने 1916 ई. में महाराष्ट्र के क्षेत्र में Home Rule League आंदोलन चलाया। तिलक कांग्रेस के सक्रिय सदस्य होते हुए भी कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता कभी नहीं किया।
- तिलक के निधन 1 अगस्त, 1920 ई. को हो गया।

### लाला लाजपत राय

- इनका जन्म वर्ष 1865 में पंजाब के लुधियाना में हुआ था। इन्हें पंजाब केशारी या शेर-ए-पंजाब के नाम से जाना जाता है। इन्होंने शुरूआती दिनों में कांग्रेस की स्थापना का विरोध किया और कांग्रेस को लेकर Safety Bulb सिद्धांत दिया। इनके गुरु Mahatma Hansraj थे। इन्होंने बंगाल विभाजन के खिलाफ हुए स्वदेशी आंदोलन का नेतृत्व पंजाब के क्षेत्र से किया। इन्होंने वर्ष 1920 के कांग्रेस के कलकत्ता में हो रहे विशेष अधिवेशन की अध्यक्षता किया। साथ ही साथ असहयोग आंदोलन में इन्होंने सक्रिय भागीदारी निभाई।
- वर्ष 1928 में Simon Commission Aayog के भारत आगमन का विरोध लाहौर के क्षेत्र में लाला लाजपत राय ने किया। इसलिए लाला लाजपत राय पर लाठी चार्ज किया गया। उसी लाठी चार्ज में लाला लाजपत राय बूरी तरह घायल हुए और फिर 17 नवंबर, 1928 को लाला लाजपत राय का देहावसान हो गया। लाला लाजपत राय ने कहा है कि मेरे सिर पर किया गया लाठी का एक-एक प्रहार अंग्रेजी सरकार के लिए ताबूत का किल साबित होगा। पंजाब के एक क्रांतिकारी भगत सिंह लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लिया। भगत सिंह अपने साथियों के साथ मिलकर लाहौर के पुलिस कैप्टन सोण्डर सी की गोली मारकर हत्या कर दिया।
- लाला लाजपत राय ने The Vande Mataram, Punjabi, The People जैसे पत्र निकाला।

### विपिन चन्द्र पॉल

- इनका जन्म Bengal Presidency में वर्ष 1858 में हुआ था।
- इन्होंने बंगाल विभाजन के खिलाफ हुए स्वदेशी आंदोलन का नेतृत्व बंगाल के क्षेत्र से किया। इन्होंने गांधीजी के द्वारा शुरू किए जाने वलो असहयोग आंदोलन (Non Corporation Movement) का विरोध करते हुए कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया। बाद के वर्षों में 1932 में इनका निधन हो गया।

### अरविंद घोष

- इनका जन्म 1872 ई. में बंगाल प्रेसीडेंसी में हुआ था। अलीपुर षड्यंत्र केस में इनका भी नाम आया था। इस केस में अरविंद घोष की पैरवी सी. आर. दास ने किया था। सी. आर. दास की पैरवी की वजह से ही अरविंद घोष अलीपुर षड्यंत्र केस से बच निकले।
- अरविंद घोष का मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता किसी भी राष्ट्र की प्राण वायु होती है।
- अरविंद घोष ने New hamp for old पत्रिका के माध्यम से उग्रवाद की क्रमवार व्याख्या प्रस्तुत की। इसके अलावा अरविंद घोष ने कर्मयोगी, Life Devine, Savitiri, VAnde Matram इत्यादि जैसे पत्रिका भी निकाले।
- इन्होंने पुदुच्चरी में ओरेविले आश्रम की स्थापना किया।
- इनका निधन वर्ष 1950 ई. में हो गया।

## बंगाल विभाजन

- 1905 ई. के समय बंगाल क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों आधार पर भारत का सबसे बड़ा प्रांत हुआ करता था। साथ ही साथ बंगाल राष्ट्रीय आंदोलन का भी सबसे प्रमुख केन्द्र हुआ करता था।
- ब्रिटिश सरकार भारत के राष्ट्रीय आंदोलन को कमज़ोर करना चाहता था तथा भारत में संप्रदायवाद को बढ़ावा देना चाहता था। इसलिए ब्रिटिश सरकार ने बंगाल का विभाजन किया।
- ब्रिटिश सरकार ने घोषणा किया कि बंगाल का विभाजन प्रशासनिक आधार पर किया जाएगा जबकि बंगाल का विभाजन संप्रदायिक आधार पर किया गया। बंगाल को हिन्दू, मुस्लिम आधार पर दो वर्गों में पूर्वी बगाल और पश्चिमी बंगाल में बांटा गया। पूर्वी बंगाल मस्लिम बहुल इलाका था। इसकी राजधानी ढाका हुआ करती थी। वहाँ पश्चिम बंगाल हिन्दु बहुल इलाका था। इसकी राजधानी कलकत्ता हुआ करती थी।
- बंगाल विभाजन की घोषणा Lord Curzon ने 19 जुलाई 1905 को किया (कुछ स्रोतों में 20 जुलाई 1905 दिया गया है) इस समय बंगाल के Lieutenant Governor Sir Andrew Frazer हुआ करते थे।
- बंगाल विभाजन के घोषणा के खिलाफ 7 अगस्त, 1905 को कलकत्ता के टाउन हॉल में Congress Working Committee की बैठक बुलाई गई। इस बैठक में यह निर्णय लिया गया कि बंगाल विभाजन के खिलाफ बंगभंग आंदोलन / Swadeshi Movement चलाया गया।
- 7 अगस्त, 1905 से कलकत्ता के टाउन हॉल से Swadeshi Movement / बंग भंग आंदोलन की शुरूआत हुई। कांग्रेस के उदारवादी नेता यह चाहते थे कि बंगाल विभाजन के खिलाफ Swadeshi Movement सिर्फ बंगाल तक सीमित रहे। लेकिन कांग्रेस के उग्रवादी नेता यह चाहते थे कि Swadeshi Movement का प्रसार पूरे भारतवर्ष में हो।

प्रथम आंदोलन है जिसका प्रसार Swadeshi Movement देखने को मिला है। महाराष्ट्र में आंदोलन का नेतृत्व बगाल में बिपिन चंद्र पाल ने, पंजाब में लाल लाजपत राय ने, दिल्ली में सैयद हैदर राजा ने, बाल गंगाधर तिलक ने और मद्रास में Chidambaram Pillai ने नेतृत्व किया।

इस आंदोलन के दौरान ही बाल गंगाधर तिलक को वेलेन्टाइन सिरोल ने भारतीय अशांति का जनक कहा इस आंदोलन के दौरान ही पहली बार विदेशी पत्रकार Henry Wood Navinson ने पूरे भारत की यात्रा किया और the New Spirit of India नामक पुस्तक की रचना किया।

- सर्वप्रथम कृष्ण कुमार मिश्र ने अपनी पत्रिका संजिवनी में बहिष्कार शब्द का प्रयोग किया।
- Note :- Swadeshi Movement के दौरान विदेशी पत्रकार Henry Wood Navinson ने पूरे भारत की यात्रा किया और the New Spirit of India नामक पुस्तक की रचना किया।
- बंगाल विभाजन के खिलाफ स्वदेशी आंदोलन चलने के बावजूद 16 अक्टूबर 1905 को बंगाल विभाजन लागू हुआ।
- 16 अक्टूबर के दिन को पूरे बंगाल के लोगों ने शोक दिवस के रूप में मनाया। इस दिन बंगाल के लोग सड़कों पर निकले, गंगा नदी में स्नान किये, काली पूजा किया और एक दूसरे के हाथ पर राखी बांधकर एकता का संदेश दिया। इस दिन बंगाल की सड़कों पर कुछ नारे गूंज रहे थे जो निम्न हैं-
  1. हमें विभाजन नहीं चाहिए।
  2. बंगाल एक है।
  3. वंदे मातरम् - स्वदेशी आंदोलन के दौरान सबसे अधिक लोकप्रिय नारा वंदे मातरम ही है।
- वर्ष 1911 में ब्रिटेन के सम्राट जॉर्ज पंचम और क्वीन मैरी का भारत आगमन हुआ। ये दोनों जब भारत का भ्रमण कर रहे थे तो पूरे भारत वर्ष में इन दोनों को विरोध का सामना करना पड़ा। क्योंकि अंग्रेजों ने कहा था कि बंगाल का

विभाजन प्रशासनिक आधार पर करेंगे लेकिन अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन संप्रदायिक आधार पर कर दिया।

इन दोनों के सम्मान में 12 दिसंबर 1911 ई. को भारतीय वायसराय लॉर्ड हार्डिंग-II ने तृतीय दिल्ली दरबार का आयोजन किया।

इस दिल्ली दरबार में ही ब्रिटेन के सम्राट जार्ज-V ने बंगाल विभाजन को रद्द करने की घोषणा किया। इस घोषणा के तहत ही बंगाल विभाजन रद्द कर दिए गए तथा बंगाल को पुर्नगठित किया गया और बंगाल का पुर्नविभाजन भी किया गया।

बंगाल का पुर्नविभाजन करते हुए बंगाल से एक अलग प्रांत बिहार के गठन की घोषणा की गई। इस घोषणा के तहत ही बंगाल का विभाजन कर बिहार प्रांत का गठन 22 मार्च 1912 ई. को किया गया। यही कारण है कि प्रत्येक 22 मार्च को बिहार दिवस के रूप में मनाया जाता है।

- बंगाल का विभाजन कर बिहार प्रांत का गठन किया जाए का मांग सर्वप्रथम डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा ने किया। यही कारण है कि सच्चिदानंद सिन्हा को आधुनिक बिहार का जनक माना जाता है।
- स्वदेशी आंदोलन के दौरान ही अगस्त, 1906 ई. में राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् का गठन किया गया।
- तृतीय दिल्ली दरबार में ही यह घोषणा किया गया कि भारत की राजधानी कलकत्ता से स्थानांतरित कर दिल्ली को बनाया जाएगा। इस घोषणा के तहत 1 अप्रैल, 1912 ई. से भारत की राजधानी दिल्ली बनी।
- स्वदेशी आंदोलन में किसान और मुस्लिम वर्ग के लोग भाग नहीं लिए थे।

### मुस्लिम लीग

- 30 दिसंबर 1906 को ढाका में मुस्लिम लीग की स्थापना आगा खाँ, वकार-उल-मुल्क और ढाका के नबाव सलीम उल्लेह के द्वारा किया गया।
- इस संगठन की स्थापना भारतीय वायसराय लॉर्ड मिंटो-II की प्रेरणा से उन्हीं के शासनकाल में हुआ है।
- मुस्लिम लीग ने बंगाल विभाजन का समर्थन किया था। बंगाल विभाजन के समर्थन को लेकर सलीम उल्लाह के नेतृत्व में आंदोलन मुस्लिमानों के द्वारा चलाया गया था।
- मुस्लिम लीग का वार्षिक अधिवेशन वर्ष 1908 ई. में अमृतसर में हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता आगा खाँ ने किया। इस अधिवेशन के दौरान ही मुस्लिम लीग ने मुस्लिमानों को पृथक निर्वाचन का अधिकार देने की मांग किया। ब्रिटिश सरकार ने 1909 के भारत शासन अधिनियम के तहत मुस्लिमानों को पृथक निर्वाचन का अधिकार दिया।

1909 के भारत शासन अधिनियम से ही भारत में संप्रदायिक निर्वाचन की शुरूआत हुई मानी जाती है।

शुरूआती वर्षों में कांग्रेस ने मुस्लिमानों को दिए जाने वाले पृथक निर्वाचन के अधिकार को स्वीकार नहीं किया। बाद के वर्षों में वर्ष 1916 में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच लघुनऊ में समझौता हुआ। इस समझौता के तहत ही कांग्रेस ने मुस्लिमानों को दिए जाने वाले पृथक निर्वाचन के अधिकार को स्वीकार कर लिया।

- Note:-**
1. लॉर्ड मिंटो-II को भारत में सांप्रदायिक निर्वाचन का जनक माना जाता है।
  2. मुस्लिम लीग की एक शाखा लंदन में वर्ष 1908 में सैय्यद अमीर अली के नेतृत्व में खोला गया था।
  3. वर्ष 1916-1922 का काल कांग्रेस और मुस्लिम लीग के लिए मतैक्य काल अर्थात् मित्रता का काल कहा जाता है।

# गृह स्वशासन आंदोलन

## Home Rule League Movement

- भारत में वर्ष 1916 ई. में Home Rule League Movement चलाने का श्रेय Smt. Annie Besant और बालगंगाधर तिलक को जाता है।
- बाल गंगाधर तिलक अप्रैल 1916 ई. में महाराष्ट्र के क्षेत्र में होम रूल लीग आंदोलन चलाए। बाल गंगाधर तिलक ने अपने होम रूल लीग आंदोलन का अध्यक्ष Joseph Bastista और सचिव एन. सी. केलकर को बनाया।
- बाल गंगाधर तिलक ने होम रूल लीग आंदोलन को लोकप्रिय बनाने को लेकर अपनी पत्रिका केसरी और मराठा में पत्र लिखने का काम किए।

तिलक इस आंदोलन के समय जगह-जगह जाकर यह कहा करते थे कि स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।

- Smt. Annie Besant आयरलैंड की रहने वाली थी। सर्वप्रथम आयरलैंड में ही Home Rule League Movement चलाया गया था।
- Smt. Annie Besant का भारत की राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश वर्ष 1913 ई में हुआ।
- Smt. Annie Besant ने सितंबर 1916 ई. में मद्रास में Home Rule League Movement की शुरूआत की। उन्होंने अपने आंदोलन का सचिव जॉर्ज अर्लण्डल को बनाया तथा उन्होंने अपने मुख्यालय मद्रास के अडियार को बनाया।
- Smt. Annie Besant Home Rule League Movement को लोकप्रिय बनाने को लेकर Common bill और न्यू इंडिया नामक पत्रिका निकाली।

इस आंदोलन के दौरान जब Smt. Annie Besant को गिरफ्तार किया गया तो सुब्रह्मण्यम् अच्यर ने अंग्रेजों द्वारा दी गई Night Hood की उपाधि वापस लौटा दी। इस आंदोलन के दौरान ही Smt. Annie Besant की लोकप्रियता को देखते हुए कांग्रेस ने 1917 के कलकत्ता अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया।

- भारत सचिव के पद पर असिन लार्ड माण्टेंग्यू ने अगस्त 1917 ई. में घोषणा किया जिसे अगस्त घोषणा कहा जाता है। इस अगस्त घोषणा में यह कहा गया था कि ब्रिटिश सरकार धीरे-धीरे भारत में उत्तरदायी सरकार का गठन करेगा। इसी घोषणा को लेकर Smt. Annie Besant अपने आप को Home Rule League Movement से अलग कर ली। साथ ही साथ बाल गंगाधर तिलक वेलेन्टाइन शिरोल केस की पैरवी हेतु लंदन चले गए। अर्थात् हम कह सते हैं कि Home Rule League Movement के दोनों प्रमुख नेताओं ने अपने आप को Home Rule League Movement से अलग कर लिया। जिस कारण बिना किसी परिणाम के होम रूल लीग आंदोलन समाप्त हो गए।
- वर्ष 1920 ई. में महात्मा गांधी ने होम रूल लीग आंदोलन की अध्यक्षता संभाली और All India Home Rule League का नाम बदलकर स्वराज सभा कर दिए।

## गांधी युग

- महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के काठियावाड़ प्रायद्वीप के पोरबंदर में हुआ था। उनके पिता करमचंद गांधी पोरबंदर के दीवान थे। उनकी माता पुतली बाई थी। गांधी जी ने भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया। यही कारण है कि उनके जन्म दिवस 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- गांधी जी का मानना था कि अहिंसा कायर और डरपोको का अस्त्र नहीं है। गांधी जी की आर्थिक शिक्षा पोरबंदर से प्राप्त हुआ। हाई स्कूल की शिक्षा allfred High School राजकोट से और कॉलेज की शिक्षा शामल दास कॉलेज

भावनगर से प्राप्त हुई है। बैरिस्टरी की डिग्री प्राप्त करने के लिए महात्मा गांधी वर्ष 1888 ई. में लंदन गए और डिग्री लेकर वापस 1891 ई. में भारत आए।

- महात्मा गांधी का विवाह वर्ष 1883 ई. में कस्तूरबा गांधी के साथ हुआ। महात्मा गांधी के चार पुत्र थे-

1. मणिलाल
2. हरिलाल
3. रामदास
4. देवदास

- महात्मा गांधी के पांचवें पुत्र की संज्ञा जमना लाल बजाज को दिया जाता है।

- महात्मा गांधी के राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले थे।

- महात्मा गांधी की सबसे प्रिय शिष्या मीरा बेन थी।

- गांधी जी के जीवनी के लेखक डी. जी. तेन्दूलकर थे।

- गांधी जी ने अपनी आत्मकथा My Experiment with Truth मूलतः गुजराती भाषा में लिखा है। इसका अंग्रेजी में अनुवाद महादेव देसाई ने किया है।

- गांधी जी अपनी आत्मकथा के जरिए विचार प्रकट करते हुए यह कहा है कि मैं धर्म परायन हिन्दू हूँ लेकिन भारत की संस्कृति ना हिन्दू संस्कृति है, ना इस्लामी संस्कृति है और ना हि कुछ और बल्कि भारत की संस्कृति सभी का समनवय मिश्रण है।

गांधी जी अपने आत्मकथा में यह बतलाए है कि तीन लक्ष्य उन्हें जान से भी प्यारा था।

1. हिन्दु मुस्लिम एकता
2. छूआ छूत विरोधी संघर्ष
3. समाज में महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाना।

- दादा अब्दुल्लाह के केश की पैरवी हेतु महात्मा गांधी वर्ष 1893 ई. में दक्षिण अफ्रीका गए। महात्मा गांधी 1 वर्ष के लिए दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भारतीयों के साथ अंग्रेजों के द्वारा दुर्व्यवहार किया जा रहा है और रंगभेद की नीति अपनाई जाती है।

दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भारतीयों के लिए यह आवश्यक था कि वो अपना पंजीकरण पत्र हमेशा अपने साथ रखें, रात में घर से बाहर न निकलें, ट्रेन के I Class श्रेणी से यात्रा नहीं करें।

एक बार महात्मा गांधी वर्ष 1894 ई. में डरवीन से प्रिटोरिया की यात्रा ट्रेन के 1st Class श्रेणी से कर रहे थे तो गांधी जी को St. Peter Mauritus berg नामक स्टेशन पर ट्रेन से बाहर फेक दिया गया।

गांधी जी के पास 1st Class श्रेणी का टिकट था इसलिए गांधी जी इस बात को लेकर अड़िंग हो गए कि वे ट्रेन की 1st Class श्रेणी से ही यात्रा करेंगे।

गांधीजी के हठ धर्मिता को देखते हुए उन्हें ट्रेन की 1st Class श्रेणी से यात्रा करने की अनुमति दी गई। इस घटना ने गांधी जी के जीवन के दिशा और दशा को बदल दिया और भारत के लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रेरित किया।

- महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका के नटाल प्रांत में 1894 ई. में नटाल कांग्रेस नामक संगठन की स्थापना किया। गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका के डरबन में 1904 ई. में फीनिक्स फार्म और जोहांसवर्ग में 1910 ई. में टॉल्सटाय फार्म की स्थापना किया। टॉल्सटाय फार्म के शिल्पकार जर्मनी के कॉलेन बाख थे। महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में ही सत्याग्रह शब्द को गढ़ा। “सत्य के लिए आग्रह करना” होता है। महात्मा गांधी ने सर्वप्रथम दक्षिण अफ्रीका में जुलू जनजाति के समर्थन में 1906 में सत्याग्रह का आयोजन किया। वर्ष 1908 में महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका में ही जेल की यात्रा किए। महात्मा गांधी के प्रयास से ही दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भरतीयों को Indian Relief Act 1914 के तहत अधिकार मिला।

- जब महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भारतीयों को उनका हक और अधिकार दिला दिए। तदूपश्चात् गांधी जी 9 जनवरी 1915 को काठियावाड़ी किसान के भेष भूषा में मुंबई वापस लौटे। यही कारण है कि 9 जनवरी को राष्ट्रीय प्रवासी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सर्वप्रथम 2003 ई. में 9 जनवरी को राष्ट्रीय प्रवासी दिवस के रूप में मनाया गया था। 2023 में भारत ने 17वाँ राष्ट्रीय प्रवास दिवस मनाया है।

दक्षिण अफ्रीका से वापस लौटने के बाद महात्मा गांधी अपने राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले से मिले।

गोपाल कृष्ण गोखले के कहने पर ही महात्मा गांधी ने वर्ष 1915-1916 ई. में यानि 1 वर्ष तक मुँह बंद कर के और आँख और कान खोलकर पूरे भारतवर्ष का भ्रमण किए।

## चम्पारण सत्याग्रह

- गांधी जी के द्वारा भारत में किया गया प्रथम सत्याग्रह चंपारण सत्याग्रह है। गांधी जी की मुलाकात वर्ष 1916 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में बिहार के चंपारण के भितिहरवा गांव के किसान नेता राजकुमार शुक्ला से हुई। राजकुमार शुक्ला के कहने पर ही गांधीजी अप्रैल 1917 में चंपारण आए और सत्याग्रह का आयोजन किए।
- चंपारण सत्याग्रह भितिहरवा गांव से प्रारंभ हुआ। इस सत्याग्रह के लोकप्रियता को देखते हुए बिहार के कांग्रेसी नेता राजेन्द्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिंह, जे. बी. कृपलानी, ब्रज किशोर प्रसाद इत्यादि चंपारण पहुँचकर गांधीजी को सत्याग्रह में साथ दिया ध्यान रहे कि दक्षिण भारत के किसान नेता N. G. रंगा ने गांधीजी के चंपारण सत्याग्रह का विरोध किया था।

चंपारण सत्याग्रह के दौरान लार्ड इरविन ने पहली बार गांधी जी से बात करने को लेकर पहल किया। इस क्रम में इरविन ने गांधीजी को भोजन करवाने का प्रयास किया लेकिन गांधी जी भोजन करने से इंकार कर दिए। तदूपश्चात् गांधी जी को दूध पीने के लिए आमंत्रण दिया गया जिसे गांधीजी ने स्वीकार कर लिया। इरविन ने अपने खाना बनाने वाले बतख मियां को गांधी जी के दूध में जहर मिलाने को कहा लेकिन बतख मियां दूध में जहर नहीं मिलाया। जिस कारण हम कह सकते हैं कि चंपारण सत्याग्रह के दौरान बतख मियां ने गांधी जी का जान बचाया। चंपारण सत्याग्रह की लोकप्रियता को देखते हुए अंग्रेजी सरकार ने फ्रैंक सलाई की अध्यक्षता में Champaran Agrarian Committee का गठन किया। इस कमिटी का एक सदस्य महात्मा गांधी को भी बनाया गया था। महात्मा गांधी फ्रैंक सलाई को अपने पक्ष में कर लिए जिस कारण फ्रैंक सलाई ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि तीन कठिया प्रथा सही नहीं है। इस प्रथा से चंपारण के किसान हतोत्साहित होते हैं जो ब्रिटिश अर्थव्यवस्था के लिए सही नहीं है अर्थात् जिस तीन कठिया प्रथा को समाप्त करने को लेकर चंपारण सत्याग्रह हुआ, इस सत्याग्रह के कारण ही तीन कठिया प्रथा का अंत हो गया। इतना ही नहीं बल्कि चंपारण एग्रेसियन कमिटी ने यह भी कहा कि अंग्रेज जमांदार चंपारण के किसानों से जो अवैध वसूली किया है उसका 25% किसानों को वापस लौटा दे अर्थात् हम कह सकते हैं कि चंपारण सत्याग्रह सफल हुए। इसकी सफलता पर ही रविन्द्र नाथ टैगोर ने गांधीजी को महात्मा की उपाधि दिया और गांधीजी ने रविन्द्र नाथ टैगोर को गुरुदेव की उपाधि दिया।

**Note:-** गांधी जी अपना पहला जन भाषण वर्ष 1916 में बनारस में बी.एच.यू. के उद्घाटन समारोह में दिया। बनारस हिन्दु यूनिवर्सिटी का गठन 1916 में मदन मोहन मालविय ने किया है।

- चंपारण के किसान नील की खेती नहीं करना चाहते थे। इसके बावजूद उनसे 20 कट्ठा भूमि में से 3 कट्ठा भूमि पर नील की खेती (Indigo Cultivation) जबरदस्ती करवाया जाता था। इसे ही तीन कठिया प्रथा कहा गया हैं आखिरकार चंपारण के किसान नील की खेती क्यों नहीं करना चाहते थे उसके निम्न कारण हैं-
  1. नील की खेती करने से खेत की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है।

2. 20 वीं सदी के प्रारंभ में जर्मनी में Artificial Indigo (कृत्रिम नील) की खोज हो चुकी थी जिस कारण अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय नील की मांग कम हो गई थी।
3. किसान को नील के उत्पादन में जो लागत लगता था उतना भी नहीं मिल पाता था।

**Note:-** चंपारण सत्याग्रह को गांधीजी के द्वारा किया गया प्रथम सविनय अवज्ञा आंदोलन (Civil disobediences Movement) कहा जाता है।

## अहमदाबाद मिल मजदूर हड़ताल

### Ahmedabad Mill Worker Strike

- अहमदाबाद मिल मजदूर हड़ताल को प्रथम भूख हड़ताल की संज्ञा दी जाती है। क्योंकि इसी हड़ताल के दौरान गांधीजी ने पहली बार भूख हड़ताल का प्रयोग किया। गांधी जी को भूख हड़ताल की प्रेरणा रस्किन से मिली थी। अहमदाबाद में समस्या मजदूर/श्रमिकों के साथ था।
- Plague Bonus को लेकर विवाद सूती वस्त्र के मिल मालिक और वस्त्र मिल में काम करने वाले मजदूरों के बीच था।
- प्रथम विश्व युद्ध के कारण ब्रिटेन को भारी जान माल की क्षति हुई थी। ब्रिटेन को काफी अधिक सूती वस्त्र की आवश्यकता थी। ब्रिटेन ने भारत के सूती वस्त्र उत्पादन करने वाले व्यापारियों के साथ समझौता किया कि भारत ब्रिटेन को सूती वस्त्र का निर्यात करेगा। उस समय अहमदाबाद सूती वस्त्र उत्पादन का कार्य जोड़े पर था। उसी समय अहमदाबाद में Plague फैल गया। जिस कारण सूती वस्त्र मिल में काम करने वाले मजदूर पलायन करने लगे। मजदूरों के पलायन को रोकने के लिए मिल मालिकों ने मजदूरों को Plague Bonus देने की बात कही। Plague Bonus के लालच में मजदूर जान पर खेलकर सूती वस्त्र का उत्पादन किए। जब तक Plague का प्रकोप रहा तब तक मजदूरों को Plague Bonus मिला। लेकिन Plague प्रकोप समाप्त होने के बाद मजदूरों को मिलने वाला Plague Bonus बंद कर दिया। परंतु प्रथम विश्व युद्ध के बाद महँगाई बढ़ जाने के बजाय से मजदूरों को मिलने वाले मूल वेतन से जीवन यापन करना कठिन हो गया था। इसलिए मजदूर यह चाहते थे कि उन्हें Plague Bonus मिलता रहे। लेकिन मिल मालिक देने को तैयार नहीं थे। इसलिए मजदूर गांधी जी के पास गए गांधी जी मजदूरों की समस्या समझकर अहमदाबाद में मजदूरों के समर्थन में भूख हड़ताल का आयोजन किए। इस भूख हड़ताल के जरिए अहमदाबाद के मिल में काम करने वाले मजदूरों को 35% Plague Bonus दिलाने में सफलता हासिल किए। अहमदाबाद मिल मजदूर हड़ताल के क्रम में ही गांधी जी ने वर्ग सहयोग का नारा दिया। और 1918 ई0 में Ahmedabad Labour Textile Association की भी स्थापना किए। इस हड़ताल के दौरान अनुसुईया बेन गांधी जी के मुख्य सहयोगी के तौर पर काम की। अनुसुईया बेन के भाई अम्बा लाल साराभाई थे जो गांधीजी के परम मित्र थे।

अम्बा लाल साराभाई ने साबरमती आश्रम की स्थापना में बहुत अधिक धन दान में दिए थे।

## खेड़ा सत्याग्रह

### Kheda Satyagraha (1918)

- खेड़ा सत्याग्रह को गांधी जी के द्वारा किए गए प्रथम असहयोग आंदोलन (Non-corporation Movement) की संज्ञा दी जाती है।

खेड़ा में समस्या किसानों के साथ था। खेड़ा के किसानों का फसल बर्बाद हो गया था लेकिन इसके बावजूद अंग्रेजी सरकार के द्वारा जबरदस्ती खेड़ा के किसानों से कर की वसूली की जा रही थी। इसी को लेकर खेड़ा के किसान गांधी जी के पास गए। जिसे खेड़ा सत्याग्रह कहा जाता है।

- खेड़ा सत्याग्रह के दौरान गांधीजी ने यह आहवाहन किया कि वैसे किसान जो कर देने की स्थिति में नहीं है वो कर नहीं दे और जो किसान कर देने की स्थिति में वो कर अवश्य दे। गांधी जी के इस आहवाहन को अंग्रेजी सरकार ने स्वीकार लिया जिस कारण हम कह सकते हैं। कि खेड़ा सत्याग्रह भी सफल रहा। इस सत्याग्रह में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका गुजरात सभा नामक संगठन ने निभाया। उस समय गुजरात सभा के अध्यक्ष महात्मा गांधी ही थे। खेड़ा सत्याग्रह के दौरान ही सरदार पटेल गांधीजी से मिले और गांधी जी के अनुयायी बन गये।

## जलियाँवाला बांग कांड

- भारत में क्रांतिकारी गतिविधियाँ जो काफी बढ़ गई थी उन गतिविधियों पर रोक लगाने को लेकर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया गया जिसे सेडिशन आयोग कहा गया। सेडिशन आयोग के सिफारिश पर ही क्रांतिकारी गतिविधियों पर रोक लगाने को लेकर Rowlatt Act कानून 19 मार्च, 1919 को लागू किए गए। इस कानून के तहत संदेह के आधार पर किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार कर बंद कमरा में मुकदमा चलाकर कम से कम 2 वर्ष तक की सजा सुनाई जा सकती थी।

इस कानून के तहत अगर किसी को गिरफ्तार किया जाता था तो वे ना अपील कर सकते थे, ना दलील दे सकते थे और ना ही वकील रख सकते थे। जिस कारण इस कानून को बिना अपील, बिना दलील और बिना वकिल का कानून कहा जाता है।

- महात्मा गांधी ने इस कानून को काला कानून कहा है। गांधीजी ने इस कानून के खिलाफ सत्याग्रह किया जिसे Rowlatt Satyagraha कहा जाता है। इस सत्याग्रह के तात्त्वाधान में ही महात्मा गांधी ने 6 अप्रैल 1919 को देश व्यापी हड़ताल का आयोजन किया।

Rowlatt Satyagraha का सबसे प्रमुख केन्द्र पंजाब का अमृतसर बना जहाँ इसका नेतृत्व डॉ. सतपाल और सैफुद्दीन किचलू कर रहे थे। इसी कारण इन दोनों को 9 अप्रैल 1919 को गिरफ्तार कर लिया गया। इन दोनों के गिरफ्तारी के विरोध में वैशाख की पूर्णिमां के दिन जलियावाला बाग में एक आम जन सभा का आयोजन किया जा रहा था। इस आम जनसभा पर गोली चलाने का आदेश जेनरल O Dyer ने दिया। O Dyer के आदेश पर R. Dyer जलियावाला बाग पहुँचा और बाग को चारों तरफ से घेरकर अंधाधुंध गोली बरसाई गई। इस घटना को ही इतिहास में जलियावाला बाग हत्याकांड कहा जाता है।

इस हत्याकांड को C. F Andrews ने जान बूझकर की गई हत्याकांड की संज्ञा दिया। इस हत्याकांड की आलोचना वैश्विक स्तर पर हुई लेकिन ब्रिटेन के एक समाचार पत्र The Morning Post ने General O. Dyer के लिए राशि एकत्रित किया। इस हत्याकांड के विरोध में शंकरन नायर वायसराय के कार्यकारिणी पद से त्यागपत्र दे दिया।

जमनालाल बजाज ने राय बहादूर की उपाधि वापस लौटा दी और रविन्द्र टैगेर ने Sir और Night hood की उपाधि वापस लौटा दी। कांग्रेस ने वर्ष 1919 के अमृतसर अधिवेशन में जलियावाला बाग हत्याकांड की आलोचना की।

- जलियावाला बाग हत्याकांड की आलोचना को देखते हुए इसकी जांच हेतु अंग्रेजी प्रशासन ने W. W. Hunter की अध्यक्षता में 8 सदस्य का आयोग का गठन किया गया जिसे हंटर कमीशन आयोग कहा गया। इस आयोग में पांच अंग्रेज सदस्य और तीन भारतीय सदस्य थे।

**पांच अंग्रेजी सदस्य निम्न थे-**

1. W.W. Hunter (अध्यक्ष)
2. रैस्किन
3. W. C. Rice
4. Tomas Smith
5. George Bero

**तीन भारतीय सदस्य निम्न थे-**

- 1. जगत नारायण
- 2. चिमन लाल सीतलवाड़
- 3. साहबजादा सुलतान अहमद
- हंटर आयोग ने जो अपनी रिपोर्ट दी उसके अनुसार 379 लोग मारे गए और लगभग हजारों की संख्या में लोग घायल हुए।

हंटर आयोग के रिपोर्ट से कांग्रेस सहमत नहीं थी। इसलिए जलियावाला बाग हत्याकांड की जांच हेतु कांग्रेस ने मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में तहकीकात कमिटि का गठन किया। इस कमिटि के अन्य सदस्य महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू आदि थे। तहकीकात कमिटि का प्रारूप महात्मा गांधी ने तैयार किया।

**Note:-**

- (i) जलियावाला बाग हत्याकांड के दोषियों को बचाने के लिए अंग्रेजी सरकार ने इण्डेन्मिटी बिल लाया।
- (ii) हंसराज नामक भारतीय ने अंग्रेजों को सहयोग किया था।
- (iii) General O. Dyer की हत्या लंदन के कैक्सटन हॉल में 13 मार्च 1940 को सरदार उद्यम सिंह ने कर दिया।
- (iv) सरदार उद्यम सिंह और मदन लाल धींगरा ऐसे क्रांतिकारी हुए जिनको लंदन में फांसी की सजा दी गई है।

## खिलाफत आंदोलन

- इस्लाम धर्म के प्रवर्तक पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी खलीफा कहलाए। 20वीं सदी के प्रारंभ में तुर्की के खलीफा पूरे विश्व के मुस्लिमों के नेतृत्वकर्ता माने जो थे। तुर्की के प्रथम विश्वयुद्ध में ब्रिटेन के विरुद्ध लड़ा लेकिन प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटेन की जीत हुई। ब्रिटेन ने तुर्की से अपना बदला लेने के लिए तुर्की का विभाजन किया तथा तुर्की के खलीफा को अपमानित किया जिसको लेकर पूरे विश्व जगत के मुस्लिम ब्रिटेन के खिलाफ हो गए। भारतीय मुस्लिमों ने ब्रिटेन अर्थात् अंग्रेजों के खिलाफ जो आंदोलन किए उसे खिलाफत आंदोलन कहा जाता है। यह आंदोलन वर्ष 1919 से 1924 के बीच चला तथा बिना किसी परिणाम के यह आंदोलन समाप्त हो गया।
- यह आंदोलन अली बंधु अर्थात् मुहम्मद अली और शौकत अली के नेतृत्व में चलाया गया है। इस आंदोलन को सुचारू एवं सुव्यवस्थित रूप सेचलाने को लेकर खिलाफत संगठन बनाया गया। इस आंदोलन को महात्मा गांधी और कांग्रेस ने अपना समर्थन प्रदान किया। ध्यान रहे कि मदन मोहन मालवीय ने खिलाफत आंदोलन को अपना समर्थन नहीं दिया था। गांधीजी ने जो खिलाफत आंदोलन को अपना समर्थन दिया। इसको लेकर मुहम्मद अली जिन्ना ने गांधी जी को लेकर कहा कि वे धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा दे रहे हैं और राजनीति में धर्म को हस्तक्षेप करवा रहे हैं।
- खिलाफत आंदोलन के तात्वाधान में 23 नवंबर 1919 को दिल्ली में संयुक्त बैठक आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता महात्मा गांधी ने किया था। इससे पहले 17 अक्टूबर 1919 को पूरे भारत वर्ष में खिलाफत दिवस के रूप में मनाया गया। अप्रैल 1919 में दिल्ली के जामा मजिस्जद में स्वामी श्रद्धानन्द ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर भाषण दिया था।

1924 आते-आते खिलाफत आंदोलन तब समाप्त हो गए जब तुर्की के शासक मुस्तफा कमाल पाशा ने खलीफा के पद को समाप्त कर दिया।

## असहयोग आंदोलन

(Non-Corporation Movement)

- भारत में होने वाला यह पहला जनव्यापी आंदोलन था। इस आंदोलन का राष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया। यह पहला आंदोलन है जिसमें कांग्रेस ने अपने आप को संवैधानिक दायरा से बाहर निकालकर जन संघर्ष के रास्ते को चुना।

- इस आंदोलन को शुरू करवाने में बाल गंगाधर तिलक का बहुत बड़ा योगदान था लेकिन तिलक इस आंदोलन के परिणाम को नहीं देख सके। क्योंकि यह आंदोलन शुरू 1 अगस्त, 1920 को हुआ तथा तिलक का निधन भी 1 अगस्त 1920 को ही हो गया।

तिलक को श्रद्धांजलि देने के लिए तिलक स्वराज फंड का गठन किया गया था।

- गांधीजी के असहयोग आंदोलन से कुछ कांग्रेसी जैसे एनी बेसेन्ट, विपिन चंद्रा पाल, जी. एस. खापड़े, मोहम्मद अली जिन्ना सहमत नहीं थे जिसे कारण इन लोगों ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया। इसके बावजूद असहयोग आंदोलन चलाए गए। कांग्रेस ने दिसंबर 1920 के नागपुर अधिवेशन में असहयोग आंदोलन चलाए जाने के प्रस्ताव को पारित किया।
- असहयोग आंदोलन के प्रस्तावक चित्तरंजन दास थे। गांधीजी ने असहयोग आंदोलन के दौरान 1 वर्ष में स्वराज प्राप्ति का लक्ष्य रखा था। गांधीजी नागपुर में भाषण देते हुए यह बोले थे कि ब्रिटिश सरकार चेत जाए कि भारतीयों को उसका हक और अधिकार प्रदान कर दें। नहीं तो हर भारतवासी का यह कर्तव्य होगा कि वो ब्रिटिश साम्राज्य को बर्बाद करने को लेकर काम करे। असहयोग आंदोलन के दौरान ही महात्मा गांधी ने विजयवाड़ा में 1921 ई. में एक सम्मेलन के दौरान धोती कुर्ता त्याग कर लंगोट पहनने की बात को स्वीकार किया।

**Note:-** बाल गंगाधर तिलक के अर्थों को गांधीजी के साथ-साथ शौकत अली नामक मुस्लमान ने अपना कंधा दिया था।

- गांधीजी ने असहयोग आंदोलन के दौरान विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी अपनाने पर बल दिया। गांधीजी के आहवान पर विदेशी वस्त्रों का होलिका दहन किया गया। इसकी आलोचना रविन्द्र नाथ टैगोर ने करते हुआ कहा कि ये निष्ठूर बर्बादी है। इसके प्रति उत्तर में गांधीजी ने कहा कि यह अंग्रेजों के साथ सर्वोत्तम व्यवहार है।
- गांधीजी ने असहयोग आंदोलन के दौरान यह आहवाहन किया कि छात्र अंग्रेजों द्वारा स्थापित विद्यालय से नाम कटवा ले, वकील वकालत करना छोड़ दे। गांधीजी के इस आहवाहन पर जय प्रकाश नारायण जैसे छात्र पटना कॉलेज से नाम कटवा लिए। राजेन्द्र प्रसाद, मोतीलाल नेहरू, चितरंजन दास, तेज बहादूर सपूर, भूला भाई देसाई जैसा वकील वकालत करना छोड़ दिए।
- असहयोग आंदोलन के दौरान गांधीजी के आहवान पर बिहार के लोगों ने विदेशी शराब पीना छोड़ दिया जिस कारण अंग्रेजों के राजस्व में काफी कमी आई। इस कमी को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने विज्ञापन जारी किया। उस विज्ञापन में Sikander, Shakespeare, Napolean जैसे लोगों का चित्र लगाया और यह बतलाने का प्रयास किया कि ये लोग महान इसलिए हुए क्योंकि ये लोग शराब पीते थे।
- असहयोग आंदोलन के दौरान ही बिहार विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ जैसे राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना हुई ताकि वैसे छात्र जो अंग्रेजी विद्यालय से नाम कटवा लिए हैं वो अपनी पढ़ाई को आगे जारी रख सके।
- असहयोग आंदोलन के क्रम में अवध के क्षेत्र में एक आंदोलन मदारी पासी के नेतृत्व में हुआ है।
- असहयोग आंदोलन के क्रम में केरला के क्षेत्र में 1921 ई. में मोपला विद्रोह अली मुसलियार के नेतृत्व में हुए हैं।
- असहयोग आंदोलन के दौरान ही पटना के दीघा में सदाकत आश्रम की स्थापना खैरूल मियां से जमीन लेकर मजहरूल हक ने किया।
- असहयोग आंदोलन ने भारतीय जनता के मन से अंग्रेजों के डर को समाप्त कर दिया।
- असहयोग आंदोलन जब शुरू हुआ था तो उस समय भारतीय वायसराय लॉर्ड चेम्सफोर्ड थे लेकिन 1921 ई. में चेम्सफोर्ड के स्थान पर अगला भारतीय वायसराय बनकर लॉर्ड रिडिंग आया जिसने आंदोलनकारियों के ऊपर दमानात्मक कारबाई किया इसलिए चौरी-चौरा कांड हुआ। इस कांड के बजह से ही असहयोग आंदोलन को स्थगित करना पड़ा।
- 4-5 फरवरी, 1922 को असहयोग आंदोलन के आंदोलनकारियों ने उत्तरप्रदेश के गोरखपुर के चौरी-चौरा नामक पुलिस स्टेशन को चारों तरफ से घेर लिया और उसमें आगजनी कर दी। इस आगजनी में एक हवलदार सहित 22 पुलिसकर्मी मारे गए। इसी घटना को इतिहास में चौरी-चौरा कांड कहा जाता है। इस कांड के समय महात्मा गांधी गुजरात के



बारदोली में थे। बारदोली में ही उन्होंने Congress Working Committee की बैठक बुलाई और फिर असहयोग आंदोलन के स्थगन का निर्णय गांधी जी ने लिया।

- असहयोग आंदोलन 12 फरवरी 1922 ई. को स्थगित हुए। इस आंदोलन के स्थगन के बाद मोतीलाल नेहरू, चित्तरंजन दास, सुभाष चंद्र बोस, डॉ. मुंजे इत्यादि जैसे नेताओं ने गांधी जी की आलोचना की।
- सुभाष चंद्र बोस ने कहा कि जब जनता का उत्साह चरम पर हो तो उस समय आंदोलन वापस लेना देशद्रोह से कम नहीं है।
- मोतीलाल नेहरू ने कहा है कि अगर अहिंसा धर्म का पालन कन्याकुमारी के किसी गांव ने नहीं किया हो तो उसकी सजा हिमालय के किसी गांव को क्यों दी जा रही है।
- डॉ. मुंजे ने गांधीजी के खिलाफ निंदा प्रस्ताव लाया।
- गांधीजी ने चौरी-चौरा कांड को हिमालय जैसे बड़ी भूल की सज्जा दी है।
- चौरी-चौरा कांड के बाद Ahmedabad Session Court में गांधी जी पर मुकदमा चलाया गया और वहाँ का जज ब्रूमफील्ड (10 March 1922) ने हिंसा भड़काने का आरोप लगाते हुए 6 वर्ष की सजा सुनाई। लेकिन स्वास्थ्य संबंधी कारणों से गांधीजी को 1924 ई. आते-आते जेल से रिहा कर दिया गया।

## स्वराज पार्टी

- 1 जनवरी 1923 को इलाहाबाद यानि वर्तमान के प्रयागराज में स्वराज पार्टी की स्थापना मोतीलाल नेहरू और चित्तरंजन दास के द्वारा किया गया। इस पार्टी के प्रथम अध्यक्ष C. R. Das को बनाया गया। वहीं प्रथम महासचिव मोतीलाल नेहरू बनें।

### परिवर्तनवादी और अपरिवर्तनवादी

- कांग्रेस के भीतर मोतीलाल नेहरू, चित्तरंजन दास, सुभाषचंद्र बोस, विट्ठल भाई पटेल जैसे कांग्रेसी नेताओं का मानना था कि 1923 ई0 में होने वाले केन्द्रीय विधान परिषद् के चुनाव में भाग लेकर विधान परिषद् का सदस्य बनकर अंग्रेजों की नीतियों का विरोध करेंगे। इस विचारधारा को मानने वाले परिवर्तनवादी कहलाए।
- वैसे कांग्रेसी जो यह 1923 में होने वाले चुनाव में भाग लेने को तैयार नहीं थे तथा उनका मानना था कि बिना सदन का सदस्य बने अंग्रेजों की नीतियों का विरोध करेंगे। ये अपरिवर्तनवादी कहलाए।
- राजेन्द्र प्रसाद, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, जी. बी. कृपलानी इत्यादि अपरिवर्तनवादी हुए।
- देश बंधु के नाम से चित्तरंजन दास और दीन बंधु के नाम से C. F. Andrews को जाना जाता है।
- 1923 के कांग्रेस के दिल्ली में हो रहे विशेष अधिकेशन के जरिए Congress ने स्वराजवादियों को 1923 में होनेवाले चुनाव में समर्थन देने की बात को स्वीकार किया जिस कारण कांग्रेस टूटने से बच गई।
- स्वराज पार्टी ने 1923 के केन्द्रीय विधान परिषद् के लिए होने वाले चुनाव में 101 सीट में से 42 सीट प्राप्त किया।
- केन्द्रीय विधान परिषद् के प्रथम भारतीय अध्यक्ष बिठल भाई पटेल हुए।
- जून 1925 में चित्तरंजन दास का निधन हो गया और वर्ष 1930 जाते-जाते स्वराज दल का अस्तित्व खत्म हो गया।
- 1924 ई. में महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, चित्तरंजन दास ने संयुक्त रूप से एक वक्तव्य दिया जिसे Gandhi Das Pact कहा जाता है।

**Note:-** 1. असहयोग आंदोलन में बिहार के छपरा में सक्रिय राहुल सांकृत्यायन थे।

2. गांधीजी ने हंटर कमीशन आयोग के रिपोर्ट को निर्लज्जतापूर्ण और लीपापोती वाला रिपोर्ट कहा।
3. कांग्रेस असहयोग आंदोलन चलाने को लेकर जब प्रस्ताव पारित कर रहा था तो उस समय गांधीजी ने कहा कि अंग्रेज शैतान हैं, उसके साथ सहयोग संभव नहीं है।

4. असहयोग आंदोलन चलाये जाने के प्रस्ताव पारित होने पर Smt. Annie Besant ने यह कहा कि यह प्रस्ताव स्वतंत्रता आंदोलन को लगने वाला बहुत बड़ा धक्का के समान है।

## भारत के क्रांतिकारी आंदोलन

- उदारवादी और उग्रवादियों की विफलता ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में एक नए वर्ग को जन्म दिया। जिसे क्रांतिकारी वर्ग कहा गया है।
- क्रांतिकारियों को कांग्रेस से कोई लेना देना नहीं था। उन्हे किसी भी कीमत पर पूर्ण आजादी चाहिए था। क्रांतिकारियों का लक्ष्य या खून का बदला खून।
- Rowlatt committee की Report बतलाता है कि भारत में क्रांतिकारी आंदोलन की शुरूआत Maharashtra से हुई है। Maharashtra में इस आंदोलन को शुरू करने का श्रेय चितपावन ब्राह्मण को जाता है।
- भारत में क्रांतिकारी आंदोलन दो चरण में चले हैं।
  1. **प्रथम चरण (1907-1917) :** - बंगल विभाजन के खिलाफ होने वाले स्वदेशी आंदोलन के मंद पड़ जाने के कारण क्रांतिकारी आंदोलन के प्रथम चरण का उदय हुआ। इसकी विशेषता यह है कि यह भारत और विदेश दोनों में चले थे।
  2. **द्वितीय चरण (1924-1934) :** - असहयोग आंदोलन के समाप्त होने के बाद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जो शिथिलता आ गई थी उसी को इस चरण में क्रांतिकारी आंदोलन के द्वितीय चरण का उदय हुआ। इस चरण में क्रांतिकारी आंदोलन सिर्फ भारत तक सीमित रहे।

## महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आंदोलन ( व्यायाम मंडल )

- वर्ष 1896-97 ई. में Maharashtra में व्यायाम मंडल नामक के गुप्त क्रांतिकारी संगठन की स्थापना चापेकर बंधु ने किया। चापेकर बंधु के अंतर्गत दो भाई बाल कृष्ण चापेकर और दामोदर चापेकर आते हैं। चापेकर बंधु ने प्लेग अधिकारी रैंड और अयर्स्ट की हत्या, 1897 ई. में कर दिया।  
रैंड और अयर्स्ट की हत्या भारत में होनेवाले अंग्रेजों की प्रथम राजनीतिक हत्या है। यह दोनों प्लेग अधिकारी थे।

Pune में 1896-97 में फैले प्लेग पर नियंत्रण पाने के लिए प्लेग अधिकारी रैंड और अयर्स्ट की नियुक्ति की गई थी। ये दोनों अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके भारतीय महिला और बच्चियों के साथगलत व्यवहार किया करता था। इसलिए प्लेग अधिकारी रैंड और अयर्स्ट की हत्या चापेकर बंधु ने कर दी। अंग्रेजी प्रशासन ने यह घोषणा किया कि जो भी व्यक्ति रैंड और अयर्स्ट की हत्या की सूचना अंग्रेजों को देगा, उसे ईनाम दिया जाएगा चंद पैसों के लोभ में द्रविड़ बंधु ने अंग्रेजों को सूचना दे दी। जिस कारण चापेकर बंधु को पकड़कर फांसी पर लटका दिया गया और व्यायाम मंडल नामक गुप्त क्रांतिकारी संगठन के प्रमुख क्रांतिकारियों को गिरफ्तारकर जेल में बंद कर दिया गया।

**Note:-** रैंड और अयर्स्ट की हत्या की तुलना बाल गंगाधर तिलक ने शिवाजी द्वारा किए गए अफजल खाँ की हत्या से किया है।

## मित्र मेला

- मित्र मेला नामक गुप्त क्रांतिकारी संगठन की स्थापना Maharashtra के Nasik में वर्ष 1899 ई. में B.D Savarkar के द्वारा किया गया है। यही संगठन 1904 ई. में अभिनव भारत के नाम से जाना गया। अभिनव भारत के भी संस्थापक B.D. Savarkar को ही माना जाता है।

## नासिक षड्यंत्र केस (1909)

- अधिनव भारत संगठन से जुड़े क्रांतिकारी अनंत कान्हरे ने वर्ष 1909 ई. में नासिक के District Magistrate जैक्सन की गोली मारकर हत्या कर दी। इसी आरोप में अनंत कान्हरे पर जो केस चलाया गया उस केस को इतिहास में नासिक षड्यंत्र केस कहा जाता है। इस केस के अंतर्गत अनंत कान्हरे को फांसी की सजा दी गई।

नासिक षड्यंत्र केस के तहत B.D. Savarkar को गिरफ्तार कर S.S Maurya नामक जहाज से London से भारत लाया गया। और उन्हें आजीवजन कारावास की सजा सुनाई गई। लेकिन वर्ष 1924 ई. में जेल से रिहा कर दिया गया। तदूपश्चात् B.D. Savarkar हिन्दु महासाभा से जुड़कर हिन्दुत्ववादी विचारधारा को आगे बढ़ाने में लग गए। नासिक षड्यंत्र केस के तहत Maharashtra में क्रांतिकारी आंदोलन थम सा गया।

**Note:-** Maharashtra में क्रांतिकारी आंदोलन उभारने का श्रेय Tilak के पत्र Keshari और परांजपे के पत्र काल को कहा जाता है।

## दिल्ली षड्यंत्र केस (1912)

- तृतीय दिल्ली दरबार का आयोजन वर्ष 1911 ई. में हुआ। तृतीय दिल्ली दरबार में यह घोषणा किया गया कि भारत की राजधानी कलकत्ता के बजाय दिल्ली को बनाया जाएगा और फिर 1 अप्रैल 1912 को भारत की राजधानी दिल्ली बनी।

तदूपश्चात् उस समय के भारतीय वायसराय हार्डिंग-II कलकत्ता से दिल्ली की ओर प्रस्थान किए।

हार्डिंग-II दिल्ली में जब प्रवेश करने वाला था तो उसी समय हार्डिंग-II पर बम फेंका गया। उस बम कांड में हार्डिंग-II बच गए परंतु उस बम कांड को लेकर क्रांतिकारियों पर जो मुकदमा चलाया गया। उस मुकदमा को इतिहास में दिल्ली षड्यंत्र केस कहा जाता है।

दिल्ली षड्यंत्र केस में जब रास बिहारी बोस का नाम आने लगा तो वे भागकर जापान चले गए।

- हार्डिंग-II पर बम फेंकने की योजना रास बिहारी बोस ने तैयार किया था। इस केस के अंतर्गत चार क्रांतिकारी को फांसी की सजाई गई जो निम्न है-

1. अवध बिहारी
2. बाल मुकुंद
3. बसंत विश्वास
4. मास्टर अमीर चन्द

## बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन

- भले ही क्रांतिकारी आंदोलन की शुरूआत महाराष्ट्र से हुई हो परंतु क्रांतिकारी आंदोलन का प्रमुख केन्द्र बंगाल बना।
- बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन उभारने का श्रेय भद्रलोक समाज नामक संगठन को जाता है। इस संगठन की स्थापना बारीन्द्र कुमार घोष और भूपेन्द्र नाथ दत्त ने किया है।

अर्थात् हम यह भी कह सकते हैं कि बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन उभारने का श्रेय बारीन्द्र कुमार घोष और भूपेन्द्र नाथ दत्त को जाता है।

दोनों ने मिलकर युगांतर नामक समाचार पत्र निकाला और इसमें लोगों को उत्तेजित करते हुए कहा कि-

“समस्या का समाधान जनता के अपने हाथों में है। अगर भारत की 30 करोड़ जनता अपना 60 करोड़ हाथ ऊपर उठा ले तो अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ेगा।”

- बारीन्द्र कुमार घोष ने भवनी मंदिर, वर्तमान रणनीति नामक उपन्यास के माध्यम से क्रांतिकारी आंदोलन को उत्तेजित करने का काम किया। बारीन्द्र कुमार घोष ने 1907 ई. में क्रांतिकारी गतिविधियों को संचालित करने को लेकर मणिकतुल्ला पार्टी और युगांतर समिति जैसे संगठन की स्थापना किया।

- युगांतर समिति के दो प्रमुख सदस्य खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने मुजफ्फरपुर के जिला जज किंग्स फोर्ड का गाड़ी समझकर बम फेंका। लेकिन उस गाड़ी में किंग्स फोर्ड नहीं था बल्कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समर्थक वकील कैनेडी की पत्नी और पुत्री बैठी हुई थीं जो मारी गईं।
- खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी किंग्स फोर्ड की हत्या इसलिए करना चाहता था क्योंकि किंग्स फोर्ड छोटे से छोटे अपराध के लिए भी भारतीयों को बड़ी से बड़ी सजा दिया करते थे। घटना को अंजाम देने के बाद प्रफुल्ल चाकी ने आत्म हत्या कर ली और खुदीराम बोस भगकर समस्तीपुर चले गए वहाँ फतह सिंह और शिव प्रसाद मिश्र नामक पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और उनपर मुकदमा चलाया गया।
- खुदीराम बोस की तरफ से पैरवी कालीदास बोस ने किया लेकिन इसके बावजूद कर्नफुल नामक जज ने खुदीराम बोस को फांसी की सजा सुनाई।
- अगस्त 1908 ई. में खुदीराम बोस को फांसी पर लटकाया गया। वे एक हाथ में गीता लेकर शहीद हुए। उनके शहिदी के समय उनका उम्र लगभग 19 वर्ष हुआ करता था। सबसे कम उम्र में फ्रांसी पाने वाले क्रांतिकारी खुदीराम बोस हुए। उनका जन्म 1889 ई. में बंगाल के मिदनापुर में हुआ था।

### अनुशीलन समिति

- यह एक क्रांतिकारी संगठन था। इसका उद्देश्य खून के बदला खून था।
- अनुशीलन समिति का नामकरण नरेन भट्टाचार्य के द्वारा किया गया था। सर्वप्रथम बगाल में इस समिति की स्थापना 1902 ई. में पी. मिश्र ने किया। वर्ष 1904 में Dhaka में अनुशीलन समिति की स्थापना पुलिस दास ने किया।
- 1907 में कलकत्ता में अनुशीलन समिति की स्थापना बारीन्द्र कुमार घोष और भूपेन्द्र नाथ दत्त ने किया है।

### अलीपुर घट्यंत्र केस

- बंगाल के क्रांतिकारियों के द्वारा जो अवैध हथियार रखे जाते थे उसको लेकर 34 क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर अलीपुर कोर्ट में केस चलाया गया। जिस केस को इतिहास में अलीपुर घट्यंत्र केस कहा जाता है।  
इस केस में घोष बंधु अर्थात् अरविंद घोष और बारीन्द्र कुमार घोष काभी नाम आया था। इस केस में अरविंद घोष की तरफ से पैरवी सी. आर. दास ने किया जिस कारण अरविंद घोष बच निकले।
- जब अरविंद घोष जेल से बाहर आए तो उन्होंने कहा कि जेल में उन्हें भगवान कृष्ण के दर्शन हुए।
- इस केश का सरकारी गवाह नरेन्द्र गोसाई बना था। नरेन्द्र गोसाई की हत्या जेल में ही सत्येन्द्र नाथ घोष ने कर दी जो बारीन्द्र कुमार घोष के गुट के सदस्य थे। इसलिए बारीन्द्र कुमार घोष को गुट के सभी सदस्यों को आजीवन करावास की सजा सुनाई गई।

### हावड़ा घट्यंत्र केस

- हावड़ा के Deputy Police Superintendent शमसुल आलम की हत्या को लेकर वर्ष 1910 ई. में जो केस चलाया गया उसे ही हावड़ा घट्यंत्र केस कहते हैं।  
हावड़ा घट्यंत्र केस में अभियुक्त जतीन्द्र नाथ मुखर्जी को बनाया गया। इन्हें इतिहास में बाघा जनित के नाम से जाना जाता है।

### विदेशों में क्रांतिकारी आंदोलन

- विदेशों में क्रांतिकारी आंदोलन का एक प्रमुख केन्द्र लंदन बना। जहाँ क्रांति फैलाने का कारण श्याम जी कृष्णा वर्मा और वी. डी. सावरकर ने किया।
- श्याम कृष्णा वर्मा को क्रांतिकारी का पिता कहा जाता है। श्यामजी कृष्णा वर्मा ब्रिटेन के समाजवादी नेता हिडमैन के प्रभाव में आकर वर्ष 1905 ई. में लंदन में Indian Home Rule Society नामक संगठन की स्थापना किया।

- श्यामजी कृष्ण वर्मा ने 1905 ई. में लंदन में ही इंडिया हाउस नामक संगठन की भी स्थापना की। श्यामजी कृष्ण वर्मा अपने विचाराधारा को प्रचारित और प्रसारित करने को लेकर Indian Sociologist नामक पत्रिका निकाला।
- श्यामजी कृष्ण वर्मा के लंदन में बढ़ते कद को देखते हुए ब्रिटिश प्रशासन ने उन्हें लंदन छोड़ने पर विवाद किया।
- लंदन छोड़ने के बाद श्यामजी कृष्ण वर्मा के कार्य को आगे बी. डी. सावरकर ने बढ़ाया लेकिन शीघ्र ही बी. डी. सावरकर को नासिक षडयंत्र केस में आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

### विलियम कर्जन वायली की हत्या

विलियम कर्जन वायली एक ब्रिटिश अधिकारी था। इनकी हत्या वर्ष 1909 में इंडियन हाऊस क्रांतिकारी संगठन से जुड़े मदन लाल डिंगरा ने कर दिया। जिस कारण उन्हें लंदन में ही फांसी की सजा दे दी गई।

#### PARIS

- लंदन के बाद क्रांतिकारी आंदोलन का एक प्रमुख केन्द्र पेरिस बना जहाँ क्रांतिकारी आंदोलन उभारने का श्रेय मैडम भीकाजी रुस्तम कामा को जाता है। वे महाराष्ट्र के पारसी समाज से संबंधित थी। वे लंदन में दादा भाई नौरोजी के निजी सचिव के तौर पर काम की थी। साथ ही साथ उन्होंने श्याम जी कृष्ण वर्मा के सहयोगी के तौर पर काम की।
- मैडम कामा ने ही सर्वप्रथम विदेशी सरजमी पर भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराने का काम की। उन्होंने 1907 ई. में जर्मनी के स्टूटगार्ट में अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेसी सम्मेलन में झंडा फहराने का काम की।

#### AMERICA

- क्रांतिकारी आंदोलन का एक प्रमुख केन्द्र अमेरिका बना। अमेरिका में सर्कुलर-ए-आजादी रामनाथ पुरी ने, स्वदेश-गणेश दामोदर कुमार ने फ्री हिन्दुस्तान- तारक नाथ दास ने स्थापित किया था। इसके अलावे गदर पार्टी की भी स्थापना हुई थी।

#### गदर पार्टी

- इसकी स्थापना अमेरिका के Sen Francisco (सेन फ्रांसिस्को) में 1 नवम्बर 1913 को लाला हरदयाल के द्वारा किया गया। इस पार्टी का प्रथम अध्यक्ष सोहन सिंह भाखना को बनाया गया।

इस पार्टी का प्रथम कोषाध्यक्ष काशी राम और प्रथम महासचिव लाल हरदयाल को बनाया गया था। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान इस पार्टी का उद्देश्य गदर आंदोलन के माध्यम से ब्रिटिशों को भारत से बाहर करना था। गदर पार्टी ने 1857 की क्रांति के स्मृति में गदर नामक पत्रिका निकाला। गदर पत्रिका का पहला अंक उर्दू भाषा में छपा था। बाद के दिनों में जाकर यह पत्रिका गुजराती, मराठी, अंग्रेजी इत्यादि भाषाओं में भी छपने लगा था।

इस पत्रिका के ऊपरी पृष्ठ पर लिखा होता था- “अंग्रेजी राज्य का कच्चा चिट्ठा।”

#### कामागाटामारू प्रकरण (1914)

- कामागाटामारू एक जापानी जहाज था। इस जहाज पर गुरुदत्त सिंह ने 376 यात्रियों को बैठाकर हॉग-कांग से Bankuwar की ओर रवाना किया।

जब यह जहाज Bankuwar (बैंकुवर) पहुँचा तो कनाडाई प्रशासन ने जहाज को बंदरगाह पर रुकने नहीं दिया क्योंकि यह जहाज भारत से सीधे कनाडा नहीं आया था।

तदूपश्चात् जहाज को भारत के लिए रवाना किया गया। जब यह जहाज भारत के बजबज नामक बंदरगाह पर पहुँचा तो उस पर बैठे यात्रियों ने ब्रिटिश प्रशासन के खिलाफ विद्रोह कर दिया। इस घटना को इतिहास में कामागाटामारू प्रकरण कहा जाता है। इस विद्रोह में 18 यात्री मारे गए।

#### AFGHANISTAN

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 1915 ई. में अफगानिस्तान में स्वतंत्र एवं सामानांतर सरकार का गठन राजा महेन्द्र प्रताप ने किया। महेन्द्र प्रताप ही इस सरकार के प्रथम राष्ट्रपति तथा बरकतुल्ला इस सरकार के प्रथम प्रधानमंत्री बनाए गए।

### क्रांतिकारी आंदोलन का द्वितीय चरण (1924-1934)

- असहयोग आंदोलन के स्थगन की वजह से स्वतंत्रा आंदोलन में जो शिथिलता आ गई थी। इसी वजह से द्वितीय चरण के क्रांतिकारी आंदोलन का उदय हुआ।
- शचीन्द्र सान्ध्याल ने कानपुर में वर्ष 1924 ई. में Hindustan Republican Association जैसे क्रांतिकारी संगठन की

स्थापना किया। शाचीन्द्र सान्याल ने ही बंदी जीवन जैसे साहित्य की भी रचना की।

- ब्रिटिश सरकार का खजाना सहारनपुर से लखनऊ जा रहा था। इस खजाना को 9 अगस्त, 1925 को काकोरी नामक स्टेशन पर Hindustan Republican Association के सदस्यों ने लूट लिया। यही कांड इतिहास में काकोरी कांड के नाम से जाना जाता है। इस कांड को लेकर Hindustan Republican Association के क्रांतिकारियों पर जो मुकदमा चलाया गया उसे काकोरी षड्यंत्र केस कहते हैं।
- काकोरी षड्यंत्र केस के मुख्य सूत्रधार राम प्रसाद बिस्मिल्ल थे।
- काकोरी षड्यंत्र केस के अंतर्गत चार क्रांतिकारी राम प्रसाद बिस्मिल्ल, रौशन सिंह, राजेन्द्र लाहिरी और अशफाक उल्ला खां को फांसी दी गई।
- राम प्रसाद बिस्मिल्ल को गोरखपुर जेल में, रौशन सिंह को नैनी जेल, राजेन्द्र लाहिरी को गोंडा जेल में और अशफाक उल्ला खां को फैजाबाद जेल में फांसी पर लटकाया गया।
- संभवतः अशफाक उल्ला खां प्रथम मुस्लिम क्रांतिकारी हुए जिन्हें फांसी की सजा मिली है।
- फांसी पर चढ़ाने से पहले राम प्रसाद बिस्मिल्ल को जब पीने के लिए दूध दिया गया तो उन्होंने इंकार करते हुए कहा कि अब मैं सिर्फ अपनी मां का दूध पिऊंगा।
- भगत सिंह मैजिनी द्वारा स्थापित यंग इटली संगठन (1831) से प्रभावित होकर 1926 ई. में नौजवान सभा नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना किया।
- चंद्रशेखर आजाद ने भगत सिंह के साथ मिलकर दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में 1928 ई. में Hindustan Socialist Republication Association नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना किया।
- भगत सिंह चंद्रशेखर आजाद और राजगुरु के साथ मिलकर लाहौर के पुलिस कैप्टन साण्डर्स की गोली मारकर हत्या 17 दिसंबर 1928 को कर दिया। इसी को लेकर जो मुकदमा चलाया गया है उसे लाहौर षड्यंत्र केस कहते हैं। इसी केस के तहत 23 मार्च, 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी पर लटका दिया गया।
- चंद्रशेखर आजाद एक ऐसे क्रांतिकारी हुए जो लाहौर षड्यंत्र केस और काकोरी षड्यंत्र केस दोनों में बच निकले।
- भगत सिंह के खिलाफ मुख्यबिरी बिहार के बेतिया निवासी फणीन्द्र नाथ ने किया।
- चंद्रशेखर आजाद के खिलाफ मुख्यबिरी वीर भद्र तिवारी ने किया।
- इलाहाबाद (वर्तमान- प्रयागराज) के अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेजों से मुठभेड़ के क्रम में अंतिम गोली स्वयं मारकर 27 फरवरी 1931 को चंद्रशेखर आजाद शहीद हो गए।
- भगत सिंह 8 अप्रैल 1929 को केन्द्रीय असेम्बली दिल्ली में पब्लिक सेफ्टी बिल पास होने का विरोध करते हुए खाली बेंच पर बम फेंका। उनका उद्देश्य किसी को हानि पहुँचाना नहीं था बल्कि बहरी हो चुकी अंग्रेजी सरकार के कानों तक आवाज पहुँचाना था।
- लाहौर जेल में फैली कुव्यवस्था के खिलाफ जरीन दास नामक क्रांतिकारी ने 63 दिनों का भूख हड़ताल किय और 64वां दिन जरीन दास शहीद हो गए।
- बंगाल में Indian Republican Army नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना सूर्य सेन ने किया जिन्हें इतिहास में “मास्टर दा” के उपनाम से जाना जाता है।
- सूर्य सेन ने ही चट्टांव स्थित सरकारी शास्त्रागार को लूटा इसी कारण उन्हें वर्ष 1933 ई. में गिरफ्तार कर लिया गया और 1934 ई. में उन्हें फांसी पर लटका दिया गया।

## साइमन कमीशन आयोग

- 1919 ई. का भारत शासन अधिनियम भारत में सही रूप में काम कर रहा है या नहीं कर रहा है। इसकी जांच को लेकर लंदन में 8 नवंबर 1927 को सर जॉन साइमन की अध्यक्षता में एक 7 सदस्यीय आयोग का गठन किया गया जिसे साइमन कमीशन आयोग कहा गया।

- इस आयोग में 7 के 7 सदस्य अंग्रेज थे जिस कारण से White Man commission भी कहा गया। इस आयोग में भारतीयों को न शामिल करने की सलाह लार्ड ईरविन ने दिया था। साइमन कमीशन आयोग का पूरे भारत वर्ष में विरोध इसलिए किया गया क्योंकि इसमें एक भी भारतीय सदस्य नहीं थे।

### इस आयोग के 7 सदस्य निम्न हैं-

- |                   |                 |                   |           |
|-------------------|-----------------|-------------------|-----------|
| 1. Sir John Simon | 2. स्ट्रेथ कोना | 3. लेनफेक्स       | 4. कैडेगन |
| 5. एटली           | 6. बॉथम         | 7. बर्नॉन हॉट शोन |           |

- साइमन कमीशन आयोग का जो पूरे भारत वर्ष में विरोध हो रहा था उसका सबसे प्रमुख केन्द्र लाहौर बना। यहाँ विरोध का नेतृत्व लाल लाजपत राय ने किया जिस कारण उनपर लाठी जार्च किया गया। उस लाठी चार्ज में लाला लाजपत राय बुरी तरह घायल हुए और उनका निधन 17 नवंबर 1928 ई. को हो गया। साइमन कमीशन आयोग का भारत आगमन 03 फरवरी 1928 को हुआ था। यह आयोग सर्वप्रथम बंबई पहुँची थी।

इस आयोग के विरोध को देखते हुए भारत सचिव पद पर आसिन लॉर्ड बरकेन हेड ने साइमन कमीशन आयोग को काम करने से रोक दिया और भारतीयों को यह चुनौती दिया कि साइमन कमीशन आयोग के काम को भारतीय करें। भारतीयों ने इस चुनौती को स्वीकारते हुए मोती लाल नेहरू की अध्यक्षता में एक 9 सदस्यीय आयोग का गठन किया जिसे नेहरू आयोग कहा गया।

नेहरू आयोग ने जो सिफारिश दी उसे नेहरू रिपोर्ट कहा गया। नेहरू रिपोर्ट में भारत को Domanion States का दर्जा देने को लेकर सिफारिश की गई तथा अल्पसंख्यक वर्गों के लिए जनसंख्या के आधार पर सीट निर्धारित करने को लेकर प्रावधान किया गया।

नेहरू रिपोर्ट को लेकर कांग्रेस और मुस्लिम लीग एकमत नहीं हो पाए।

मुस्लिम लीग के सबसे प्रमुख सदस्य मो. अली जिन्ना ने नेहरू रिपोर्ट के विकल्प के तौर पर 14 सूत्री मांग प्रस्तुत की।

- कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच उत्पन्न हुए विवाद को देखते हुए फिर से साइमन कमीशन आयोग को काम करने का अधिकार दिया गया।

साइमन कमीशन आयोग काम करने के बाद अपना फाइनल रिपोर्ट वर्ष 1930 में दिया।

साइमन कमीशन आयोग के रिपोर्ट पर विचार विमर्श करने के लिए लंदन में प्रथम गोल मेज सम्मेलन (1st Round Table Conference) का आयोजन किया गया जिसमें कांग्रेस भाग नहीं लिया जिस कारण इस सम्मेलन की तुलना बिना दुल्हा के बारात से की जाती है।

## बारदोली सत्याग्रह (1928)

- गुजरात का एक तालुका बारदोली था। बारदोली में ब्रिटिश सरकार ने कर की दर को बढ़ा दिया। बढ़े हुए कर की दर को कम करने के लिए ही बारदोली सत्याग्रह का आयोजन सरदार बल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में हुआ। सत्याग्रह की लोकप्रियता को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने कर की दर को घटा दिया अर्थात् हम कह सकते हैं कि जिस उद्देश्य से बारदोली सत्याग्रह हुए वह उद्देश्य पूरा हुआ यानि बारदोली सत्याग्रह सफल हुआ। इस सत्याग्रह की सफलता पर बारदोली की महिलाओं के आग्रह पर महात्मा गांधी द्वारा बल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि प्रदान की गई।

## सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34)

- 1929 के लाहौर अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित किया गया कि महात्मा गांधी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया जाएगा।

- गांधीजी के नेतृत्व में चलने वाला दूसरा जनव्यापी आंदोलन है।
- गांधीजी ने अपनी पत्रिका यंग इंडिया के माध्यम से Britishers में 11 प्रकार की मांग की जिसे 11 सूत्री मांग कहा गया।
  1. पूर्ण शाराबबंदी लागू की जाए।
  2. राजनीतिक बर्दियों की रिहाई की जाए।
  3. नमक कर समाप्त कर दिया जाए।
  4. वस्त्र उद्योग को संरक्षण दिया जाए।
  5. भारतीय समुद्र तट भारतीयों के लिए सिर्फ आरक्षित किया जाए।
  6. भारतीय सेना पर होने वाले खर्च में 50% की कमी की जाए।
  7. शस्त्र अधिनियम में सुधार करे भारतीयों को भी आत्मरक्षा हेतु लाइसेन्सधारी शस्त्र रखने की अनुमति दी जाए।
- गांधीजी के 11 सूत्री मांग को अंग्रेजों ने अस्वीकार कर दिया। इसपर गांधीजी ने कहा कि मैंने सूखी रोटी मांगी थी बदले में हमें पत्थर मिला।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के तहत महात्मा गांधी ने सावरमती आश्रम से 12 मार्च 1930 को डांडी मार्च की शुरूआत की। गांधीजी के इस मार्च में कुल 78 सहयोगी शामिल हुए। सबसे ज्यादा गुजरात से 31 सहयोगी शामिल हुए थे। बिहार से एकमात्र कारोबापू उर्फ गिरिपद चौधरी शामिल हुए थे।
- गांधीजी दांडी मार्च को लेकर जब सावरमती आश्रम से पहला कदम बाहर रखे तब उन्होंने घोषणा किया कि अब मैं दुबारा इस आश्रम में तब कदम रखूँगा जब देश को आजादी मिल जाएगी।
- गांधीजी दांडी मार्च के दौरान 24 दिनों की यात्रा किया जिसमें उन्होंने 240 मिल (384 km) की दूरी तय की।
- दांडी मार्च के दौरान गांधी जी ने मिडिया को संबोधित करते हुए यह कहा कि- “शक्ति के विरुद्ध अधिकार की इस लड़ाई में, मैं विश्व की सहानुभति मात्र चाहता हूँ।”
- दांडी मार्च के दौरान गांधीजी को जब गिरफ्तार कर लिया गया था तो कुछ समय के लिए इस मार्च का नेतृत्व अब्बास तैयब जी ने किया।
- गांधीजी की दांडी मार्च की तुलना सुभाषचंद्र बोस ने नेपालियन के पेरिस मार्च और मुसोलिनी के रोम मार्च से किया।
- गांधीजी 6 April 1930 दांडी के तट पर सांकेतिक तौर पर समुद्र के पानी से नमक बनाकर नमक कानून को तोड़ा।
- गांधी जी के दांडी मार्च का अनुसरण करते हुए गांधीवादी नेता चक्रवर्ती गोपालाचारी ने मद्रास में Tanjore (तंजौर) के तट पर त्रिचिनाप्पली से वेदारण्यम् तक यात्रा किया और नमक कानून तोड़ने की घोषणा की। इस मार्च को वेदारण्यम् मार्च कहा जाता है।
- दांडी मार्च के तर्ज पर के. कल्पन ने केरल में कालीकट से पेन्नोर तक की यात्रा किया।
- नमक सत्याग्रह का सबसे प्रमुख केन्द्र धरासना (वर्तमान- गुजरात) बना जहाँ सत्याग्रह का नेतृत्व श्रीमती सरोजनी नायडू और गांधीजी के पुत्र मणिलाल ने किया। धरासना में सत्याग्रहियों ने नमक कारखाना पर धाबा बोला।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के क्रम में महात्मा गांधी को 5 मई 1930 को गिरफ्तार कर पूना के यरवदा जेल में बंद कर दिया गया। इस क्रम में ही महात्मा गांधी ने यरवदा जेल की तुलना मंदिर से की और इसी क्रम में यरवदा जेल से ही गांधीजी ने Songs from Prison नाम धार्मिक गीत महाकाव्य की रचना किया।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान गांधी जी सहित सभी प्रमुख कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार कर जेल में बंद कर दिया गया जिस कारण प्रथम गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस भाग नहीं ले सका।

### ■ Round Table Conference ( गोलमेज सम्मेलन )

- लंदन में कुल तीन गोलमेल सम्मेलन आयोजित हुए। जिसमें प्रथम गोल मेज सम्मेलन- 12 नवंबर 1930 से, द्वितीय गोलमेज सम्मेलन 7 सितंबर 1932 से और तृतीय गोलमेज सम्मेलन 17 नवंबर 1932 से प्रारंभ हुआ।

तीनों गोलमेज सम्मेलन के समय इंग्लैंड के प्रधानमंत्री जेम्स रैम्जे मैकडोनाल्ड थे जिन्होंने तीनों गोलमेज सम्मेलन की अध्यक्षता की।

इस समय ब्रिटेन के सप्टेंट जार्ज पंचम थे जिन्होंने तीनों गोलमेज सम्मेलन का उद्घाटन किया।

- कांग्रेस एकमात्र द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।
- कांग्रेस के तरफ से द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग महात्मा गांधी ने लिया। गांधीजी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए राजपूताना नामक जहाज से लंदन गए थे।
- गांधीजी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेकर भारत को Domainon States का दर्जा देने को लेकर प्रस्ताव रखा लेकिन गांधीजी को अपने मुद्दा से भटकाने का प्रयास किया गया जिस कारण गांधीजी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन को बीच में ही छोड़कर वापस भारत लौट आए। भारत आने पर गांधीजी ने कहा कि “मैं खाली हाथ वापस जरूर आया हूँ लेकिन भारत ने हमें जो झंडा दिया उसे नीचे झुकने हमने नहीं दिया”
- गांधीजी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग गांधी-इरविन समझौता के कारण लिए।
- प्रथम गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस के नहीं भाग लेने के कारण कोई परिणाम नहीं निकला जिस कारण 26 जनवरी 1931 को गांधीजी को जेल से रिहा कर दिया गया तथा यह प्रयास किया जाने लगा कि गांधी जी के साथ उस समय के भारतीय वायसराय इरविन का समझौता हो सके।
- सर तेज बहादुर सप्त्रू के प्रयास से 5 मार्च 1931 को दिल्ली में महात्मा गांधी और भारतीय वायसराय लॉर्ड इरविन के बीच समझौता हुआ जिसे गांधी-इरविन पैक्ट/दिल्ली समझौता कहा जाता है। इस समझौता के तहत इरविन ने गांधीजी के 11 सूत्री मांग को स्वीकार किया। बदले में गांधीजी ने कुछ समय के लिए सविनय अवज्ञा आंदोलन को स्थगित कर दिया तथा यह भी प्रस्ताव पारित किया कि कांग्रेस द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेगा।
- कांग्रेस के 1931 के कराँची अधिवेशन में गांधी-इरविन समझौता को स्वीकृति प्रदान की गई।
- गांधी इरविन समझौता पर टिप्पणी करते हुए सरोजिनी नायडू ने दो महात्माओं के मिलन की संज्ञा दी।
- गांधीजी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन से वापस लौटकर दिसंबर 1931 ई. में जब भारत आए तो उन्होंने यह प्रयास किया कि उस समय के वायसराय लॉर्ड वेलिंगटन से मिला जाए लेकिन वेलिंगटन ने गांधी जी को समय नहीं दिया।
- गांधीजी जनवरी 1932 ई. में पुनः सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत किए जिसे द्वितीय चरण का सविनय अवज्ञा आंदोलन कहा जाता है। आंदोलन के शुरू होते ही कांग्रेस की सारी संपत्ति जब्त कर ली गई तथा कांग्रेस को गैर कानूनी संगठन घोषित कर दिया गया। साथ ही साथ कांग्रेस के प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर जेल में बंद कर दिया गया।
- गोलमेज सम्मेलन इंग्लैंड के जेम्स पैलेस में आयोजित किए गए थे।
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए जब गांधी जी लंदन गए थे तो उस समय गांधी जी किंसले हॉल में ठहरे थे।
- प्रथम गोलमेज सम्मेलन में अंग्रेजों ने अपने समकक्ष का दर्जा भारतीयों को दिया।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के एक प्रमुख नेता खान अब्दुल गफकार खान हुए जिन्हें सीमांत गांधी या Frontier Gandhi या बादशाह खाँ के नाम से जाना जाता है। उन्होंने भारत के उत्तरी पश्चिमी भाग में खुदाई खिंदमतगार अर्थात् ईश्वर का सेवक नामक आंदोलन चलाया।
- इस आंदोलन से जुड़े आंदोलनकारी लाल कुर्ता पहना करते थे जिस कारण इस आंदोलन को लाल कुर्ती आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है।
- भारत के उत्तरी-पश्चिमी भाग में गढ़वाल रेजीमेंट के सिपाहियों ने निहत्थे आंदोलनकारियों पर गोली चलाने से इंकार कर दिया।

- सविनय अवज्ञा आंदोलन का नेतृत्व भारत के उत्तरी-पूर्वी भाग में 16 वर्षीय नागा रानी गैडिनेल्यू के द्वारा किया गया जिस कारण रानी गैडिनेल्यू को गिरफ्तार कर जेल में बंद कर दिया। जेल प्रवास के दौरान पंडित जवाहर लाल नेहरू रानी गैडिनेल्यू से मिले और उन्हें पहाड़ों की बेटी और रानी की उपाधि प्रदान किया।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के क्रम में इंगलैंड के प्रधानमंत्री James Rampay Macdonald के द्वारा डॉ. भीम राव अंबेडकर के मांग पर 16 अगस्त 1932 को संप्रदायिक पंचाट अर्थात् Communal Award की घोषणा की गई। इसके तहत प्रत्येक अल्पसंख्यक समुदाय के लिए विधान मंडलों में कुछ सीटें आरक्षित किया गया जिसके लिए चुनाव पृथक निर्वाचन पद्धति के तहत होने थे।
- संप्रदायिक पंचाट के खिलाफ महात्मा गांधी पूना के यरवदा जेल में 20 सितंबर, 1932 ई. से आमरण अनशन पर बैठे। उनके इस बलिदान की सराहना रवींद्रनाथ टैगोर ने करते हुए कहा कि- “भारत की एकता और सामाजिक अंखडता के लिए यह उत्कृष्ट बलिदान है।”

### ■ POONA PACT- 24 SEPT. 1932

- मदन मोहन मालवीय, राजेन्द्र प्रसाद जैसे नेताओं के प्रयास से महात्मा गांधी और डॉ. भीमराव अंबेडकर के बीच समझौता हुआ जिसे पूना समझौता कहा जाता है। इस समझौता पर महात्मा गांधी के तरफ से हस्ताक्षर मदन मोहन मालवीय ने किया और डॉ. भीमराव अंबेडकर ने हस्ताक्षर किया।
- पूना पैकट के अनुसार दलितों के लिए पृथक निर्वाचन को समाप्त कर दिया गया तथा अलग-अलग प्रांतों के विधानमंडलों में सीटों की संख्या 71 से बढ़ाकर 147 कर दिया गया और केन्द्रीय विधान मंडल में दलितों के लिए 18% आरक्षण का प्रावधान किया गया।
- महात्मा गांधी ने दलितों को हरिजन कहकर पुकारा। उन्होंने हरिजन के उत्थान के लिए सितंबर 1932 ई. में हरिजन सेवक संघ की स्थापना किया तथा इस संगठन का प्रथम अध्यक्ष घनश्याम दास बिरला को बनाया।
- महात्मा गांधी ने दलितों को मंदिर में प्रवेश दिलाते हुए 8 जनवरी 1933 ई. को मंदिर प्रवेश दिवस के रूप में मनाया।
- महात्मा गांधी 7 नवंबर 1933 ई. को महाराष्ट्र के वर्धा आश्रम से हरिजन यात्रा प्रारंभ किया। यह यात्रा लगभग 9 महीना तक चला। इस यात्रा के क्रम में गांधीजी ने लगभग 20,000 किमी. की दूरी तय की।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के क्रम में महाराष्ट्र, कर्नाटक और मध्य भारत के क्षेत्र में जंगल कानून तोड़े गए वहीं पूर्वी भारत अर्थात् बिहार, प. बंगाल के क्षेत्र में लोगों ने चौकीदारी कर देने से इंकार कर दिया।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के क्रम में बच्चों ने बानरी सेना का गठन किया। इस आंदोलन में महिलायें भी सक्रिय रूप से भाग ली। (मंजरी सेना)
- अप्रैल 1934 आते आते सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित हो गया।

**NOTE:-**

1. डॉ. भीमराव अंबेडकर और सर जय बहादूर सप्रू तीनों गोलमेज सम्मेलन में भाग लिए थे।
2. **Poona Pact** यरवदा जेल में हुआ था।

### 1934-1940 के बीच की घटनाएँ

- वर्ष 1934 ई. में मुम्बई में कांग्रेस के भीतर कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना हुई। इसके संस्थापक सदस्य जय प्रकाश नारायण, आचार्य नरेन्द्र देव, मिनु मसानी इत्यादि को माना जाता है। इस पार्टी का प्रथम अध्यक्ष आचार्य नरेन्द्रदेव और प्रथम महासचिव जयप्रकाश नारायण को बनाया गया।

- 1934 ई. में बिहार में सबसे भयंकर भूकंप आया था। इस भूकंप के बाद W. G. Orcher (आर्चर) के प्रयास से मधुबनी पेटिंग प्रकाश में आया। मधुबनी पेटिंग में चावल के पेस्ट का प्रयोग किया जाता है।
- 1934 के भूकंप के बाद महात्मा गांधी का बिहार आगमन 11 मार्च, 1934 में हुआ। गांधीजी दानापुर रेलवे स्टेशन पर उतरे जहाँ उनका स्वागत डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने किया। इस यात्रा के क्रम में मुगेर के घोरघट गांव के लोगों ने गांधीजी को बांस का लाठी प्रदान किया। जो आजीवन गांधीजी के साथ रहा।
- वर्ष 1936 ई. में लखनऊ में अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना स्वामी सहजानंद सरस्वती के द्वारा किया गया। इस संगठन का प्रथम अध्यक्ष स्वामी सहजानंद सरस्वती को बनाया गया वहीं इस संगठन का प्रथम महासचिव एन. जी. रंगा को बनाया गया।
- अखिल भारतीय किसान सभा की प्रथम बैठक 1936 ई. में लखनऊ आयोजित हुए।
- बिहार प्रांतीय किसान सभा का गठन 1929 ई. में स्वामी सहजानंद सरस्वती के द्वारा किया गया।
- तृतीय गोलमेज सम्मेलन के परिणाम स्वरूप 1935 का भारत शासन अधिनियम पारित हुआ। इस अधिनियम का विरोध कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने किया।
- पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 1935 के भारत शासन अधिनियम को “गुलामी का एक अधिकार पत्र” कहा। साथ ही साथ उन्होंने इस अधिनियम को लेकर यह भी कहाँ कि- “यह अधिनियम अनेकों ब्रेक वाला परंतु इंजन रहित है।”
- मुहम्मद अली जिन्ना ने 1935 के भारत शासन अधिनियम को पूर्णतः सड़ा हुआ अधिनियम कहा।
- चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने 1935 के भारत शासन अधिनियम को लेकर यह कहा कि यह अधिनियम द्वैध शासन से भी बुरा है।
- 1935 के भारत शासन अधिनियम के तहत सर्वप्रथम प्रांतों में विधानसभा के चुनाव वर्ष 1937 ई. में हुए।
- 1937 के समय भारत में कुल 11 ब्रिटिश प्रांत हुआ करते थे जो निम्न हैं-
 

1. उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रांत	2. सिंध
3. पंजाब	4. मुंबई
5. मद्रास	6. ओडिशा
7. मध्य प्रांत	8. संयुक्त प्रांत
9. बिहार	10. बंगाल
11. असम	
- 1937 के चुनाव में कांग्रेस का चुनाव चिन्ह पीला बक्सा था। इस चुनाव में पांच प्रांतों में कांग्रेस को पूर्ण बहुमत मिला।
 

1. मद्रास	2. ओडिशा
3. मध्यप्रांत	4. संयुक्त प्रांत
5. बिहार	
- 1937 के चुनाव में तीन प्रांतों में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी-
 

1. ड. प. सीमा प्रांत	2. मुंबई
3. असम	
- 1937 के प्रांतीय विधान सभा चुनाव में कांग्रेस तीन प्रांतों में सरकार का गठन नहीं कर पाया जो निम्न है-
 

1. सिंध	2. पंजाब
---------	----------

### 3. बंगाल

बाकि सभी प्रांतों में अर्थात् 8 प्रांतों में कांग्रेस ने सरकार का गठन किया।

- बंगाल में कृषक प्रजा पार्टी की सरकार बनी तथा बंगाल के प्रथम प्रधानमंत्री (मुख्यमंत्री) फजलुल हक बने।
- पंजाब में यूनियनिस्ट पार्टी की सरकार बनी तथा वहाँ के प्रथम प्रधानमंत्री सिकंदर हयात खाँ बने।
- सिंध में मिली जुली सरकार थी। यहाँ के प्रथम प्रधानमंत्री अल्लाह बछा बने।
- बिहार के प्रथम प्रधानमंत्री मुहम्मद युनुश खाँ बने वहीं बिहार के प्रथम कांग्रेसी प्रधानमंत्री डॉ. श्री कृष्ण सिंह बने।
- संयुक्त प्रांत के प्रथम प्रधानमंत्री गोविंद बल्लभ पंत, ओडिशा के बी. एन. दास, मद्रास के चक्रवर्ती राज गोपालाचारी, मध्यप्रांत के बी. एन. खरे, मुंबई के बी. जी. खरे, असम के गोपीनाथ बारदोलोई बने।
- 1937 के प्रांतीय विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को अच्छी सफलता मिली वहीं मुस्लिम लीग को सफलता नहीं मिली। मुस्लिम लीग यह चाहता था कि संयुक्त प्रांत में कांग्रेस, मुस्लिम लीग को मंत्रिमंडल में शामिल कर ले लेकिन कांग्रेस मुस्लिम लीग को मंत्रिमंडल में शामिल करने से इंकार कर दिया। इसी घटना पर मौलाना अबुल कलाम आजाद ने अपनी रचना India Wins Freedom में लिखा कि मुस्लमान मूर्ख था जिसने हिन्दुओं से सुरक्षा की मांग किया और हिंदु उससे भी मूर्ख निकला जो सुरक्षा देने से इंकार कर दिया।
- 28 महीना तक शासन करने के बाद वर्ष 1939 ई. में कांग्रेस मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया क्योंकि बिना कांग्रेस के सलाह के ब्रिटिशों ने भारत को द्वितीय विश्वयुद्ध में ब्रिटेन की तरफ से झोंक दिया।
- कांग्रेस ने मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दिया जिसे मस्लिम लीग मुक्ति दिवस/धन्यवाद दिवस के रूप में 22 दिसंबर 1939 को मनाया। धन्यवाद दिवस का समर्थन डॉ. भीमराव अंबेडकर ने भी किया।
- कांग्रेस द्वितीय विश्वयुद्ध में ब्रिटेन को इस शर्त पर साथ देने को तैयार हुआ कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद ब्रिटेन भारत को स्वतंत्रता देने का आश्वासन देगा।
- भारतीयों को द्वितीय विश्वयुद्ध में ब्रिटेन के तरफ से भाग लेने को लेकर 8 अगस्त, 1940 ई. को भारतीय वायसराय लार्ड लिनलिथगो ने एक प्रस्ताव दिया जिसे अगस्त प्रस्ताव कहा गया। इस प्रस्ताव को कांग्रेस ने अस्वीकार कर दिया।
- अगस्त घोषणा 1917 का संबंध लार्ड माणटेग्यू से है। वहीं अगस्त संकल्प 1942 का संबंध महात्मा गांधी से है।

## 1940-1947 के बीच की घटनाएँ

### ■ भारत में संप्रदायवाद का विकास

- अंग्रेजों ने फूट डालों और राज करो की नीति को बढ़ावा देने के लिए तथा हिन्दु मुस्लिम एकता को कमज़ोर करने के लिए भारत में संप्रदायवाद को बढ़ावा दिया।
- वर्ष 1930 ई. में मुस्लिम लीग का वार्षिक अधिकेशन इलाहाबाद में हुआ जिसकी अध्यक्षता मुहम्मद इकबाल ने किया। मुहम्मद इकबाल ने ही दो राष्ट्र का सिद्धांत अर्थात् Two Nation Theory दिया। इस Theory के जरिए उन्होंने यह कहा कि हिन्दुओं के लिए अलग राष्ट्र और मुस्लिमों के लिए अलग राष्ट्र होने चाहिए।
- 1933-34 में Cambridge University में पढ़ने वाले छात्र चौधरी रहमत अली ने पाकिस्तान शब्द को गढ़ा। उन्होंने कहा कि पंजाब, कश्मीर, सिंध और बलुचिस्तान जैसे क्षेत्रों को मिलाकर पाकिस्तान बनाया जाना चाहिए। चौधरी रहमत अली का उस समय मो. अली जिन्ना जैसे नेताओं के द्वारा मजाक बनाया गया। लेकिन

1947 ई. में चौधरी रहमत अली का सपना साकार हो गया।

- 1940 में मुस्लिम लीग का वार्षिक अधिवेशन लाहौर में हुआ जिसकी अध्यक्षता मो. अली जिन्ना ने किया। इस अधिवेशन में ही मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान के प्रस्ताव को पारित किया।
- पाकिस्तान का प्रारूप सिंकंदर हयात खाँ ने तैयार किया था। वहाँ इस प्रारूप को प्रस्तुत फजलुल हक ने किया था।
- 1943 के कराँची अधिवेशन में मुस्लिम लीग ने बाँटो और छोड़ो का नारा दिया।
- 16 अगस्त 1946 ई. को मुहम्मद अली जिन्ना के आहवान पर मुस्लिम लीग प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस (Direct Action Day) के रूप में मनाया और मुहम्मद अली जिन्ना ने यह नारा दिया कि लड़कर लेंगे पाकिस्तान और फिर 16 अगस्त 1946 ई. से ही कलकत्ता से भारत में दंगा प्रारंभ हो गया। इस दंगा से पूरा भारत वर्ष प्रभावित हुआ। दंगा को रोकने के लिए कांग्रेस भारत विभाजन के पक्ष में आया और फिर 14 अगस्त, 1947 को भारत का विभाजन हुआ तथा पाकिस्तान का निर्माण हुआ।
- केन्द्र की मोदी सरकार ने यह निर्णय लिया कि 14 अगस्त को विभाजन विभिन्निका दिवस के रूप में मनाया जाएगा।
- पाकिस्तान के प्रथम प्रधानमंत्री लियाकत अली खाँ और प्रथम गवर्नर जनरल मोहम्मद अली जिन्ना बने।
- प्रति वर्ष 23 मार्च को पाकिस्तान दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- पाकिस्तान में संविधान लागू 23 मार्च, 1956 ई. को हुआ।

## भारत छोड़ो आंदोलन

- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान शुरूआती वर्षों में जगह-जगह धूरी राष्ट्र की जीत हो रही थी जिसको लेकर अमेरिका, चीन, आस्ट्रेलिया जैसे देश ब्रिटेन पर दबाव डाल रहा था कि ब्रिटेन भारत को कुछ अधिकार देकर द्वितीय विश्वयुद्ध में भारत को मित्र राष्ट्र के तरफ से शामिल करे।
- भारत को अपने पक्ष में करने के लिए ब्रिटेन ने स्टैफर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में एक सदस्यीय आयोग भारत भेजा जिसे क्रिप्स मिशन योजना कहा जाता है। क्रिप्स मिशन योजना का भारत आगमन 23 मार्च 1942 को हुआ। क्रिप्स मिशन योजना से कांग्रेस को बहुत बड़ी आशा थी लेकिन वो निराशा में तब्दील हो गया।
- क्रिप्स मिशन योजना ने अपनी सिफारिश में कहा कि भारत को Domanian States अर्थात् औपनिवेशिक राज्य का दर्जा दिया जाएगा लेकिन महात्मा गांधी ने इसको अस्वीकार करते हुए कहा कि यह Post Dated Chaque की भाँति है अर्थात् यह एक ऐसा चेक है जिसका Bank नष्ट हो चुका है।
- Cripps Mission योजना की असफलता पर ही भारत छोड़ो आंदोलन हुए हैं।
- गांधीजी ने कांग्रेस के समक्ष भारत छोड़ो आंदोलन चलाने को लेकर प्रस्ताव रखा लेकिन कांग्रेस ने प्रारंभ में इंकार कर दिया जिसपर गांधीजी ने कांग्रेस को चुनौती देते हुए कहा कि अगर कांग्रेस भारत छोड़ो आंदोलन चलाने को लेकर तैयार नहीं होता है तो मैं कांग्रेस को चुनौती देता हूँ कि इस देश की एक मुट्ठी बालू से कांग्रेस से बड़ी संस्था खड़ा कर दूँगा।
- गांधीजी के द्वारा दिए गए चुनौतियों को देखते हुए कांग्रेस भारत छोड़ो आंदोलन चलाने को लेकर तैयार हुआ।
- भारत छोड़ो आंदोलन के प्रस्तावक पंडित जवाहरलाल नेहरू थे।

- कांग्रेस के 1942 ई. के समय के अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजाद के अध्यक्षता में भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव पारित हुआ।
- Congress Working Committee की बैठक 8 अगस्त, 1942 को मुंबई के ग्वालिया टैंक में हुआ। इस इस बैठक में महात्मा गांधी ने अपने पूरे जीवनकाल का सबसे जोशीला भाषण दिया।
- गांधीजी के भाषण से ब्रिटिश सत्ता घबरा गई और 8 अगस्त, 1942 के मध्यरात्रि को Operation Zero Hour चलाकर कांग्रेस के सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर जेल में बंदकर दिया गया।
- भारत छोड़ो आंदोलन का कोई नेतृत्वकर्ता नहीं था।
- भारत छोड़ो आंदोलन को अगस्त क्रांति भी कहा जाता है।
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ही महात्मा गांधी ने करो या मरो (Do or Die) का मंत्र दिया था।
- भारत छोड़ो आंदोलन या अगस्त क्रांति भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की वीरता और लड़ाकूपन की अद्वितीय मिसाल है जिसने ब्रिटिश शासन की नींव हिलाकर रख दी।
- कांग्रेस कार्यसमिति ने 14 जुलाई, 1942 को वर्धा में अपनी बैठक बुलाई। इसमें संघर्ष के निर्णय को स्वीकृति दे दी गई। सी. राजगोपालाचारी एवं भूलाभाई देसाई ने इस निर्णय के विरोध में कांग्रेस कार्यसमिति से त्याग-पत्र दे दिया। गांधीजी के इस संबोधन के बार में पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा है कि “वास्तव में गांधीजी उस दिन अवतार एवं पैगंबर की प्रेरित होकर भाषण दे रहे थे।”
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान (9 अगस्त, 1942) गांधीजी तथा कांग्रेस के मुख्य नेताओं को ‘ऑपरेशन जीरो आवर’ के तहत गिरफ्तार कर लिया गया। गांधीजी को गिरफ्तार कर पुणे के आगा खाँ पैलेस में रखा गया। सरोजिनी नायडू तथा कस्तूरबा गांधी को भी गिरफ्तार कर आगा खाँ पैलेस में रखा गया।
- कांग्रेस को गैर-कानूनी घोषित कर उसकी सारी संपत्ति को जब्त कर लिया गया। साथ ही, कांग्रेस कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों को गिरफ्तार कर अहमदनगर जेल में रखा गया।
- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को पटना (बाँकीपुर जेल) में नजरबंद कर दिया गया। जयप्रकाश नारायण को गिरफ्तार कर हजारीबाग सेंट्रल जेल में रखा गया, जो बाद में जेल की दीवार फाँदकर फरार हो गए तथा ‘आजाद दस्ता’ (भूमिगत कार्रवाई) नामक दल का गठन किया एवं भूमिगत होकर आंदोलन चलाते रहे।
- अगस्त संकल्प पर गांधीजी ने भारतीय जनता से आह्वान किया कि ‘करो या मरो’ के सिद्धांत पर चलते हुए अंग्रेजों के विरुद्ध अहिंसक संघर्ष किया जाए।
- 1942 के आंदोलन का सबसे ज्यादा प्रभाव बंगाल, बिहार, संयुक्त प्रांत, मद्रास और बंबई में था, लेकिन इसकी भागीदारी समूचे भारत में देखी गई।
- सितंबर 1942 के बाद बढ़ते हुए ब्रिटिश दमन के विरुद्ध यह आंदोलन भूमिगत हो गया। गिरफ्तारी से बचे नेता, जैसे-जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्द्धन, अरुणा आसफ अली आदि ने भूमिगत रहते हुए आंदोलन का नेतृत्व किया और कांग्रेस की रणनीति कार्रवाइयों और महत्वपूर्ण सूचनाओं आदि का रेडियो प्रसारण के द्वारा संचालन किया।
- भूमिगत नेता जिसमें सुचेता कृपलानी, ऊषा मेहता, छोटू भाई पुराणिक, बीजू पटनायक, आर. पी. गोयनका भी शामिल थे, जो बम गोला बारूद जैसी सामग्री एकत्र कर गुप्त संगठनों में बाँटते थे। ध्यातव्य हो, रेडियो प्रसारण का कार्य सर्वप्रथम ऊषा मेहता ने प्रारंभ किया।
- आंदोलन के प्रति सरकार की दमनात्मक कार्रवाई के विरुद्ध गांधीजी ने आगा खाँ पैलेस में 21 दिन (फरवरी 1943) के उपवास की घोषणा कर दी। उपवास शुरू करते ही देश-विदेश से उन्हें रिहा करने की मांग तीव्र हो गई। राजभक्त एम. एस. एन. एन. आर. सरकार और एच. पी. मोदी ने वायसरॉय की कार्यकारिणी से इस्तीफा दे दिया।



- 7 मार्च, 1943 को गांधीजी ने अपनी भूख हड़ताल वापस ले ली। उनके खराब स्वास्थ्य के कारण सरकार ने 6 मई, 1944 को उन्हें कैद से रिहा कर दिया।
- ध्यातव्य है कि गांधीजी के जेल से रिहा होने के पूर्व ही उनकी पत्नी कस्तूरबा गांधी व निजी सचिव महादेव देसाई की मृत्यु हो चुकी थी।
- भारत छोड़ो आंदोलन और इसके प्रभाव से लगभग यह सिद्ध कर दिया था कि भारतीय अब स्वतंत्रता से कम पर तैयार नहीं होगे।
- बलिया में चित्तू पांडे के नेतृत्व में, सतारा में वाई.वी. चहवान तथा नाना पाटिल के नेतृत्व में समानांतर सरकार का गठन किया गया। यह सरकारें क्रमशः 1944 व 1945 तक चलीं।
- बंगाल के मेदिनीपुर (मिदनापुर) जिले में तामलुक नामक स्थान पर तामलुक जातीय (राष्ट्रीय) सरकार की स्थापना की गई। यहाँ की सरकार ने सशस्त्र विद्युतवाहिनी का गठन किया। इसका अस्तित्व 1942 से सितंबर 1944 तक रहा। इसके अलावा उड़ीसा के तलचर में भी कुछ समय तक समानांतर सरकार चली।
- सतारा की समानांतर सरकार सबसे लंबे समय तक अस्तित्व में रही।
- औंध रियासत के राजा ने (जिसके राज्य का संविधान गांधीजी द्वारा तैयार किया गया था) इस सबमें काफी मदद की।
- मुस्लिम लीग का जिन्ना गुट आंदोलन का इसलिए विरोध था क्योंकि इनका विश्वास था कि अंग्रेजों के जाने के बाद यहाँ जगल राज उत्पन्न हो जाएगा।
- 23 मार्च, 1943 को मुस्लिम लीग ने ‘पाकिस्तान दिवस’ मनानेका आहवान किया। मुस्लिम लीग ने दिसंबर 1943 में करांची में हुए अधिवेशन में ‘विभाजन करो और छोड़ो’ (Divide and Quit) का नारा दिया।
- अति उदारवादी नेता तेज बहादुर सप्रू ने भारत छोड़ो आंदोलन को अविचारित तथा असामिक माना।
- डॉ. भीमराव अंबेडकर ने आंदोलन के बारे में कहा कि “कानून व व्यवस्था को कमजोर करना पागलपन है जब दुश्मन हमारी सीमा में है।”



## 11. सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज

- सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को ओडिशा के कटक में हुआ था। इनके जन्म दिवस 23 जनवरी को राष्ट्रीय पराक्रम दिवस के रूप में मनाया जाता है। इनके पिता जानकी नाथ बोस और माता प्रभावती बोस थी। वर्ष 1937 ई. में सुभाष चन्द्र बोस ने ऑस्ट्रेलिया की रहने वाली महिला एमिली शैकल से विवाह किए जिससे सुभाष चंद्र बोस को एक पुत्री की प्राप्ति हुई जो अनीता बोस के नाम से जानी जाती है।
- सुभाष चंद्र बोस के राजनीतिक गुरु चित्तरंजन दास थे। सुभाष चन्द्र बोस अपने पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए वर्ष 1919 ई. में कोलकाता विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त कर ICS की तैयारी करने के लिए लंदन गए। उन्होंने तैयारी कर परीक्षा दी और परीक्षा में उत्तीर्ण होकर ICS अधिकारी बने लेकिन देश भवित की भावना के बजह से अपने पद से त्यागपत्र दिए और महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहयोग आंदोलन में कूद पड़े लेकिन चोरी-चौराकांड के बजह से जब गांधीजी ने असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया तो इसका विरोध सुभाषचन्द्र बोस ने करते हुए कहा कि जब जनता का उत्साह चरम पर हो तो उस समय आंदोलन वापस लेना राष्ट्रीय अनर्थ से कम नहीं है।
- सुभाषचंद्र बोस असहयोग आंदोलन के क्रम में कुछ समय के लिए राष्ट्रीय विद्यालय के प्रधानाचार्य बनाए गए। सुभाष चंद्र बोस कुछ समय के लिए कलकत्ता के मेयर भी रहे हैं। सुभाषचंद्र बोस नेहरू आयोग के सदस्य रहते हुए भी नेहरू रिपोर्ट का विरोध किए। क्योंकि नेहरू रिपोर्ट में भारत को Domanion States का दर्जा देने की बात की गई थी। जबकि सुभाषचंद्र बोस भारत को पूर्ण आजादी दिलाने के पक्षधर थे। भारत को पूर्ण आजादी दिलाने के उद्देश्य से सुभाषचंद्र बोस ने पंडित जवाहर लाल नेहरू के साथ मिलकर 1928 ई. में Indian Independent League की स्थापना किया। सुभाषचंद्र बोस 1938 में कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन और 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन की अध्यक्षता करने के बाद सुभाषचंद्र बोस यह चाहते थे कि कांग्रेस कार्यकारिणी परिषद् का गठन गांधीजी करें। लेकिन गांधी जी ऐसा करने से मना कर दिए जिस कारण सुभाषचंद्र बोस को यह लगा कि गांधीजी नहीं चाहते हैं कि सुभाषचंद्र बोस अध्यक्ष बने रहें। इसलिए सुभाषचंद्र बोस कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया और मई 1939 ई. में Forward Bloc नामक राजनीतिक संगठन की स्थापना किया।
- सुभाषचंद्र बोस अपने राजनीतिक संगठन Forward Bloc के जरिए अंग्रेजों के खिलाफ आवाज बुलंद करना प्रारंभ ही किए और उन्हें अपने घर में नजरबंद कर दिया गया। तदूपश्चात् सुभाषचंद्र बोस अपना वेश-भूषा बदल लिए और कलकत्ता से गोवा, गोवा से पेशावर, पेशावर से रूस और रूस से जर्मनी पहुँचे। जर्मनी में सुभाषचंद्र बोस ने हिटलर से मुलाकात की। हिटलर ने ही सुभाषचंद्र बोस को नेताजी की उपाधि प्रदान किया। सुभाषचंद्र बोस को हिटलर से जिस प्रकार की अपेक्षा थी, हिटलर उस पर खड़ा नहीं उतरे जिस कारण सुभाषचंद्र बोस जर्मनी से जापान चले गए।
- सुभाषचंद्र बोस ने 1941 ई. में जर्मनी के वर्लिन में फ्री इंडिया सेंटर का गठन किया।
- आजाद हिंद फौज के गठन का विचार सर्वप्रथम कैप्टन मोहन सिंह के मन में आया था।
- कैप्टन मोहन सिंह ने 1 सितंबर 1942 ई. को मलाया में आजाद हिंद फौज के पहले डिवीजन का गठन किया। इस काम में रास बिहारी बोस ने मदद किया था।
- सिंगापुर में आजाद हिंद फौज का पुर्णगठन 1943 ई. में सुभाषचंद्र बोस ने किया तथा उन्हें आजाद हिंद फौज का सर्वोच्च सेनापति घोषित किया गया।



- अक्टूबर 1943 में सुभाषचंद्र बोस ने सिंगापुर में आजाद हिंद सरकार का गठन किया और सुभाषचंद्र बोस ने यह शपथ लिया कि जब तक वे जीवित रहेंगे तब तक देश की आजादी के लिए सतत प्रयास करते रहेंगे। सिंगापुर में स्थापित आजाद हिंद सरकार को जापान और जर्मनी जैसे देशों ने मान्यता प्रदान किया।
- आजाद हिंद फौज की सेना जापान की मदद से Andaman Island को जीतकर उसका नाम शहीद द्वीप रखा और Nicobar Island को जीतकर उसका नाम स्वराज द्वीप रखा।
- 6 जुलाई 1944 को रंगून के जुबली हॉल से अपने संबोधन में सुभाष चंद्र बोस ने गांधीजी को राष्ट्रपिता कहकर पुकारा और अपने घोषणा में सुभाषचंद्र बोस ने यह कहा कि राष्ट्रपिता देश की आजादी के लिए अंतिम लड़ाई प्रारंभ हो गई है। इस लड़ाई में आपका आर्शीवाद चाहिए।
- महात्मा गांधी ने सुभाषचंद्र बोस को देशभक्तों का देश भक्त कहकर पुकारा।
- सुभाषचंद्र बोस ने जय हिंद, दिल्ली चलो, तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा जैसे नारे लगाएं हैं।
- सुभाषचंद्र बोस की प्रमुख रचनाएँ- The Indian Struggle and An Indian Pilgrim हैं।
- 6 अगस्त 1945 और 9 अगस्त 1945 को क्रमशः जापान के हिराशिमा एवं नागाशाकी पर अमरिका ने परमाणु बम गिराया जिस कारण जापान बर्बाद हो गया।
- सुभाषचंद्र बोस सिंगापुर से जापान हवाई मार्ग से जा रहे थे इसी क्रम में फार्मूसा द्वीप के निकट ताइपेई बंदरगाह में विमान दुर्घटना हो गया जिसमें सुभाषचंद्र बोस बुरी तरह घायल हुए और 18 अगस्त 1945 को स्वर्गवासी हो गए।
- सुभाषचंद्र बोस की मृत्यु की जांच हेतु शाहनवाज आयोग, खोसले आयोग, मुखर्जी आयोग इत्यादि का गठन किया गया। इन सभी आयोगों ने इस बात की पुष्टि की है कि हवाई दुर्घटना में सुभाषचंद्र बोस की मृत्यु हो गई।
- Netaji Dead and Alive नामक पुस्तक की रचना समरगुहा ने किया।

## लाल किला मुकदमा (1945)

- आजाद हिंद फौज के सैनिकों के ऊपर विश्वास घात का आरोप लगाते हुए दिल्ली के लाल किला में ब्रिटिश सरकार के द्वारा जो मुकदमा चलाया गया है उसे लाल किला मुकदमा कहते हैं। इस मुकदमा को लेकर कांग्रेस ने आजाद हिंद फौज के सैनिकों के बचाव हेतु राहत कमिटी का गठन किया।
- आजाद हिंद फौज के सैनिकों के तरफ से पैरवी भूला भाई देसाई, कैलाश नाथ काटजू, सर तेज बहादुर सपूर, पंडित जवाहरलाल नेहरू जैसे वकिलों ने किया।
- लाल किला मुकदमा के समय भारतीय वायसराय लार्ड वेवेल थे जिन्होंने अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए आजाद हिंद फौज के सैनिकों के सजा को खत्म कर दिया।

## 1944-47 के बीच की घटनाएँ

### C. R. Formula

- गांधीजी के सुझाव पर मद्रास के प्रभावशाली नेता चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने 10 जुलाई 1944 को एक Formula प्रस्तुत किया जिसे C. R. Formula कहा गया। इस Formula में निम्न प्रावधान थे।
  1. मुस्लिम लीग कांग्रेस द्वारा चलाए जा रहे स्वतंत्रता आंदोलन को समर्थन प्रदान करे।
  2. C. R. Formula तब लागू होगा जब अंग्रेज भारत छोड़कर चला जाएगा।
  3. मुस्लिम बाहुल्य इलाका में जनमत संग्रह करवाया जाएगा और जनता से यह पूछा जाएगा कि वह भारत में रहना चाहता है या नहीं।

- C. R. Formula पर महात्मा गांधी और मुहम्मद अली जिन्ना के बीच वार्ता हुआ। इस वार्ता के दौरान गांधीजी ने जिन्ना को 'कायदे आजम' अर्थात् महान नेता की उपाधि दिया। जिन्ना C. R. Formula को अस्वीकार करते हुए कहा कि इस Formula के तहत हमें दिमक लगा और कटा छटा पाकिस्तान मिलेगा।

## वेवेल योजना और शिमला सम्मेलन

- भारतीय वायसराय लॉर्ड वेवेल के द्वारा वर्ष 1945 ई. में भारतीयों के समक्ष योजना प्रस्तुत की गई जिसे वेवेल योजना कहते हैं। इस योजना पर 25 जून 1945 से 14 जुलाई तक शिमला में एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसे शिमला सम्मेलन कहते हैं। इस सम्मेलन में कांग्रेस के तरफ से मौलाना अबुल कलाम आजाद और मुस्लिम लीग के तरफ से मुहम्मद अली जिन्ना ने भाग लिया था। यह सम्मेलन असफल हो गया क्योंकि मुस्लिम लीग इस बात को लेकर अड़ गए कि सम्मेलन में मुस्लिम नेता सिर्फ मुस्लिम लीग के तरफ से भाग लेगा।

**Note:-** शिमला सम्मेलन के समय महात्मा गांधी शिमला में उपस्थित थे लेकिन वे सम्मेलन में भाग नहीं लिए।

## नौसैनिक विद्रोह 1946

- भारतीय मूल के ब्रिटिश नौसैनिक बी. सी. दत्त ने तलवार नामक जहाज पर अंग्रेज भारत छोड़ो जैसे स्लोगन लिखे जिस कारण बी. सी. दत्त को गिरफ्तार कर लिया गया। इनकी गिरफ्तारी के विरुद्ध में ही एम. एस. खान के नेतृत्व में मुंबई से 18 फरवरी 1946 ई. को नौसैनिक विद्रोह की शुरूआत हुई। इस विद्रोह के अंतर्गत 22 फरवरी 1946 ई. को देशव्यापी हड़ताल का अयोजन किया गया। इस विद्रोह के क्रम में कांग्रेस का तिरंगा झंडा, मुस्लिम लीग का हरा झंडा और कम्यूनिस्ट का लाल झंडा एक साथ फहराया जा रहा था। यह विद्रोह सरदार पटेल और मुहम्मद अली जिन्ना की मध्यस्ता की वजह से समाप्त हो पाया। इस विद्रोह में समर्पण करने वक्त विद्रोही नौसैनिकों ने यह कहा कि- “हम भारतीयों के समक्ष आत्मसमर्पण” कर रहे हैं न कि ब्रिटिशों के समक्ष।

## Cabinet Mission योजना

- 20 फरवरी 1947 ई. को ब्रिटेन के प्रधानमंत्री क्लीमेंटली ने House of Commons में यह घोषणा किया कि जून 1948 से पहले भारत की सत्ता भारतीयों के हाथ में सौंप दी जाएगी। इसी पर विचार विर्मार्श करने के लिए Lord Mountbatten को भारत का वायसराय बनाकर मार्च 1947 ई. में भारत भेजा गया।
- Lord Mountbatten से पहले भारतीय वायसराय लॉर्ड वेवेल थे। लॉर्ड वेवेल के कार्यकाल के दौरान ही 24 मार्च 1946 को Cabient Mission योजना का भारत आगमन हुआ। यह तीन सदस्यीय आयोग था। इसके तीन सदस्य निम्न हैं-
  - (i) Stefard Kripps (वाणिज्य विभाग के प्रधान)
  - (ii) A. B. Alexander (नौसेना विभाग के प्रधान)
  - (iii) Panthic Lawrence (भारत सचिव)
- Cabient Mission योजना की अध्यक्षता पैथिक लॉरेंस ने किया।
- Cabient Mission योजना ने अपनी सिफारिशें मई 1946 में प्रस्तुत की। इसकी प्रमुख सिफारिशें निम्न हैं-
  1. भारत के संविधान के निर्माण हेतु संविधान सभा का गठन किया जाएगा।
  2. भारत का विभाजन नहीं होगा।
  3. प्रांतों का समुहिकरण अर्थात् Graph A, B, C में बांटा जाएगा।
- Cabient Mission योजना में भारत के विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण की बात नहीं थी जिस कारण मुस्लिम लीग ने इसे अस्वीकार कर दिया और मुहम्मद अली जिन्ना ने यह घोषणा किया कि 16 अगस्त 1946 को Direct Action Day/प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस के रूप में मनाया जाएगा और फिर पूरे भारत वर्ष में 16 अगस्त 1946 को Direct Action Day के रूप में मनाया गया। इसी क्रम में मुहम्मद अली जिन्ना ने नारा दिया कि लड़कर लेंगे पाकिस्तान और फिर 16 अगस्त 1946 से ही कलकत्ता से भारत में हिंदू मुस्लिम दंगा की शुरूआत हुई। इस दंगा को समाप्त करवाने की स्थिति में लॉर्ड वेवेल नहीं थे जिस कारण वेवेल ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लीमेंटली को लिखे पत्र में यह आग्रह किया कि हमलोगों के लिए बेहतर यही



होगा कि भारत का भाग्य भारतीय जनता पर छोड़कर लंदन लौट गए। इस घटना को इतिहास में Break down Policy कहा जाता है।

- Lord Mountbatten March 1947 ई. में भारत आए। उन्होंने लगभग 2 माह तक भारत में रहने के बाद यह पाया कि भारत में दंगा को रोकने का एकमात्र उपाय भारत का विभाजन है।
- Lord Mountbatten 3 June 1947 को भारतीयों के समक्ष एक योजना रखा जिसे माउण्टबेटन योजना कहा जाता है। इस योजना में यह कहा गया कि-
  1. भारत की सत्ता भारतीयों के हाथ में सौंप दी जाएगी।
  2. भारत का विभाजन होगा और मुस्लिमों के लिए एक अलग राष्ट्र पाकिस्तान बनाया जाएगा।
- माउण्टबेटन योजना पर विचार विमर्श करने के लिए 10 जून 1947 को दिल्ली में मुस्लिम लीग की बैठक मुहम्मद अली जिन्ना की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में माउण्टबेटन योजना को स्वीकृति प्रदान की गई।
- माउण्टबेटन योजना पर विचार विमर्श करने के लिए कांग्रेस की बैठक दिल्ली में 14 जून 1947 को राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में हुआ। इसमें कांग्रेस ने भारत विभाजन के पक्ष में प्रस्ताव पारित किया। इसको लेकर खान अब्दुल गफकार खान ने कहा कि कांग्रेस नेतृत्व ने हमारे आंदोलन को भेड़ियों के आगे धकेल दिया वहाँ सैफुद्दीन किजलू ने कहा कि यह राष्ट्रवाद का संप्रदायवाद के समक्ष समर्पण है।
- सरदार पटेल ने भारत के विभाजन को लेकर यह कहा कि जिन्ना को विभाजन चाहिए या नहीं लेकिन हमें विभाजन जरूर चाहिए।
- भारत विभाजन को लेकर गांधीजी यह कहा करते थे कि भारत का विभाजन हमारी लाश पर होगा।
- माउण्टबेटन योजना को स्वीकृति प्रदान करने को लेकर 4 जुलाई 1947 को ब्रिटेन की संसद में भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 रखा जिसे ब्रिटेन की संसद ने 18 जुलाई 1947 को स्वीकृति प्रदान किया। इसी के तहत भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ और उससे ठीक 1 दिन पहले 14 अगस्त 1947 को भारत का विभाजन और पाकिस्तान का निर्माण हुआ।
- आजादी के साथ महात्मा गांधी कांग्रेस के सदस्य नहीं थे। उस समय गांधीजी नोआखोली में थे जहाँ वह दंगा शांत करवा रहे थे। आजादी के बाद गांधीजी यह चाहते थे कि कांग्रेस को समाप्त कर दिया जाएगा।
- स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल लॉर्ड माउण्टबेटन और प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू बने तो वही पाकिस्तान के प्रथम प्रधानमंत्री लियाकत अली खां और प्रथम गवर्नर जनरल मुहम्मद अली जिन्ना बने।
- लॉर्ड माउण्टबेटन के समय में ही 30 जनवरी 1948 को नाथू राम गोडसे ने गोली मारकर महात्मा गांधी की हत्या कर दी। 30 जनवरी को शहीद दिवस में के रूप में मनाया जाता है। महात्मा गांधी का अंतिम शब्द है राम! था।
- महात्मा गांधी का सबसे प्रिय भजन वैष्णों जन को तेरे कहिए, पीर पराई जाय रे था। इसका शाब्दिक अर्थ यह होता है कि सच्चा वैष्णव वही है जो दूसरों की पीड़ा को अपना पीड़ा समझे। इस गीत की रचना गुजरात के कवि नरसी मेहता ने किया था।
- गांधीजी का दूसरा सबसे प्रिय भजन “एकला चलो रे” था। इसकी रचना रवीन्द्रनाथ टैगोर ने की है। वहीं गांधीजी का तीसरा सबसे प्रिय भजन “रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीता राम” था।



## 12. आधुनिक भारत में शिक्षा का विकास

- मुस्लिमों को शिक्षा प्रदान करने हेतु तथा मुस्लिम विधि को समझने के लिए 1781 में कलकत्ता में प्रथम मदरसा बारेन हेस्टिंग्स के द्वारा स्थापित किया गया था।
- हिन्दू विधि को समझने के लिए जोनाथन डंकन (1791) में बनारस में संस्कृत कॉलेज की स्थापना की।
- लार्ड वेलेजली ने सिविल सेवकों को प्रशिक्षण देने हेतु कलकत्ता में फॉर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।
- 1813 के चार्टर एक्ट में यह घोषणा किया गया कि प्रतिवर्ष भारतीय शिक्षा पर 1 लाख रूपया खर्च किये जाएंगे।
- भारत का प्रथम कॉलेज हिन्दू कॉलेज है जो 1817 में कलकत्ता में डेविड हेयर के सहयोग से राजाराम मोहन राय ने स्थापित किया।
- मैकाले आयोग के अनुशंसा पर 1835 से भारत में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी को बनाया गया इस समय भारत का गर्वनर जनरल लार्ड विलियम बेटिंग था।
- शिक्षा का अधोमुख/निष्ठांदन सिद्धांत लॉर्ड ऑकलैण्ड के द्वारा दिया गया है। अधोमुखी निष्ठांदन का अर्थ यह होता है कि शिक्षा उच्च वर्ग के लोगों को दिया जाय जिससे छन छन कर शिक्षा आमलोगों तक पहुँच जाएगा।
- बुड डिस्पैच को शिक्षा जगत का मेगाकार्टा कहा जाता है। क्योंकि इसमें भारत में शिक्षा के क्षेत्र के हर पहलू को ध्यान में रखते हुए सिफारिशों की गई थी। बुड डिस्पैच की शिफारिश 1854 में लार्ड डलहौजी के शासनकाल में आया था इसी सिफारिश पर लंदन विश्वविद्यालय के तर्ज पर भारत के कलकत्ता मुम्बई और मद्रास में विश्वविद्यालय स्थापित किया गया था।
- लॉर्ड रिपन के शासनकाल में 1882-1883 में डब्ल्यू डब्ल्यू हंटर की अध्यक्षता में एक आयोग गठित हुआ जिसे हंटर आयोग कहा गया हंटर आयोग ने प्राथमिक शिक्षा पर बल दिया है।
- लार्ड कर्जन के शासनकाल में 1902 में टॉमस रैले की अध्यक्षता में भारतीय विश्वविद्यालय आयोग का गठन किया गया।
- लॉर्ड कर्जन के शासनकाल में 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित हुआ। इस अधिनियम पर तंज करते हुए गोपालकृष्ण गोखले ने कहा कि- “यह अधिनियम भारतीय शिक्षा को पीछे ले जाना वाला अधिनियम है।”
- चेम्सफोर्ड के शासनकाल में 1917 सेंडलर आयोग का गठन किया गया इस आयोग ने विश्वविद्यालय शिक्षा पर जोड़ दिया इस आयोग के सिफारिश पर ही 1917 में पटना विश्वविद्यालय का गठन हुआ साथ ही साथ लखनऊ, हैदराबाद, मैसूर, अहमदाबाद इन सभी स्थानों पर विश्वविद्यालय का गठन किया गया।
- वायसराय इरविन के शासनकाल में 1929 में हार्टोंग आयोग का गठन हुआ। जिसने प्राथमिक शिक्षा पर बल दिया।
- 1937 में महात्मा गांधी के द्वारा वर्धा शिक्षा योजना प्रस्तुत किया गया। इस योजना का प्रारूप जाकिर हुसैन ने तैयार किया था।
- 1944 में सार्जन्ट आयोग का गठन हुआ इसने प्राथमिक शिक्षा और माध्यमिक शिक्षा पर जोड़ दिया।

### राधाकृष्णण आयोग

- भारतीय शिक्षा व्यवस्था को लेकर स्वतंत्र भारत में गठित प्रथम आयोग राधाकृष्णण आयोग है। इसका गठन नवम्बर 1948 में हुआ इस आयोग के अपने सिफारिसे अगस्त 1949 में प्रस्तुत की इस आयोग के सिफारिश पर ही 1953 में युनर्वेसिटी ग्रांड कमीशन (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यु.जी.सी.) का गठन किया गया जिसे भारतीय सासंद 1956 में स्वायत संस्था का दर्जा दिया।
- राधाकृष्णण आयोग का संबंध विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था से है।

- मुदालियर आयोग- 1952/53 में लक्ष्मण स्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में यह आयोग गठित हुआ इस आयोग ने भारतीय माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था पर जोड़ दिया।
- कोठारी आयोग:- 1964 में दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में यह आयोग गठित हुआ इस आयोग ने प्राथमिक एवं स्कूली शिक्षा पर जोड़ दिया।
- मुदालियर आयोग और कोठारी आयोग के सिफारिश पर इन्दिरा गांधी के शासनकाल में भारत की प्रथम शिक्षा नीति 1968 में आई है। इस शिक्षा नीति में सिफारिश किया गया कि जी.डी.पी. का 6% शिक्षा पर खर्च किया जाएगा लेकिन आज तक कभी खर्च नहीं किया गया है इस शिक्षा नीति पर ही  $10 + 2 + 3$  का फार्मूला दिया गया।
- राजीव गांधी के शासनकाल में 1986 में द्वितीय शिक्षा नीति आई है इसमें दो बार संशोधन हुई है। पहली बार राममूर्ति आयोग के सिफारिश पर 1990 में संशोधन हुए दूसरी बार जनराजन रेडी के आयोग के सिफारिश पर 1992 में संशोधन हुआ।
- स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति के कस्तुरी राण के समिति के सिफारिश पर 2020 में आई है। जिसमें  $5 + 3 + 3 + 4$  का फार्मूला दिया गया है।

### भारत में प्रेस का विकास ( समाचार पत्र )

- भारत में प्रिटिंग प्रेस ( समाचार पत्र ) की शुरूआत यूरोपीय के आगमन से हुआ।
- भारत में प्रिटिंग प्रेस की शुरूआत पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा किया गया है।
- भारत की पहली पुस्तक गोवा के पादरियों के द्वारा ( पुर्तगाली ) 1557 में छापा गया।
- भारत के प्रथम समाचार द. बंगाल गजट है जो 1780 में अंग्रेजी भाषा में जेम्स A हिक्की के द्वारा किया गया था। इसलिए जेम्स A हिक्की को भारतीय पत्रकारिता का अग्रदृत या जनक माना जाता है।
- भारत के राष्ट्रीय प्रेस का संस्थापक राजाराम मोहन राय को माना जाता है।
- राजाराम मोहन राय ने बांग्ला भाषा में संवाद कुमोदी नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया तो वही फारसी भाषा में मिरात-उल-अखबार का प्रकाशन किया।
- भारतीय समाचार पत्र पर प्रतिबंध सर्वप्रथम 1799 में लॉर्ड वेलेजली के द्वारा लगाया गया था।
- The licensing Regulation Act 1823 में जॉर्ज एडम्स के द्वारा पारित किया गया इस एक्ट में यह प्रावधान किया गया कि अब समाचार पत्र निकालने के लिए ब्रिटिश सरकार से लाइसेंस लेना आवश्यक है। इस एक्ट के तहत राजा राजाराम मोहन राय का समाचार पत्र मिरात उल अखबार प्रतिबंधित हो गया। यह अधिनियम 1835 तक विद्मान रहा 1835/36 में चार्ल्स मेंटकॉफ ने इस अधिनियम को समाप्त कर दिया जिस कारण मेंटकॉफ को भारतीय प्रेस का मुक्ति दाता कहा जाता है।
- भारतीय भाषा में छपने वाला समाचार पत्र को प्रतिबंधित करने के लिए 1878 में लॉर्ड लिटन के द्वारा वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट लाया गया।
- वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट को भारतीय समाचार पत्र के मूँह को बंद वाला अधिनियम कहा जाता है।
- इस अधिनियम का आलोचना करे हुए एस. एन. बनर्जी ने कहा कि यह आकाश से गिरने वाला बज्रपात के समान है।
- अंग्रेजी भाषा में छपने वाले समाचारपत्र द पायनियर ने वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट का समर्थन किया इस समाचारपत्र के संपादक जॉर्ज एलन थे।

- अमृतबाजार पत्रिका मूलतः बांग्लाभाषा में छपता था लेकिन वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट पारित होने के कारण यह पत्रिका रातों रात अंग्रेजी भाषा छपना प्रारंभ कर दिया इस समाचारपत्र के संपादक मोतीलाल घोष और शिशिर घोष थे।
  - वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट पारित होने के कारण बांग्ला भाषा में छपने वाला समाचारपत्र सोमप्रकाश प्रतिबंधित हो गया इस समाचार पत्र का संपादक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर थे।
  - **उदण्ड मार्टण्डः**- यह हिन्दी भाषा में छपने वाला प्रथम साप्ताहक समाचारपत्र है। इसके प्राधन संपादक जुगलकिशोर है।
  - **दर्पणः**- यह मराठी भाषा का प्रथम समाचारपत्र है जिसके प्रधान संपादक बाल शास्त्री थे।
  - अलहिलाल और अलबिलाग उर्दू भाषा में छपने वाला समाचारपत्र है इसके संपादक मौलाना अबुल कलाम आजाद है।
  - **कॉमरेडः**- अंग्रेजी भाषा में छपने वाला समाचार पत्र है इसके प्रधान संपादक मोहम्मद अली थे।
  - **हमदर्दः**- उर्दू भाषा में छपने वाला समाचार पत्र है इसके प्रधान संपादक मोहम्मद अली है।
  - **गदर :** का प्रथम अंक अमेरिका के सेनफ्रांसिस्को से उर्दू भाषा में छापा था इसके प्रधान संपादक लाल हरदयाल थे।
  - **यंग इंडिया:-** यह समाचारपत्र महात्मा गांधी के द्वारा अंग्रेजी भाषा में निकाला जाता था।
  - नवजीवन महात्मा गांधी के द्वारा हिन्दी और गुजराती भाषा में प्रकाशित किया जाता था।
  - हरिजन नामक समाचार पत्र महात्मा गांधी अंग्रेजी हिन्दी और गुजराती तीनों भाषाओं में प्रकाशित थे।

समाचार-पत्र	संपादक
हिन्दुस्तान स्टैडर्ड	सच्चिदानन्द सिन्हा
द ट्रिब्यून	दयाल सिंह मजिठिया
हिन्दुस्तान टाइम्स	के. एम. पणिकर
नेशनल हेराल्ड	जवाहर लाल नेहरू
इंडिपिंटें	मोतीलाल नेहरू
नेटिव ओपिनियन	भी. एन. मांडलीक
प्रताप	गणेश शंकर विद्यार्थी
केशरी और मराठी	बालगंगा धर तिलक
हिन्दु पैट्रियाट	हरिशचन्द्र मुखर्जी

- भारतीय प्रेस पर लगे कठोर प्रतिबंध पर समीक्षा हेतु सर तेज बहादुर स्थू की अध्यक्षता में 1921 में प्रेस इनक्वारी कमिटी का गठन किया गया। इस कमिटी के सिफारिश पर भारतीय समाचारपत्र अधिनियम 1908 तथा भारतीय समाचारपत्र 1910 समाप्त कर दिया गया।
  - स्वतंत्रता के पश्चात् समाचार पत्र जाँच कमिटी का 1947 में स्थापित किया गया था।
  - भारतीय प्रेस परिषद् का गठन 1966 में हुआ है।
  - वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम 1882 में लॉर्ड रिपन के द्वारा रद्द किया गया।

◆ \* ◆ \*

सभी प्रतियोगिता परीक्षाओं में सर्वाधिक RESULT देनेवाला पटना का एकमात्र संस्थान



# ज्ञान बिन्दु जी. एस. एफेडमी



For :

संघ लोक  
सेवा आयोग

राज्य लोक  
सेवा आयोग  
कर्मचारी  
पद्धति आयोग

रेलवे  
मर्टी बोर्ड

जी.एस.  
आयरिंग समी  
परोदा हेतु

ज्ञान बिन्दु का मतलब सरकारी नौकरी

विहार दारोगा में सर्वाधिक रिजल्ट

देने वाला संस्थान से  
एक बार फिर से

300+

छात्र-छात्राओं का अंतिम रूप से चयन हुआ।



300+

अंतिम रूप से चयनित छात्र

BPSC TEACHER QUALIFIED



BIHAR DAROGA (2446) अंतिम रूप से चयनित छात्र



**BIHAR DAROGA**

Starts 2nd Batch

19th July

Online + Offline

Director :  
Raushan Anand

Gyan Bindu G.S. Academy  
Gyan Bindu G.S. Academy, Patna



# ज्ञान बिन्दु जी. एस. एफेडमी

For :

संघ लोक  
सेवा आयोग

राज्य लोक  
सेवा आयोग

कर्मचारी  
पद्धति आयोग

रेलवे  
मर्टी बोर्ड

जी.एस.

आयरिंग समी

परोदा हेतु

छात्र-छात्राओं का

300+

रेलवे मर्टी बोर्ड



समारोह  
21st JULY



Branch 1 : Kisan Cold Storage, Near Sai Mandir, Musallapur Hat, Patna - 800006  
Branch 2 : R.B. Plaza, Ramgarh Nahar Road, Near Sai Chowk, Musallapur, Patna - 800006  
Ph.: 05440063639, 9304006502  
9341492082 (Online Support)



This document was created with the Win2PDF "Print to PDF" printer available at

<https://www.win2pdf.com>

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.

Visit <https://www.win2pdf.com/trial/> for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

<https://www.win2pdf.com/purchase/>